आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 दिसम्बर, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 दिसम्बर, 2016 ★ मार्गशीर्ष, 2073

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

# जिनवाणी

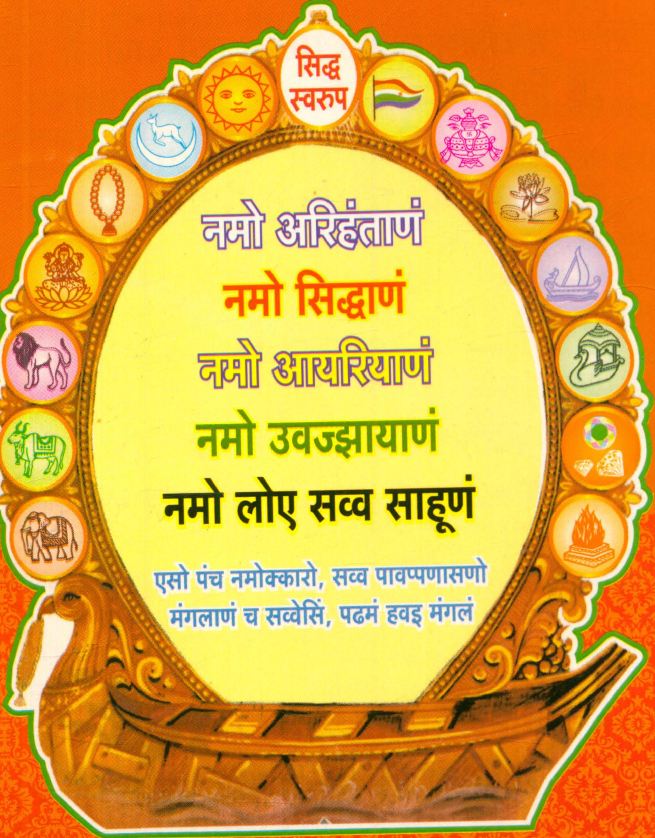


मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

\- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

\- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

\- उपाध्याय मान

**With Best Compliments :**
**Rajeev Nita Daga Foundation Houston**

# जिनवाणी हिन्दी-मासिक

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

कोलाहलगभूयं,
आसी मिहिलाए पव्वयंतंमि।
तइया रायरिसिमि,
नमिमि अभिणिक्खमंतंमि।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 9.5

मिथिला में कोलाहल छाया,
जब नमि प्रव्रज्या हेतु चला।
राजर्षि छोड़ तब राजविभव,
संयमपथ पकड़ा बहुत भला।।

**दिसम्बर, 2016**
**वीर निर्वाण संवत्, 2543**
**मार्गशीर्ष, 2073**

**वर्ष 74 अंक 12**

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798



卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर



卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

**सदस्यता शुल्क**

| | |
|---|---|
| त्रिवार्षिक : 250 रु. | स्तम्भ सदस्यता : 21000/- |
| 20 वर्षीय, देश में : 1000 रु. | संरक्षक सदस्यता : 11000/- |
| 20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु. | साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/- |

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

**शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ** 51026632986
**IFSC No. SBBJ** 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929


नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

# विषयानुक्रम


| | | | |
|---|---|---|---|
| सम्पादकीय- | संथारालीन महासती श्री मैनासुन्दरीजी | -डॉ. धर्मचन्द जैन | 5 |
| अमृत-चिन्तन- | आगम-वाणी | -सम्पादक | 9 |
| विचार-वारिधि- | निर्मलता | -आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. | 11 |
| प्रवचन- | ज्ञानपूर्वक करें साधना | -आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. | 12 |
| | क्या आपको जेल पसन्द है? | -तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. | 19 |
| | नमो लोए सव्वसाहूणं : अमृतशिक्षा (5) | -महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. | 22 |
| शोधालेख - | उवंगचूलिया का परिचय और समीक्षा | -प्रो. सागरमल जैन | 24 |
| | निःशस्त्रीकरण : बनाम पर्यावरण संरक्षण | -डॉ. तारा डागा | 37 |
| आरोग्य - | जीवनशैली और आरोग्य | -श्री पी. शिखरमल सुराणा | 36 |
| नववर्ष-विशेष - | नववर्ष, पार्श्वनाथ जयन्ती और अहिंसा-दिवस | -डॉ. दिलीप धींग | 44 |
| तत्त्व-चर्चा- | जिज्ञासा-समाधान | -संकलित | 46 |
| | आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (100) | -श्री धर्मचन्द जैन | 64 |
| अंग्रेजी-स्तम्भ- | **Study of Uttaradhyayana Sutra** | *-Dr. Priyadarshana Jain* | 50 |
| धारावाहिक- | लग्न की वेला (24) | -आचार्य श्री उमेशमुनिजी 'अणु' | 59 |
| नारी-स्तम्भ- | मातृत्व-प्रेम | -श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा | 68 |
| युवा-स्तम्भ - | पहचानें आत्म-शक्ति को | -श्री पारसमल चण्डालिया | 72 |
| स्वास्थ्य-विज्ञान - | प्रभावशाली स्वावलम्बी लीवर शुद्धीकरण चिकित्सा | -डॉ. चंचलमल चोरडिया | 74 |
| बाल-स्तम्भ - | पाँच माशा स्वर्ण | -मुनि सुमेरमलजी | 82 |
| कविता/गीत- | हीरा गुरु अष्टक | -महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. | 49 |
| | संथारे के नारे | -श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ' | 63 |
| | मृत्यु अपनी बने महोत्सव | -श्री मोहन कोठारी 'विनर' | 71 |
| विचार- | विचार-कणिका | -संकलित | 10 |
| | पहले जन्म-सुधार, फिर मरण-सुधार | -महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. | 18 |
| | बेकार की बात | -श्री आनन्दराज जी. जैन | 21 |
| | प्रणाम एवं उसका परिणाम | -श्रीमती आशा धीरेन्द्र बांठिया | 58 |
| | साधक वर्ग की दशा | -महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. | 73 |
| | समयज्ञ बनिए, अप्रमत्त रहिए | -महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. | 118 |
| साहित्य-समीक्षा- | नूतन साहित्य | -डॉ. श्वेता जैन | 86 |
| समाचार विविधा- | समाचार-संकलन | -संकलित | 91 |
| | साभार-प्राप्ति-स्वीकार | -संकलित | 119 |

सम्पादकीय

# संथारालीन महासती श्री मैनासुन्दरीजी

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जोधपुर के सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा में इन दिनों दर्शनार्थियों का सैलाब उमड़ रहा है। प्रातःकाल से सायंकाल तक संथारालीन साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी महाराज के दर्शनों हेतु जोधपुर एवं अन्य ग्राम-नगरों से श्रद्धालुओं का निरन्तर आवागमन बना हुआ है। 70 वर्ष की दीक्षा पर्याय एवं 82 वर्ष की वय में संघ की सर्वतो वरिष्ठ महासतीवर्या ने 21 नवम्बर 2016 को सायं 4 बजे पूर्ण सजगता के साथ रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञा से श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी महाराज से तिविहार संथारा ग्रहण किया है। संथारा ग्रहण करते समय जो सज़गता थी, वह 11 दिन पश्चात् भी निरन्तर बनी हुई है।

साध्वीप्रमुखा के संथारा ग्रहण करने की सूचना प्राप्त होने के साथ ही मारवाड़ एवं जोधपुर के निकट विचरण कर रहे संत-सतियों का विहार पावटा की ओर हो गया। शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य उपाध्यायप्रवर संतमण्डली के सहयोग से गुलाबनगर से विहार कर साध्वी प्रमुखा को संथारा में साज देने के लक्ष्य से 23 नवम्बर को पावटा पधार आए। मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. 22 नवम्बर को ही प्रातःकाल पावटा पहुँच गए थे। विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा पहले ही सेवा में पधार चुके थे। सेवाभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा. आदि ठाणा, तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा, व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा, व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा, व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा का भी संथारा में सहयोग प्रदान करने के लक्ष्य से साध्वीप्रमुखा की सेवा में पदार्पण हो गया है। महासतीवृन्द सामायिक-स्वाध्याय भवन में तथा उपाध्यायप्रवर एवं सन्तमण्डल निकटस्थ सिद्धान्तशाला भवन में विराजे हुए हैं।

प्रातःकाल प्रवचन के समय मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.एवं महासतीवृन्द के द्वारा वैराग्यपोषक, समाधिवर्धक उद्बोधन एवं भजनों की सरिता बहायी जा रही है।

श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने पंचमहाव्रतों में लगे दोषों की आलोचना कराने के साथ महाव्रतों की पच्चीस भावनाओं से साध्वीप्रमुखा के महाव्रतों को पुष्ट किया। आत्मा एवं शरीर भिन्न है, अतः शरीर के प्रति किसी प्रकार की आसक्ति न रखते हुए आत्मभावों में रमण करने

की प्रेरणा की जा रही है। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने प्रेरणा करते हुए फरमाया- "जल की एक बूँद कभी बाढ नहीं ला सकती, पर एक चिनगारी दावानल बन सकती है। एक गुण से कोई आराधक भले न बन पाए, किन्तु एक दोष, एक कमी, एक शल्य साधक विराधक बना सकता है। इसलिए किसी भी प्रकार का दोष या शल्य नहीं रखना चाहिए।" महासतीवर्या को निःशल्यतापूर्वक व्रतों के पालन की एवं आत्मशोधन की महती प्रेरणा की गई। सम्प्रदाय एवं संत-सतियों के सम्पर्क में वर्षों रहने के कारण राग रह सकता है, अतः उसे भी इस समय छोड़कर आत्मलीन बनने की आवश्यकता है।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने पहले उत्तराध्ययनसूत्र के द्वारा, फिर अन्तगडसूत्र के सारगर्भित वचनों से साध्वीप्रमुखा के वैराग्यभाव को पुष्ट किया। आगम के पाठों का उच्चारण करते समय सन्तों के द्वारा साध्वीप्रमुखाजी से बीच-बीच में पूछा गया- महासतीवर्या यह पाठ या गाथा किस आगम में कहाँ आई है? साध्वीप्रमुखाजी सजगतापूर्वक उत्तर दे रही हैं कि यह पाठ या गाथा अमुक आगम एवं अमुक अध्याय की है। सेवाभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा. ने दृष्टान्तों के माध्यम से आत्महितकारी उद्बोधन दिया। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने महासती रूपा एवं उनके सुपुत्र अध्यात्मयोगी आचार्य हस्ती की विरासत का ध्यान दिलाते हुए संयम में सजग रहने एवं आत्मसाधना में तन्मय रहने की प्रेरणा की। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा. ने पुद्गल एवं आत्मा में स्वभावभेद बतलाते हुए आत्मगुणों में ध्यान केन्द्रित करने, निरन्तर सजग रहने के प्रेरक वचन कहे। श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने जीवन की नश्वरता को पुष्ट करने वाले दृष्टान्त एवं भजन प्रस्तुत किए। श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ने अस्तित्व बावनी के माध्यम से जीवन की सत्यता प्रस्तुत की। श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने 27 बार नमोत्थुणं का पाठ किया। महासतीवृन्द भी निरन्तर आध्यात्मिक, वैराग्यपरक एवं समाधि को पुष्ट करने वाले भजनों तथा आगम के वचनों को प्रस्तुत कर रही हैं। "मैं हूँ उस नगरी का भूप जहाँ नहीं होती छाया धूप" "अब हम अमर भये न मरेंगे", "मेरे अन्तर भया प्रकाश, नहीं अब मुझे किसी की आस" आदि भजनों से सम्पूर्ण वातावरण वैराग्यमय बन गया।

साध्वीप्रमुखा साधना के प्रति पूर्णतया सजग हैं। उन्होंने पूज्य आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर, संतवृन्द एवं महासतीवृन्द के साथ श्रावक समुदाय व सब जीवों से हार्दिक क्षमायाचना की है। सभी आगन्तुकों का साध्वीप्रमुखा के प्रति अहोभाव से मस्तक झुक जाता है। निकट एवं दूरवर्ती ग्रामनगरों से संथारालीन महासती के दर्शन-वन्दन एवं त्याग-प्रत्याख्यान हेतु श्रद्धालुओं का निरन्तर आगमन हो रहा है। 02 दिसम्बर से साध्वीप्रमुखा की एकान्त एवं तन्मयता पूर्वक साधना के लक्ष्य से प्रवचन का कार्यक्रम ऊपर के हॉल में प्रारम्भ किया गया है। साथ ही भक्तों की भीड़ जहाँ साध्वीप्रमुखा साधनालीन हैं, वहाँ अधिक न एकत्रित हों इस

आशय से यह व्यवस्था रखी गई है कि श्रद्धालु दर्शनार्थी महासतीजी को दर्शन-वन्दन करने के पश्चात् वहाँ न बैठे तथा आगे बढ़ता चले। इस समय जोधपुर में 47 संत-सतियों का सान्निध्य प्राप्त है। ज्ञानगच्छ एवं समर्थगच्छ की सतियों के द्वारा साध्वीप्रमुखाजी के दर्शनों का लाभ लिया गया है तथा उन्होंने भी वैराग्यपरक भजन प्रस्तुत कर संथारे को साज दी है। श्रमणसंघीय उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी म.सा. एवं प्रवर्तक डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. ने भी स्वाध्याय भवन पधार कर साध्वीप्रमुखा जी की सुख-साता पूछी है। जोधपुर में जैन परम्परा के अनेक सम्प्रदायों के श्रद्धालुओं के द्वारा महासतीवर्या के दर्शन-वन्दन का लाभ लिया जा रहा है।

साध्वीप्रमुखाजी का जन्म आषाढ़ शुक्ला द्वितीया विक्रम संवत् 1991 (सन् 1934 ई.) को चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) शहर में श्राविकारत्न श्रीमती जतनीदेवीजी की रत्न कुक्षि से हुआ। आपके पिता श्री रिडमलचन्दजी भण्डारी धर्मनिष्ठ, साहसी एवं सेवापरायण श्रावक थे। महासतीजी का बचपन 'मैना' के रूप में चेन्नई में ही बीता। आपके पिताश्री प्रतिवर्ष परिवार के साथ अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के दर्शनार्थ राजस्थान पधारते थे। गुरुदेव की पातक प्रक्षालिनी वाणी के श्रवण एवं अग्रजा बहन सायरकंवर के अल्पवय में ही विधवा होने की घटना ने आपके चित्त में वैराग्य का रंग गहरा चढ़ा दिया। आपके परिवारजनों ने दीक्षा की कठिनाइयों से अवगत कराते हुए एवं परिवार में अपना प्यार जताते हुए भांति-भांति से यह प्रयत्न किया कि मैनाबाई दीक्षा ग्रहण न करे, किन्तु मैनाबाई का मनोबल एवं वैराग्य पक्का था। बारणी के ठाकुर साहब ने मैनाजी को शादी के लिए राजी करने का प्रयत्न किया तब उन्होंने तर्कपूर्वक कहा- "आप मुझे लिख दीजिए कि जिसके साथ मेरी शादी होगी, वह लड़का सदा जिन्दा रहेगा, क्योंकि मेरी दो बहनों ने शादी की और वे दोनों विधवा हो गई।" ठाकुर साहब ने यह सुनकर भण्डारी साहब को कह दिया कि यह लड़की मानने वाली नहीं है, दीक्षा लेकर रहेगी। साढ़े बारह वर्ष की वय में बालब्रह्मचारिणी मैनाजी ने माघ शुक्ला त्रयोदशी विक्रम संवत् 2003 को रत्नसंघ के सप्तम पट्टधर संत-सुमेरु आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के मुखारविन्द से बारणी ग्राम जिला-जोधपुर में अपनी अग्रजा सायरकंवर के साथ जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। उन्हें साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री मदनकुंवरजी (बदनकुंवर जी) म.सा. की सुशिष्या घोषित किया।

महासतीजी में अदम्य उत्साह एवं संयम जीवन के प्रति परम निष्ठा रही। उन्होंने स्वाध्याय एवं लेखन को प्राथमिकता दी। भोपालगढ़ जैन रत्न विद्यालय के अध्यापक श्री पारसमलजी प्रसून ने उन्हें लेखनकला एवं वक्तृत्व कला में दक्ष किया। पूज्य आचार्यप्रवर हस्ती की साध्वी मैनासुन्दरी पर महती कृपा थी। उन्होंने एक बार साध्वीजी को कहा- "तेरे मन में कोई विचार उठते हों, तो उन्हें नोट कर लिया कर।" साध्वीजी ने अपने गुरुदेव के वचनों का पालन करते हुए कागज की छोटी-छोटी कतरनों पर अपने विचारों को उकेरना शुरु किया और इस प्रकार

वह एक अच्छी लेखिका बन गई। महासती मैनाजी की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं, यथा- 1. दुर्लभ अंग चतुष्टय, 2. पर्व संदेश, 3. पर्युषण पर्वाराधन, 4. हमारे वन्दनीय, 5. देश की बगिया के फूल, 6. पथ की रुकावटें, 7. सुजान-ज्योति, 8. जीवन-अमृत की छाँव, 9. शिवपुरी की सीढ़ियाँ आदि।

संयम के प्रति आपकी सजगता एवं अपनी गुरुवर्या के प्रति भक्ति ने आपका संयम जीवन उत्कृष्टतर बनाया। संयम के प्रति प्रामाणिक रहने के कारण आप निर्भीक भी रहीं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आप में अदम्य साहस देखा गया। भययुक्त स्थानों पर विराजकर भी आपने लोगों की धारणा को खण्डित कर शासन की निरन्तर प्रभावना की। घुटनों में दर्द होते हुए भी दक्षिण भारत के क्षेत्र का स्पर्शन किया तथा वहाँ पर भी आपके अनेक चातुर्मास हुए। राजस्थान के अतिरिक्त मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मैसूर, बैंगलोर, चेन्नई, दिल्ली, कानपुर, मुम्बई, आगरा आदि क्षेत्रों को भी आपने फरसकर निर्व्यसनता, सामायिक, स्वाध्याय, शीलव्रत एवं अनेकविध त्याग-प्रत्याख्यानों से लोगों के जीवन को ऊँचा उठाया। आपके प्रवचनों में ओजस्विता एवं प्रभावता देखी जाती है। आप संयमनिष्ठा के साथ तेजस्वी आनन एवं ओजस्वी वाणी की धनी हैं। आपकी प्रभावशालिता को दृष्टिपथ में रखकर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. ने आपको 01 जनवरी 1990 में शासनप्रभाविका के विरुद से शोभित किया। आपकी तेजस्विता संतों की भांति आकर्षक रही। आपमें निर्णय क्षमता का विशेष सामर्थ्य रहा। एक बार ईसरदा से चौथ का बरवाड़ा विहार कर रहे थे तभी अचानक साथ चल रहे श्रावकरत्न श्री गुलाबचन्दजी नवलखा का पैर फिसल गया एवं वे बनास नदी के ऊपर स्थित पटरी पर नीचे लटकने लगे, तभी आपने अपवाद मार्ग अपनाते हुए मति-सम्पदा का परिचय दिया एवं नवलखाजी को हाथ पकड़कर ऊपर खींच लिया।

स्वास्थ्य के प्रतिकूल रहने पर भी साध्वीप्रमुखा स्वाध्याय के प्रति सदैव जागरूक रहीं। जब कभी कोई दर्शनार्थी दर्शन-वन्दन हेतु पहुँचता तो आप स्वाध्याय करती हुईं मिलती। उन्हें स्वाध्याय में एवं ज्ञानवर्धन में सदैव रुचि रही। आपकी प्रभावक प्रवचन शैली एवं कुशाग्र तर्क शक्ति के कारण आपसे अनेक श्रावक-श्राविका प्रभावित हैं। आपसे प्रभावित होकर संघ में अनेक मुमुक्षु श्राविकाएँ दीक्षित होकर महासती बनी हैं, यथा- व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो साध्वी समुदाय की वे वास्तविक रूप से प्रमुखा हैं।

सजगतापूर्वक संथारा स्वीकार कर एवं आत्मशुद्धि के साथ जागरूकता रखते हुए आपने अपने को पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती की सच्ची शिष्या प्रमाणित किया है तथा शासन की दीप्ति को बढ़ाया है। आपसे संघ एवं समाज गौरवान्वित है तथा आपको सश्रद्धा शतशः नमन करता है। ❖

अमृत-चिन्तन

# आगम-वाणी

तुलिया विसेसमादाय, दयाधम्मस्स खंतिए।
विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा।।30।।
तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिसमंतिए।
विणएज्ज लोमहरिसं, भेयं देहस्स कंखए।।31।।

-उत्तराध्ययन सूत्र भाग-1, पंचम अध्ययन, गाथा 30-31

**अर्थ**- मेधावी साधक बालमरण एवं पण्डितमरण की तुलना कर पण्डित मरण को स्वीकार करे। दया, धर्म एवं क्षमा से आत्मा के पवित्र होने पर अत्यन्त प्रसन्न रहे। उसके पश्चात् मरणकाल समीप में आने पर जिस श्रद्धा से पण्डितमरण स्वीकार किया है, वैसी श्रद्धा अन्त समय तक रखे। रोमाञ्च (लोमहर्ष) को दूर करे तथा देह के समाप्त होने की प्रतीक्षा करे।

**विवेचन**- जैन परम्परा में दो प्रकार के मरण प्रतिपादित हैं- 1. बालमरण एवं 2. पण्डित-मरण। बालमरण को अकाम मरण तथा पण्डित मरण को सकाम मरण भी कहा गया है। शरीर एवं कषायों की संलेखना (कृशता) करते हुए जो मरण प्राप्त किया जाता है उसे सकाम मरण या पण्डित मरण कहा गया है। इसमें साधक शारीरिक व्याधि आदि की प्रतिकूलता होते हुए भी सजगतापूर्वक समता भाव में रहता है। अकाम-मरण अथवा बाल-मरण अज्ञानपूर्वक प्राप्त मरण है। आत्महत्या भी इसी बाल-मरण के अन्तर्गत आती है। किसी रोग, दुर्घटना, अस्त्र-शस्त्र आदि के कारण से आकस्मिक मरण अथवा असजगतापूर्वक मरण बाल-मरण की कोटि में आता है। करोड़ों-अरबों ही नहीं, अपितु अनन्त प्राणी इसी बालमरण को प्राप्त होते हैं। लाखों-करोड़ों में कोई एक जीव पण्डितमरण का वरण करता है। यह मरण जीवन को सार्थक एवं मृत्यु को महोत्सव बना देता है। ऐसे कम ही साधक होते हैं जिन्हें पण्डितमरण के वरण का अवसर प्राप्त होता है तथा जिनकी प्रज्ञा इस मरण को स्वीकार करती है।

शीलवान एवं बहुश्रुत साधक मृत्यु के अन्तिम क्षणों में भी वैराग्य, समता एवं प्रज्ञा को सजग रखते हुए समस्त ऐहिक एवं पारलौकिक इच्छाओं का त्याग करते हुए, देह को छूटते हुए अनुभव करते हैं। वे परीषह एवं उपसर्गों से भयभीत तथा संत्रस्त नहीं होते।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है कि बालमरण एवं पण्डितमरण में तुलना की जाय तो पण्डितमरण श्रेष्ठ है। जब एक दिन मरण को प्राप्त होना है तो बाल-मरण की अपेक्षा

पण्डित-मरण का ही चयन क्यों न किया जाए। पण्डित-मरण के साथ समस्त प्राणियों के प्रति दया भाव एवं मैत्रीभाव का प्रादुर्भाव होता है तथा सबके प्रति क्षमाभाव जागृत होता है, जिससे अपने चित्त में रहा क्लेश सर्वथा प्रक्षालित हो जाता है एवं साधक अपने कारण से हुई क्लेशकारी प्रवृत्तियों के लिए दूसरों से भी क्षमा याचना करता है, वह आत्म-विशुद्धि को अपना लक्ष्य बनाकर सर्वविध पापों का प्रतिक्रमण करता है। कृत पापों की आलोचना एवं गर्हा करता है तथा सभी प्राणियों के प्रति करुणा एवं मैत्री से आप्लावित हो जाता है। यह राग-द्वेष एवं कषायों पर विजय प्राप्त करने की अन्तिम साधना है, अतः साधक को न किसी प्रकार के ऐहिक सुख एवं सम्मान-प्रशंसा की कामना रहती है, न अधिक जीने व मरने की अभिलाषा रहती है, न ही वह परलोक के सुख की कांक्षा करता है। वह अपने चित्त को एकाग्र रखकर कषायों को जीतने अथवा उनका क्षय करने में संलग्न रहता है। इस तरह काल निकट आने पर भी श्रद्धालु साधक अपनी साधना में सजग बना रहता है। वह देह से अपनी भिन्नता का अनुभव करने की साधना से गुजरता है एवं दर्शनार्थियों के आने, जय-जयकार करने, प्रशंसात्मक वचन बोलने तथा गुणगान करने पर भी रोमांच का अनुभव नहीं करता। वह शरीर की अनित्यता एवं उसकी आत्मा से पृथक्ता की ओर अपनी दृष्टि केन्द्रित रखता है। उसके चित्त में सिद्धों के वे अनन्त गुण लक्ष्य बने रहते हैं, जिनका कभी क्षय नहीं होता तथा जिनसे आत्मा के शुद्ध स्वरूप का दृढ़ विश्वास बना रहता है। जैन धर्म में मृत्यु को महोत्सव का स्वरूप प्रदान करने वाली यह विशिष्ट साधना है, जिसे पण्डितमरण या समाधिमरण नाम दिया गया है। सम्यक्त्वधारी व्रती श्रावक एवं महाव्रती साधु-साध्वी इसके विशेष अधिकारी होते हैं। बेहोशी या बेभान अवस्था में संथारा कराने का कोई लाभ नहीं होता, मात्र परिवारजन संतुष्ट हो जाते हैं कि उन्होंने संथारा का पाठ सुना दिया है।-**सम्पादक**

## विचार-कणिका

1. जवाबदारी लेने वाले कभी हारते नहीं, या तो जीततें हैं या फिर सीखते हैं।
2. सुख-दुःख तो अतिथिं हैं, बारी-बारी आयेंगे, चले जायेंगे।
   यदि वो नहीं आयेंगे तो हम अनुभव कहाँ से लायेंगे।।
3. व्यक्ति में सुन्दरता की कमी हो, तो अच्छे स्वभाव से पूरी की जा सकती है,पर अच्छे स्वभाव की कमीं सुन्दरता से कभी पूरी नहीं की जा सकती।
4. कभी कोई गलती हो जाये तो घबराने की जरूरत नहीं, बस शांत मन से अकेले में बैठ कर विचार करें कि गलती का सुधार कैसे हो? -*'व्हाट्सएप' से प्राप्त*

विचार-वारिधि

# निर्मलता

*आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.*

- आवेश में कृत कार्य स्व-पर हितकारक नहीं होता।
- पागल की बातों का जैसे हम बुरा नहीं मानते, वैसे ही क्रोधादि से पराधीन व्यक्ति की बातों का भी बुरा नहीं मानना चाहिए, क्योंकि वह परवश होने से दया का पात्र है।
- शारीरिक और वाचिक संयम कर लेने से मन आसानी से ध्यान में लग सकता है।
- भगवान के भजन में मन को लगाने के लिए शारीरिक और वाचिक संयम चाहिए। पवित्र साधना एवं पुरुषार्थ के बिना यह संभव नहीं है।
- भला इससे बढ़कर आश्चर्य की बात और क्या होगी कि हम भौतिक वस्तुओं को अपना समझ कर उनके लिए तो चिन्ता करते हैं, पर आत्म-धन की चिन्ता नहीं करते।
- जैसे निर्मल जल से वस्त्र की शुद्धि होती है, उसी प्रकार सत्संग से जीवन पवित्र होता है।
- निर्मलता, शीतलता और तृषा-निवारण जल का काम है। सत्पुरुषों का सत्संग भी ऐसा ही त्रितापहारी है। वह ज्ञान के द्वारा मन के मल को दूर करता है, संतोष से तृष्णा की प्यास मिटाता है और समता व शान्ति से क्रोध का ताप दूर करता है।
- आत्मोन्नति के लिए सत्संग की खुराक आवश्यक है।
- श्रुताराधन, वायु-सेवन की तरह है।
- हर एक संघ को दीपक बनकर ज्ञान की ज्योति जगाने का काम करना चाहिए।
- यदि दीपक में तेल और बाती है, किन्तु लौ बुझ गई है तो जलता हुआ दूसरा दीपक उसे जला सकता है।
- इतिहास साक्षी है कि श्रुतबल, स्वाध्याय तथा ज्ञान ने लाखों मनुष्यों के जीवन को सुधार दिया है।
- वस्तुतः जो शिक्षा को जीवन में उतार ले, वही दूसरों को शिक्षा देने का पूर्ण अधिकारी होता है।
- धार्मिक-जन का जीवन सफेद चादर के समान है। उजली चादर पर छोटी-सी स्याही की बूंद भी खटकती है।
- साधु-संत और भक्त-गृहस्थ सफेद चादर की तरह हैं, उनमें छोटा-मोटा दोष भी खटकता है।

*-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार*

प्रवचन

# ज्ञानपूर्वक करें साधना

*आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.*

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा सुशीला भवन, निमाज, जिला-पाली में 30 अगस्त, 2016 को पर्युषण पर्व के प्रथम दिवस फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता-जोधपुर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

तीर्थंकर भगवान् महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में अनेकानेक विषयों पर कथन करने के बाद भी सार रूप में एक बात रखी गई है कि हमारी यह आत्मा परमात्मा कैसे बने? संसार की जितनी भी कलाएँ हैं, ज्ञान हैं वे सब जीवन चलाने के ज्ञान हैं। जीवन-निर्माण का ज्ञान अतिशय-अनन्त ज्ञानी महापुरुष कह सकते हैं। जीवन-निर्माण के इस अनमोल आराधना के क्षण आपको प्राप्त हो रहे हैं। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की बात करने के पहले पर्व क्या है, इसे समझने की जरूरत है। पर्व क्या? यह प्रश्न आपके समक्ष है।

पर्व का अर्थ है- "पूरयति इति पर्व।" अर्थात् जो सब गुणों से पूर्ण करे वह है पर्व। 'पर्व' शब्द के कई अर्थ हैं। आपकी हमारी अंगुलियों में पर्व (पौर) हैं। एक-एक अंगुली में पर्व हैं। अंगुली में जितने पर्व हैं, उतनी शक्ति है। बांस में पर्व होते हैं। बांस में जितनी गांठे हैं, वह उतना ही मजबूत है। पर्व से आप सब परिचित हैं। पर्व सबको पसन्द भी हैं, पर पर्व करता क्या है? मैं कह गया पर्व है तो ताकत है। तन की मजबूती के लिए कई पर्व हैं। विघ्न निवारण के पर्व हैं। प्रलोभन के भी कई पर्व हैं। कुछ पर्व सामाजिक हैं, धार्मिक हैं, आर्थिक हैं। कुछ राष्ट्रीय पर्व हैं। संसार के जितने-जितने पर्व हैं वे सब सांसारिक पर्व हैं। संसार के पर्व विनाशी हैं, परिवर्तनशील हैं, सदा एक-से नहीं रहते। किन्तु पर्वाधिराज पर्युषण पर्व आध्यात्मिक पर्व है।

पर्व की तीन विशेषताएँ हैं। संसार में जितने पर्व हैं वे सार्वकालिक नहीं हैं। आप चाहे जिस किसी नाम से कहें वह चाहे भैरूजी के नाम पर हो या माताजी अथवा चाहे जिस भी नाम पर हो, वे अभी हैं, आगे रहेंगे या नहीं, कहा नहीं जा सकता। पर्व चाहे दीवाली हो या होली, हर पर्व में समय के साथ बदलाव हुआ है। आपने कई दीपावलियाँ मनाई हैं। हमने भी देखा है कि दीपावली पर हिसाब-किताब हुआ करता था। बही-खाते दीपावली पर बदले जाते थे। आज क्या हो रहा है? आज दीपावली के बजाय 31 मार्च को हिसाब-किताब किया जाता है। आपने यह परिवर्तन मान्य किया या नहीं?

होली पहले भी मनाई जाती थी, आज भी मनाई जाती है। परन्तु पहले वाले रूप में और आज के रूप में बदलाव आया या नहीं? पहले बुराई और पाप को जलाया जाता था, आज अच्छाई और नैतिकता को भी जलाया जा रहा है। अभद्रता से अच्छाई घट रही है। उस होली के मनाने में बदलाव आया है। दीपावली-होली ही नहीं, शीतलामाता का त्यौहार हो या गोगानवमी का, हर त्यौहार में समय के साथ बदलाव आया है तो नागपंचमी में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। आप चाहे हिन्दुओं के पर्व लें या मुस्लिमों के, ईसाइयों के पर्व लें अथवा अन्य-अन्य परम्परा के सबमें परिवर्तन आया है। देश की दृष्टि से जो पर्व भारत में मनाए जाते हैं वे चीन में नहीं मनाते। भय के वशीभूत हो या प्रलोभन की दृष्टि से अथवा स्वागत सत्कार की दृष्टि से सांसारिक पर्व समय के साथ बदले हैं, बदलाव की यह प्रक्रिया चलती है। मारवाड़ में रामदेवजी का मेला लगता है तो क्या देश के दूसरे प्रान्तों में अथवा विदेशों में भी रामदेव जी को मनाया जाता है?

सांसारिक पर्व समय के साथ बदले हैं, लेकिन पर्वाधिराज पर्युषण पर्व आध्यात्मिक पर्व है। आप चाहे छोटे हों या बड़े, स्त्री हो या पुरुष, हिन्दुस्तानी हों या पाकिस्तानी आप चाहे जहाँ हैं। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना जो भी करता है वह आत्मा से परमात्मा बन सकता है। यह नहीं कि निमाज में साधना करने वाला तिरता है और ब्यावर में साधना करने वाला डूबता है। हर गांव में भगवान् का नाम सुबह-सुबह लिया जाता है। वह नाम चाहे राम का हो या कृष्ण का। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर के नाम सुबह-सुबह लिए जाते हैं किन्तु रावण का नाम लेवा, कहीं नहीं है।

संसार में कई ऐसे पर्व हैं, क्षेत्र हैं, व्यक्ति हैं, उनके नाम पर पर्व चल सकते हैं किन्तु वे पर्व सभी के लिए मान्य नहीं होते। परन्तु पर्वाधिराज पर्युषण पर्व सभी लोगों के लिए है, सभी क्षेत्रों के लिए है। आज क्षेत्र के साथ कई पर्व जुड़े हैं। पुष्कर जाओ तो सिद्धि हो जाय, काशी-मथुरा जाओ तो मुक्ति हो जाय। साधना-आराधना, जप-तप और मुक्ति के लिए कुछ तीर्थ प्रसिद्ध हैं। हाँ, स्थान सहायक हो सकते हैं पर सहायक भी उनके लिए होते हैं जो करणी करते हैं। क्षेत्र, काल, द्रव्य एवं भाव सबका महत्त्व है, किन्तु सिद्धि उसे ही मिलती है, जिसके भाव शुद्ध बन गए। यों कहने में कहा जाता है कि कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं जहाँ से कोई सिद्ध न हुआ हो। वह चाहे भूमि हो या पहाड़, गुफा हो या अन्य स्थान, हर क्षेत्र से सिद्ध हुए हैं। निमाज ही क्यों, ढाई द्वीप का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जहाँ से कोई सिद्ध न हुआ हो।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व सर्वकालिक है, सार्वजनिक है, सार्वदेशिक। जिन्होंने पहले साधना की, उनकी मुक्ति हुई, आज जो साधना करते हैं उनकी मुक्ति हो सकती है। साधना के लिए न क्षेत्र, न काल और न व्यक्ति, कोई भी बाधक नहीं है। जो साधना करता है, वह

तिरता है। तिरने के लिए ज्ञान चाहिए। ज्ञानपूर्वक साधना नहीं की तो फिर बंधन में जकड़ने से कोई नहीं बचा सकता। पुरुषार्थ है पाप-कर्म करने का और कर्म-बंध करने का, तो सिद्धि नहीं हो सकती। तिरना चाहो तो ज्ञान करो। ज्ञान किसका करना? आज तो कई ऐसे भी हैं जो कहने में कह जाते हैं क्या रखा है साधना में? भगवान् हैं या नहीं किसने देखा? आज रामभक्त राम को देखने की बात करता है, कृष्णभक्त कृष्ण को, शिवभक्त शिव को मानता है। संसार में न मालूम कितने भगवान हैं? अजमेर के जीतमलजी चौपड़ा कहते थे-

**महाविदेह अरिहन्त विराजे, कुण देख्या, देखण जासी।**
**गुरुदेव की शरण लेय तो, तूं खुद अरिहन्त बण जासी।।**
**गुरु भज गुरु भज, गुरु भज मनवा, गुरु भज्यां गुणधन पासी।**
**गुरुने ध्याकर, गुरु ने पाकर, तूं खुद अरिहन्त बण जासी।।**
**गुरुदेव की कृपा होय तो, तूं खुद अरिहन्त बण जासी।**
**गुरु भज गुरु भज, गुरु भज मनवा, गुरु भज्यां गुणधन पासी।।**

भगवान् हैं या नहीं, किसने देखा है? हाँ गुरु तो हैं आप-हम गुरु की शरण ले लें तो बेड़ा पार है।

भगवान् आज भी हैं। सिद्ध आज भी हैं। अरिहन्त आज भी हैं। आप चाहे तो सिद्ध कहो, बुद्ध कहो, मुक्त कहो, खुदा कहो, ईश्वर कहो, गोड कहो, चाहे जिस नाम से कहो वे आज हैं। यों गिनती करने जाओ तो न जाने कितने सिद्ध हो गए, कितने अरिहन्त हो गए, आचार्य भी एक नहीं, अनेक हैं। उपाध्याय भी कई हैं। साधुओं की तो गिनती ही नहीं है। कई लोग इतने-इतने भगवानों से, आचार्यों और साधुओं से भ्रमित हैं कि हम किनके पास जाएं, किनके पास नहीं जाएं? भ्रमित मानसिकता वाले सोचते हैं कि किसी के पास नहीं जाएंगे। क्योंकि कोई कहते हैं- नमोत्थुणं करो, कोई लोगस्स का जाप करने की बात कहते हैं तो कई हैं जो कहते हैं कि तुम उवसग्गहर करो, भक्तामर करो, अमुक जप करो। सब अलग-अलग बताते हैं, ऐसी स्थिति में कुछ लोग भ्रमित हुए बिना नहीं रहते।

एक भाई आया। वह बोला- बाबजी! मैं तो मंदिर जाता हूँ। मंदिर में जाकर जो कुछ मैं करता हूँ वह सब ठीक है। क्यों, तो मंदिर के भगवान् कुछ कहते नहीं। महाराज तो सभी अलग-अलग साधना पद्धति बताते हैं।

अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु सब परम वन्दनीय हैं। किन्तु वे एक रूप वाले नहीं है। आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज) भी कहा करते थे- देखो, जरूर देखो, पर खुद को देखो, खुद से देखो। आपने भजन सुना है। मैं भजन को नहीं दोहराता। लेकिन देखना ही है तो अपने-आपको देखो। आत्मा का आत्मा से ज्ञान

करना खुद को खुद से देखना है। आप चाहे जिस परम्परा को लें, चाहे जिस ग्रंथ को देखें, चाहे जिस संत से पूछें आप आत्म-स्वरूप का ज्ञान अपनी आत्मा से कर सकेंगे। आत्म स्वरूप क्या? आत्मा का स्वरूप है- अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख, अनन्तशक्ति। आत्मा सर्व शक्तिमान है। जैसे अरिहन्त-सिद्ध सर्वगुणी हैं वैसे ही आत्मा को देखने वाला अपने-आपको देखता है। आप अपने-आपको देखकर निर्णय कीजिए कि आप कहाँ हैं?

आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज) ने कहा था- आत्मा अनन्त सुखी है। एक दुःखी आदमी भगवन्त के श्रीचरणों में पहुँचा। भगवन्त ने आत्म-स्वरूप के संदर्भ में कहा कि तू अनन्त सुखी है। वह भाई बोला- बाबजी! आप म्हारी क्यूं हँसी करो। मैं पहले से बहुत दुःखी हूँ। कभी आत्महत्या करने की मन में आती है। मुझे और ज्यादा दुःखी करने में आपको क्या मज़ा आता है? क्यों आप मेरे घाव पर नमक-मिर्ची छिड़क रहे हैं? मैं तो आपके पास दुःख भूलने के लिए आया था, पर आप तो जले पर नमक छिड़क रहे हैं।

भगवन्त ने कहा- "भाई! तू बाहर देख रहा है। तू यदि अन्तर से अपने-आपको देखे तो तेरे भीतर कोई दुःख नहीं है। तूने दुःख मान लिया है, इसलिए तू दुःखी है।" भगवन्त ने पूछा- "भाई! तेरे पास मकान है?" "हाँ बाबजी! छोटी-मोटी झोंपड़ी है।" फिर पूछा- "घर में बर्तन तो हैं?"

हाँ, बाबजी! हैं।

तेरे पास आँख, नाक, कान जैसी इन्द्रियाँ हैं या नहीं?

वह भाई बोला- "बाबजी! मेरे सभी इन्द्रियाँ है, काम कर रही हैं। मैं देख सकता हूँ, सुन सकता हूँ।"

भगवन्त ने कहा- "भाई! तेरे पास मकान है, बर्तन है, इन्द्रियाँ हैं, पर हजारों ऐसे लोग हैं जिनकी इन्द्रियाँ काम ही नहीं करती। हजारों हैं जो खुले में सड़क पर सोते हैं। खाने को पास में एक दाना तक नहीं है। तेरे पास सब चीजें है, फिर तूने अपने-आपको दुःखी क्यों मान लिया?"

देख भाई! सारी दुनियाँ के पदार्थ किनको मिले हैं? सब दुःखी हैं। भरत क्षेत्र का पूरा राज मिलाने वाला भी अपने आपको तृष्णा के कारण दुःखी मानता है। जिनके एक लाख बानवें हजार पत्नियाँ हैं फिर भी तृप्ति नहीं। रावण के पास क्या कमी थी? फिर भी वह सीता का हरण करके क्यों लाया? बात यह है-

घर की खांड किरकिरी लागे, चोरी का गुड मीठा।<br>
पर नारी के कारणे, जूत पडन्ता दीठा।।

घर में पत्नी है, पतिव्रता है, फिर भी वह किसी दूसरी को देखता है तो कहना होगा मूलतः उसे दुःख नहीं है, किन्तु तृष्णावश वह अपने-आपको दुःखी मानता है। अरे, जो पराई नार को माता-बहन नहीं समझे, वह अपनी इज्जत खराब करता है। ऐसे लोग जो पराई बहन-बेटियों को छेड़ते हैं, वे भरे बाजार में जूते खाते हैं।

हर आदमी अपने-आपको दुःखी मान सकता है या सुखी अनुभव कर सकता है। आप अगर अपने-आपको दुःखी मानते हो तो आप दुःखी हो और सुखी मानते हो तो सुखी हो। क्यों? तो आपकी आत्मा में अनन्त ज्ञान है। चेष्टा करें कि आपका ज्ञान बढ़ें। अब प्रश्न उठता है कि ज्ञान कैसे बढ़े? जो ज्ञान का आदर करता है उसका ज्ञान बढ़ता है। आप ज्ञान का आदर करें।

ज्ञान जीव का गुण है। जड़ में ज्ञान नहीं होता। आपमें ज्ञान है या नहीं, आप स्वयं अपनी परीक्षा करके देखें। मैं आपसे पूछूँ- हिंसा में पाप है या धर्म? चोरी करना पाप है या धर्म? कुशील का सेवन करना पाप है या धर्म? परिग्रह में रचे-पचे रहना पाप है या धर्म?

आप सबको ज्ञान है- हिंसा करना पाप है, झूठ बोलना पाप है, चोरी करना पाप है, कुशील का सेवन करना पाप है। क्रोध पाप है, मान पाप है, लोभ पाप है। ये बातें आप-सब जानते हैं।

पूज्य गुरुदेव ने एक द्रष्टान्त दिया- एक छह महीने का बालक खाने योग्य क्या है, नहीं खाने योग्य क्या है, नहीं जानता। वह दूध के साथ खेलता है तो मूत्र के साथ भी खेलता है। उसे न गंदगी का ज्ञान है, न सफाई का। वह छह माह का बच्चा शुद्धि-अशुद्धि नहीं जानता। वही बच्चा छह साल का हो जाय तो उसे गन्दगी क्या है, इसका ज्ञान होने पर वह स्वयं उसे साफ करता है। कदाचित् स्वयं साफ न कर सके तो माँ को कहता है। वह अशुद्धि पसन्द नहीं करता, वह शुद्धि चाहता है। छह माह का बच्चा गंदगी है तो उससे खेल करेगा, हाथ डाल देगा, किन्तु वही बच्चा छह साल का हो गया तो गंदगी छूना तो दूर, पास तक नहीं जाएगा। उसे ज्ञान हो गया। आप सबको ज्ञान है कि हिंसा करना पाप है, झूठ बोलना पाप है, चोरी करना पाप है, क्रोध-मान-माया-लोभ पाप हैं। आप जानते हैं फिर ये पाप क्यों होते हैं? मतलब, आप जानते तो हैं, किन्तु मानते नहीं, इसीलिए तो ये आराधना के दिन आए हैं। ज्ञान है उसे जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करना है। आपको पाप छोड़ने हैं। आप पाप छोड़ें। जिन्दगी भर पाप नहीं करें यह तो सर्वश्रेष्ठ है, पर कम-से-कम पर्वाधिराज पर्युषण के इन पवित्र दिनों में तो अवश्य साधना-आराधना करें। ज्ञान को आचरण में लाने के अभियान से कोई वंचित नहीं रहे।

गुरुदेव के शब्दों में कहूँ- ''वर्षा में रेत गीली होती है। बच्चे पैर रखकर गीली मिट्टी

का घर बनाते हैं, मुझे बताओ वह घर किस काम का? एक बच्चा नक्शा बनाता है। नक्शे में कहाँ नदी है, कहाँ पर्वत है बच्चा दिखाता है। मुझे बताओ कि नक्शे में बनाई नदी का पानी किसके उपयोग में आता है? आप उस बच्चे को जो गीली मिट्टी से घर बनाता है उसे यह कहने में संकोच नहीं करते कि यह घर किस काम का? तू क्यों हाथ गंदे करता है? क्यों कपड़े खराब करता है? नक्शे की नदी से क्या किसी की प्यास बुझ सकती है?

आप जानते हैं हिंसा में पाप है, दया में धर्म है। आप जिसे जानते हैं, उसे व्यवहार में चरितार्थ करें। हिंसा, हिंसा है। हिंसा में पाप है, हिंसा कभी धर्म नहीं हो सकती। आप मनुष्य जन्म में साधना कर सकते हैं। साधना न नरक में हो सकती है, न देवगति में। तिर्यंच भी पूर्ण साधना नहीं कर सकते। साधना मनुष्य जन्म में हो सकती है, मनुष्य साधना कर सकता है।

कल एक भाई आया। उससे पूछा- 'क्या करते हो?' वह भाई बोला- 'बाबजी! एक माला रोज जपता हूँ। मैंने वर्षों पूर्व गुरुदेव (पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज) से नियम लिया था, आज तक नियम का पालन चल रहा है। मैं लिए गए नियम का बराबर पालन कर रहा हूँ।' कितने साल पहले नियम लिया? कितने वर्ष हो गए नियम को पालते हुए? वर्षों से वही का वही नियम चल रहा है तो क्या कहना? एक लड़का है। वह तीन साल से कक्षा में फैल हो रहा है तो क्या उस बच्चे को स्कूल से निकाला जाएगा या नहीं? कई भाई हैं, जिन्होंने वर्षों पूर्व सामायिक का नियम लिया, आज भी वही एक सामायिक चल रही है तो उसे क्या कहना? सामायिक में बढ़ोतरी नहीं, तो फिर कमाई में बढ़ोतरी की कामना क्यों? वर्षों पूर्व आप पचास रुपये कमाते थे, आज भी वही कमाई है तो क्या इससे आपको संतोष है?

भाई जब कमाई बढ़ाने की चिंता है, तो फिर सामायिक बढ़ाने का विचार क्यों नहीं बनता? आप जैसे कमाई में संतोष करके नहीं बैठते वैसे ही धर्म-साधना में आपको चरण बढ़ाने की जरूरत है। साधना-आराधना करने वाला आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बन सकता है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व साधना करने के लिए है। आप साधना करें। सामायिक, संवर और त्याग-तप में आगे बढ़े। साधना-आराधना में चाहे बच्चे हों या बुड्ढे, स्त्री हों या पुरुष सब आगे बढ़ सकते हैं।

साधना सबको तारने वाली है। साधना हर काल में की जा सकती है, हर क्षेत्र में की जा सकती है। साधना के लिए पर्वाधिराज पर्युषण पर्व सुनहरा अवसर है। यह पर्वाधिराज महापर्व सबको तारने वाला है। इस पर्व की साधना में न जाति बाधक है, न क्षेत्र, न काल। जात-पांत पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।

जो साधना करेगा वह तिरेगा। आपका नाम किसमें लिखूँ? आप चाहें जो कर सकते हैं। पीपाड़ में मनीषमुनिजी महाराज की प्रेरणा से एक बहिन जो एकासने में एक जगह

बैठकर तीन बार खाती थी, उपवास उससे कभी नहीं बना। पर प्रेरणा से वह बहिन मासक्षमण कर गई। कैसे हुआ तप?

एक जैन भाई दिन में पच्चीस पुड़िया गुटखा खाता था। उसे व्यसन-त्याग की बात समझाई गई, तो उसने गुटखा खाना छोड़ दिया। जो एक-एक दिन में पच्चीस-पच्चीस पुड़िया गुटखा खाता था और कहता था कि मैं बिना गुटखा खाए नहीं रह सकता। प्रेरणा के कारण गुटखा छोड़ दिया। वह फिर से आया, तो कहने लगा- "बाबजी! गुटखे के त्याग से मेरा शरीर पूरी तरह स्वस्थ है और निर्व्यसनी बनने से शरीर की ही नहीं, पैसे की बर्बादी भी रुक गई है।

अर्जुनमाली जैसा हत्यारा सिद्धि पा सकता है तो आपके लिए साधना भारी नहीं हो सकती। हाँ, चाहिए दृढ़ इच्छा शक्ति। आपसे जो भी बनता है करें, कोई खाली नहीं रहे। आप तप-साधना में जितना बन सकता है पुरुषार्थ करें। संवर-साधना करें। ज्ञान आराधना करें। व्रत-प्रत्याख्यानों में आगे बढ़ें। आप-सब यहाँ जो भी आए हुए हैं वे घर-बार छोड़कर आए हैं। यहाँ पर आपके लिए साधना-आराधना करने की सुविधा निमाज-वासियों ने कर रखी है। आपको न बनाने की जरूरत है, न संवर-साधना के लिए उपकरण तैयार करने की जरूरत है। आपको सब तरह की अनुकूलता है, व्यवस्था की दृष्टि से सुविधा में कोई कमी नहीं है, फिर भी आप साधना-आराधना में कोताही करेंगे तो आपको पछताना पड़ेगा। सागर के पास जाकर कोई प्यासा रह जाए तो क्या कहेंगे? आप जप करें, तप करें, ज्ञान करें, साधना-आराधना करें तो आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बन सकेंगे। ■

## पहले जन्म-सुधार, फिर मरण-सुधार

*साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.*

संसारस्थ प्राणी सोचता है जन्म-सुधार की क्या आवश्यकता है? जब मरण की घड़ी सन्निकट आयेगी, तब मैं धर्म की चदरिया ओढ़कर पावन-पवित्र हो जाऊँगा। उसी वक्त मरण सुधार लूँगा। पर ऐसा कभी हुआ नहीं, होता नहीं, और भविष्य में होने का अर्थ नहीं। हाँ, अपवाद की बात निराली है। जीवन के संस्कार, जो भले-बुरे हैं वे अन्तिम समय उभर आयेंगे और आनुपूर्वी नामकर्म उसे घसीट कर, उसी स्थान पर ले जायेगा जहाँ का उसने आयुबन्ध किया है। अतः यही क्रम समझिए- पहले जन्म-सुधार, फिर मरण-सुधार और फिर परलोक-सुधार होता है। यही उत्सर्ग विधि है।

-'सुजान-ज्योति' से साभार

प्रवचन

# क्या आपको जेल पसन्द है?

*तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.*

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा महावीर भवन, अलवर में 09 नवम्बर, 2015 को फरमाए गए इस प्रवचनांश का संकलन-सम्पादन श्री ओमप्रकाशजी गुप्ता, राजस्थान टाइम्स, अलवर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

'क्या कभी आपने कोई जेल देखी? किसी कारागृह में जाना पड़ा? क्या जेल जाना पसन्द है? संसार का कोई भी प्राणी कभी जेल जाना तो दूर ऐसा सोचना भी नहीं चाहेगा। फिर जेल जाता कौन है? जेल उसको जाना पड़ता है जिसने कोई अपराध किया है। क्या कोई अपराधी जेल की सजा से बच सकता है? अदालत ने जिसे सजा सुना दी है अथवा पुलिस ने अपनी प्रारम्भिक जाँच में जिसको अपराधी मान लिया, उसे फिर जेल या हवालात में बन्द होना पड़ता है। यह अलग बात है कि किसी को जेल के समान ही किसी स्थान विशेष पर अस्थाई जेल के बतौर नजरबन्द रखा गया हो। किसी को जेल में भी विशेष सुविधाएँ मिलती हैं। कभी मीसा-डी.आई.आर.के राजनीतिक बन्दी भी जेल में अलग से रखे गए हैं। कोई खुली जेल में रहता है। किसी को उम्रकैद की सजा भोगनी पड़ती है तो किसी को 10 वर्ष, 5 वर्ष, 2 वर्ष, 1 वर्ष, 6 माह, 1 माह अथवा एक दिन जेल की हवा खानी पड़ती है। सजा का निर्णय अपराधी के अपराध के अनुसार न्यायाधीश करता है और फिर उसी अनुरूप अपराधी को जेल में बन्द रहना पड़ता है। सजा सुनने के बाद कोई अपराधी यह कहे कि मुझे नहीं जाना जेल; तब क्या वह बच सकता है? नहीं, उसे जेल में जाकर सजा भुगतनी ही पड़ती है।

जब आपको यह विश्वास है कि अपराधी को निर्णय के बाद जेल में रहना ही पड़ेगा, फिर अपने पाप-कर्मों पर प्रकृति प्रदत्त सजा के प्रति भरोसा क्यों नहीं है? कर्मों की जेल में भी यही सब होता है। जिस इंसान का जैसा-जैसा पाप कर्म है, उसे वैसी-वैसी ही जेल की सजा मिलती आई है। कर्म का न्यायाधीश तो कोई दलील-तर्क-बहस भी नहीं सुनता, क्योंकि उससे कोई भी पाप छिपाए नहीं छिप सकता। आप भले ही अपनी नादानी से अभी यह नहीं मान रहे हैं कि आपके सारे अच्छे-बुरे कर्मों की वीडियो फिल्म आत्मा के द्वारा हर पल बन रही है। वह जब कर्म सत्ता के दरबार में खुलेगी तब उसके निर्णय मंजूर करने ही पड़ेंगे। संसार में हर जीव के साथ यही हो रहा है, परन्तु विडम्बना यह है कि भ्रमित इन्सान बाहरी संसारी जेल और अपराध का दण्ड सुनाने वाले जज के निर्णय पर भरोसा करता है, परन्तु प्रकृति की अदालत व कर्मों की जेल पर विश्वास नहीं कर रहा। तभी तो कदम-कदम

पर इंसान गलत कार्य तथा मिथ्या धारणा से परिपूर्ण होकर पाप कर रहा है। उसे इस बात का कोई डर-खौफ ही नहीं है कि उसके द्वारा किए गए पापों की उसे एक दिन सजा भी भोगनी पड़ेगी। अगर पाप कर्म करने से पहले भय लगना प्रारम्भ हो जाए, फिर आपके पाप कर्म आगे बढ़ नहीं सकेंगे।

पापों से बचने के लिए ही धर्म किया जाता है। धर्म की शरण सिर्फ पापों से बचने के लिए ली जाती है। जब जीव पाप नहीं करता, पाप से बचता है, पाप को पाप मानने लगता है, पाप से दूसरों को बचाने का भाव रखता है, तब पुण्य कर्म अपने आप प्रकट होते हैं। जीव भव-भवों के संचित पाप कर्मों को पतला करने या उन्हें क्षय करने की शक्ति अर्जित करने लगता है। इसीलिए वीतराग भगवंतों व उनके द्वारा प्ररूपित सम्यक् ज्ञान का सहारा लेकर पापों से बचने के लिए संवर-सामायिक-समता-ध्यान की साधना की जाती है ताकि आगे कर्मों की जेल से बचा जा सके। इसके विपरीत जिन्हें कर्म की जेल में जाना ही पसन्द है और पाप अथवा अशुभ प्रवृत्तियाँ करने पर कोई भय नहीं है, फिर उन्हें साक्षात् परमात्मा भी आकर नहीं समझा सकते। पाप करने वालों को कर्मों की सजा भोगनी ही पड़ती है, भोग रहे हैं और अनन्तकाल तक भोगेंगे, यही सच्चाई है।'

कभी किसी खास वज़ह से संसार की जेल से कोई अपराधी बच सकता है, किन्तु कुदरत की जेल से आज तक कोई पापी नहीं बच सका और न ही बचेगा। कुदरत के फैसले पर कहीं अपील भी नहीं होती, अशुभ कर्मों की सजा भुगतनी ही पड़ती है। तभी तो संसार के सारे धर्म-पंथ-सम्प्रदाय-मत-मतान्तर मानने वाले धर्माचार्य-सन्त-फकीर-संन्यासी पापों से बचने की पावन सीख देते आए हैं। सभी धर्म ग्रन्थ, शास्त्र-आगम-गीता-रामायण-गुरु ग्रंथ साहब, बाईबिल, कुरान शरीफ आदि पापों से दूर रहने की प्रेरणा-मार्गदर्शन और तत्त्वबोध देते आए हैं। यह व्यक्ति के अपने स्व-विवेक पर निर्भर है कि वह महापुरुषों के आदर्श वचनों की पालना किस लेवल तक कर पाता है। ध्यान रखना- अपने भीतर में सर्वाधिक पापों का बंध काषायिक प्रवृत्ति के द्वारा होता है। क्रोध-मान-माया-लोभ की स्थिति पल-पल पाप बढ़ाती है। जरा सी साता की आसक्ति, नाम की भूख भव बिगाड़ देती है। जब तक हम अपने से भिन्न का शासन भीतर में नहीं होने देंगे, तब तक पापों से बच नहीं सकेंगे। भिन्न क्या है? वे तमाम प्रवृत्तियाँ व मन स्थितियाँ भिन्न हैं जिनसे आत्मा के गुण अवरुद्ध और ओझल होते हैं। पुद्गलों का शासन ही तो संसार में जीव को भटकाता है। आँखों से दीखने वाले सब पदार्थ जड़ हैं। जब तक जीव के अनुसार सम्यक्त्व की राह पर चलना प्रारम्भ नहीं होगा, तब तक बंधन की बेड़ियाँ कमजोर पड़ने वाली नहीं हैं। जीव कभी दिखता नहीं है, लेकिन जैसे हम हवा के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, उसी तरह आत्मा

यानी जीव हमारे भीतर हमेशा विद्यमान है।

आत्मा पराधीन तभी तक रहती है, जब हम उसके स्वरूप को सम्यक्तया नहीं जानते। पाप होते ही तब हैं, जब अज्ञानी इंसान आत्मा के मूल स्वरूप व ज्ञान को भुला बैठता है। पराधीनता से आत्मा का प्रकाश लुप्त सा हो जाता है और कषाय प्रवृत्तियाँ हावी हो जाती हैं। राग-द्वेष-मोह-माया-विषय-विकार और लालच जीवन का पतन करने के निमित्त बन जाते हैं और फिर एक दिन जीव को कर्मों की जेल में उनकी सजा भोगनी ही पड़ती है। हम जागें और आत्म-भाव में लीन होने के लिए उस शाश्वत सुख की राह पकड़ें जिससे अपना आने वाला कल मंगलदायी हो सके। अपनी मनःस्थिति को संभालने के लिए खुद अपने चौकीदार बनें, तभी सार्थक परिणाम संभव है।

## बेकार की बात

*संकलन : श्री आनन्दराज जी. जैन*

सुकरात अपनी विद्वत्ता और विनम्रता के कारण काफी मशहूर थे। एक बार वे बाजार से गुज़र रहे थे कि उनका एक परिचित मिला। उसने सुकरात को नमस्कार किया, फिर कहा- "जानते हैं, कल आपका मित्र आपके बारे में क्या कह रहा था?" सुकरात ने उसे बीच में ही टोका और बोले- "मित्र, मैं तुम्हारी बात जरूर सुनूँगा, पर पहले मेरे तीन छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर दो।" उनके उस परिचित ने उन्हें हैरत से देखा, फिर इशारे से प्रश्न पूछने की अनुमति दी। सुकरात बोले- "पहला प्रश्न यह है कि जो बात मुझे बताने जा रहे हो क्या पूरी तरह सही है?" उस आदमी ने कुछ सोचा, फिर कहा- "नहीं, मैंने यह बात सुनी है।" इस पर सुकरात बोले- "इसका मतलब तुम्हें पता ही नहीं कि वह सही है। खैर, क्या तुम जो बात मुझे बताने जा रहे हो वह मेरे लिए अच्छी है?" उस शख्स ने तत्काल कहा- "नहीं, वह आपके लिए अच्छी तो नहीं है। आपको उसे सुनकर दुःख होगा।" इस पर सुकरात ने कहा- "अब तीसरा प्रश्न, तुम जो बताने जा रहे हो, क्या वह मेरे किसी काम की है?" उस व्यक्ति ने कहा- "नहीं तो.....उस बात से आपका कोई काम नहीं निकलने वाला।" तीनों उत्तर सुनने के बाद सुकरात बोले- "ऐसी बात जो सच नहीं है, जिससे मेरा कोई भला नहीं होने वाला, उसे सुनने से क्या फायदा! और तुम भी सुनो। जिस बात से तुम्हारा भी कोई फायदा नहीं होने वाला हो, वैसी बात तुम क्यों करते हो?" यह सुनकर वह व्यक्ति लज्जित हो गया और चुपचाप वहाँ से चला गया।

*-ई-2-13, जलनिधि कॉपरेटिव हॉउसिंग सोसायटी, तीसरामाला, बांगर नगर, लिंक रोड़, गोरेगांव (वे.), मुम्बई-400090( महा.)*

प्रवचनांश

# नमो लोए सव्वसाहूणं : अमृत शिक्षा (5)

*महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.*

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की प्रशिष्या एवं व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. की शिष्या महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. प्रतिदिन **'एक कदम धर्म की ओर'** कक्षा को सम्बोधित करते हैं। विभिन्न कक्षाओं में 'नमो लोए सव्वसाहूणं' पद के सम्बन्ध में उन्होंने जो विचार व्यक्त किए, उनका संकलन कर संघ कार्याध्यक्ष श्रावकरत्न श्री अशोकजी कवाड़, चेन्नई ने हमें उपलब्ध कराया है।**-सम्पादक**

74. जिन्हें अपने अपराधों को स्वीकार करने में तथा क्षमा मांगने में क्षण भर भी विलम्ब नहीं होता, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
75. जिन्हें समवयस्क का विशेष विकास व स्वयं का अल्प विकास होने पर भी ईर्ष्या तो दूर, अनुमोदना व प्रमोद भाव रहते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
76. जिन्हें उनके द्वारा ग्रहण किये व्रतों से डिगाने में देव-दानव-तिर्यंच-मानव कोई भी सक्षम नहीं होते, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
77. जिनमें सर्वगुण सम्पन्नता रहते हुए भी लघुता व विनम्रता रहती है, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
78. जिनमें संसार की सारी प्यास मिट गई, मात्र एक मोक्ष प्राप्ति की प्यास ही सर्वेसर्वा बन गई, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
79. जो रात्रि में मच्छरों के झुण्ड के मध्य रहकर भी उन्हें उड़ाने का प्रयास नहीं करते हैं व उड़ाने में भी परितापना न हो जाए यह ध्यान रखते हैं, अत: ''नमो लोएसव्वसाहूणं''।
80. जिनके पास एक भी अनुकूलता नहीं, पर वे समस्त जीवराशि के अनुकूल बनकर रहते हैं, अत: ''नमो लोएसव्वसाहूणं''।
81. जिनके जीवन का हर पल सभी के द्वारा विश्वसनीय बना हुआ है, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
82. जो किसी के दोषों को जानकर भी अन्य किसी को नहीं कहते तथा दोषी से घृणा भी नहीं करते, अपितु मैत्री रखते हैं, अत: ''नमो लोए सव्वसाहूणं''।
83. जो अपनी भविष्यकालीन व्यवस्थाओं की चिंता से चिंतित नहीं होते, अत: ''नमो

लोए सव्वसाहूणं"।

84. जो संघ, समाज के लिये वरदान रूप हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
85. जिन्हें किसी भी प्रकार की अशुचि से कभी घृणा उत्पन्न नहीं होती, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
86. जिनकी समस्त साधनाएँ मात्र कर्म-निर्जरा के लक्ष्य से होती है, कुछ भौतिक प्राप्ति के लिये नहीं होती, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
87. जो निर्नाम पद के पथिक हैं, अत: चारों दिशाओं में होने वाले नाम से जो आनन्दित नहीं होते, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
88. शरीर की कुरूपता, विकलता आदि जिनमें दीन भाव लाने में समर्थ नहीं होती, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
89. जिनमें स्व-नियन्त्रण इतना उत्कृष्ट होता है कि पर-नियन्त्रण की आवश्यकता नहीं होती, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
90. जिनका जीवन गुलाब सा महकता है, पर जिनमें अहंकार के कांटे नहीं होते, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
91. जिनमें मन-वचन व काया की सरलता होती है, वक्रता नहीं होती, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
92. जो महाव्रत पालन में संलग्न रहते हुए भी दुष्कर साधनाओं में आगे बढ़ते रहते हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
93. जो रुक्ष आहारी होते हैं, पर जिनकी प्रकृति स्निग्ध रहती है, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
94. जो सभी के साथ मक्खन जैसा कोमल तथा स्वयं के साथ पर्वत जैसा कठोर व्यवहार करते हैं, मच्छर आदि जीवों का पंख भी अपने द्वारा अलग हो जाए तो प्रायश्चित्त लेते हैं एवं स्वयं का साल में दो बार लोच करते हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
95. जो जगत में सबको पराया मान कर भी सभी को भरपूर अपनत्व देते हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
96. जो जीवन भर के लिए सारे आभूषण त्याग चुके हैं तथा गुणों से विभूषित रहते हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
97. जो जीवन पर्यन्त के लिये अनेक गुणों के धारी हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"।
98. जो संयम में निर्दोषता को टिकाये रखने के लिये हँसते-हँसते आजीवन अनशन रूप संथारा तक स्वीकार कर लेते हैं, अत: "नमो लोए सव्वसाहूणं"। **(समाप्त)**

शोधालेख

# उवंगचूलिया का परिचय और समीक्षा

*प्रो. सागरमल जैन*

प्राकृत आगमों के सन्दर्भ में हमें जो जानकारी प्राप्त होती है, उनका प्राचीनतम आधार नन्दीसूत्र है। नन्दीसूत्र में अंग बाह्य आगमों के दो विभाग किये गये हैं- 1. आवश्यक और 2. आवश्यकव्यतिरिक्त। इस आवश्यकव्यतिरिक्त के भी पुनः दो विभाग हैं- 1. कालिक और 2. उत्कालिक। इसमें कालिक वर्ग के अन्तर्गत मूल में 31 आगमों के और परवर्ती टीकाओं में 35 ग्रन्थों के नाम मिलते हैं। उसमें 13 वें क्रम पर अंगचूलिया और 14 वें क्रम पर वग्गचूलिया (उवंगचूलिया) का उल्लेख है, दीर्घकाल से ये दोनों ग्रन्थ अनुपलब्ध माने जाते थे। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक आचार्य भी इनका प्रायः उल्लेख नहीं करते थे और न इन पर कोई निर्युक्ति, भाष्य या चूर्णि ही मिलती है, यहाँ तक कि इनकी कोई टीका ही उपलब्ध नहीं होती है। इनकी प्राचीन हस्तप्रतें भी उपलब्ध नहीं होती है। इन पर कोई निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका या वृत्ति लिखी गई हो, ऐसी कोई सूचना भी प्राचीन ग्रंथों से ज्ञात नहीं होती है। हेमचन्द्राचार्य ज्ञान मन्दिर, पाटण से (डब्बा 391, ग्रंथांक 18662) 9 पत्र की एक प्रति प्राप्त होती है, उसमें अन्त में "जिणवयणे दढचित्तो होइ पइहियहं। इति श्री उवंग चूलिया सम्मता सं. 1929, फा. सु. 14 श्रीमद्विजयचंद्रगणिना लिखिता" ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त तपोवन संस्कार धाम नवसारी से (29 पत्र की एवं 13 पत्र की) जो प्रति प्राप्त होती है, उसके अन्तिम पृष्ठ पर 'जिणवयणे दढचित्तो होइ पइतियहं...। इतिश्री वग्गचूलियाए 'सुयहीलुप्पत्ति' अज्झयणं संपूर्ण संवत् 1858 वर्षे फागण वद 14 गुरुवासरे संपूर्ण, श्री शांतलपुर नगरे, श्री शांतिनाथ प्रसादात्। मुझे बी.एल. इन्स्टिट्यूट, दिल्ली से एक प्रति उपलब्ध हुई है, उवंगचूलिका का प्राचीनतम उल्लेख 1721 का है, अर्थात् इसकी हस्तप्रतें भी सत्तरहवीं या अठारहवीं शती की ही मिलती हैं। यद्यपि आज श्वेताम्बर परम्परा के विभिन्न भण्डारों में इसकी प्रतियाँ तो मिलती हैं, किन्तु आजतक इसकी 17 वीं शती के पूर्व की कोई भी प्रति उपलब्ध नहीं होती है, आज तक इसकी एक भी ताडपत्रीय प्राचीन प्रति उपलब्ध नहीं हुई। पाटन, जैसलमेर जैसे प्राचीन भण्डारों में भी इसकी एक भी ताडपत्रीय या प्राचीनकाल की कागज की एक भी प्रति उपलब्ध नहीं हुई है। अतः क्या यह समझा जाये कि नन्दीसूत्र आदि में उल्लिखित प्राचीन अंगचूलिका और उवंगचूलिका (वग्ग चूलिया) आदि की प्राचीन विषयवस्तु विलुप्त हो

चुकी थी। मेरे विचार से अंग साहित्य के ग्रंथों में चूला रूप जो उल्लेख थे, जैसे आयारचूला, समवांयांगचूला आदि की विषय वस्तु इसमें रही होगी। उवंग चूलिया में उंपागों की चूलिकाएँ होंगी। बाद में इन चूलाओं को तद्तद् आगम में डाल देने से इसकी कोई आवश्यकता नहीं रही और वहाँ इसका विलोप कर दिया गया, और उसके स्थान पर लगभग 17 वीं या 18 वीं शती में स्थानकवासियों की आलोचना रूप यह नवीन विषयवस्तु उस विलोपित ग्रंथ में डाल दी गई है। वग्गचूलिया या उवंगचूलिया तो पूरी तरह से स्थानकवासी (बावीस टोला) सम्प्रदाय की आलोचना रूप ही है, उसमें उन्हें श्रुत की हीलना अर्थात् श्रुत की अवहेलना करने वाला बताया गया है।

प्रस्तुत वर्ग (वग्ग) चूलिका के पाठ निर्धारण हेतु आचार्य विजयकल्याणबोधि सूरीश्वरजी ने अत्यन्त परिश्रम करके उसकी अनेक प्रतियों का संग्रह एवं अध्ययन किया है, उनके द्वारा संगृहीत कुल 24 प्रतियों का उल्लेख हुआ है। उनके द्वारा प्रयोग में लाई गई प्रतियों में सर्वाधिक सात प्रतियाँ मोहनलाल जैन ज्ञान भण्डार, सूरत की हैं, तीन प्रतियाँ नेमीविज्ञान कस्तुरसूरि ज्ञान भण्डार, सूरत की हैं, दो प्रतियाँ देवसाहनोपाडो, अहमदाबाद की हैं। इसी तरह से दो प्रतियाँ ओरियन्टल इन्स्ट्टीयूट, बड़ौदा की हैं, दो प्रतियाँ कैलाशसागर सूरी ज्ञान भण्डार, कोबा की है और दो प्रतियाँ जयविजय ज्ञान भण्डार की हैं, इसके अतिरिक्त हेमचन्द्र ज्ञान भण्डार-पाटण, भाभा का पाडा-अहमदाबाद, विजयगच्छ ज्ञान भण्डार-राधनपुर, लालभाई दलपतभाई विद्या मन्दिर-अहमदाबाद, तपोवन ज्ञान भण्डार-नवसारी और हेमचन्द्र ज्ञान भण्डार-पाटण आदि की भी एक-एक प्रतियाँ हैं। इस प्रकार उन्होंने अति श्रम करके इस ग्रन्थ की मूल प्रतियों को एकत्रित किया है। मुझे भी एक प्रति बी.एल. इन्स्ट्टीयूट, दिल्ली से प्राप्त हुई। इन सब प्रतियों के लेखन संवत् का हमने विधिवत् अध्ययन किया है। इसमें 'देवसाहनोपाडो अहमदाबाद' की प्रति में संवत् 1699 का उल्लेख है, किन्तु इसमें यह बताया गया है कि संवत् 1699 में दुष्ट वणिजग्रह प्रारम्भ हुआ, इसके पश्चात् संवत् 1990 में 333 वर्ष का धूमकेतु नामक ग्रह लगा, इसके कारण जैनधर्म का शुभ समय नहीं रहा, किन्तु यह उल्लेख मात्र दुष्ट ग्रहों के लगने का है, जिसे इसे कृति का लेखन संवत् नहीं माना जा सकता है। किन्तु इससे यह निश्चित होता है कि यह कृति 1699 के बाद की है। इस सम्बन्ध में अन्य जो प्रतियाँ उपलब्ध हुई उनका कालक्रम इस प्रकार है- सबसे प्राचीन प्रति देवसागर लिखित 1721 की है, उसके बाद में संवत् 1854 की प्रति देवसागर लिखित 1721 की है, उसके बाद में संवत् 1854 की प्रति राधनपुर के विजय ज्ञान भण्डार की है। तपोवन ज्ञान भण्डार की प्रति भी 1858 की है, इसके अतिरिक्त नेमीविज्ञान सूरि, सिरोही की प्रतियाँ 1883 की है, हेमचन्द्र ज्ञान भण्डार पाटण

की प्रति भी 1856 की है और पालिताणा में लिखित एक प्रति 1849 की है, शेष प्रतियाँ 1925 की या उसके बाद की हैं जिन्हें अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं माना जा सकता है। जहाँ तक वर्गचूलिया (उवंगचूलिया) के अन्य आगम में निर्देश का प्रश्न है नन्दीसूत्र में और उसकी वृत्ति के 137 वें सूत्र में मिलता है। स्थानांगसूत्र, पाक्षिकसूत्र, व्यवहारसूत्र और महाकल्पसूत्र में भी वर्गचूलिका का उल्लेख हुआ है। इससे यह तो निश्चित है कि वर्गचूलिया या उवंगचूलिया नामक एक प्राचीन ग्रन्थ था। किन्तु वर्तमान में उपलब्ध प्रतियों के आधार पर ऐसा लगता है कि उसकी विषय वस्तु के लुप्त हो जाने पर उसके स्थान पर इस नयी विषय वस्तु को उस ग्रंथ में डाल दिया गया होगा। जैसा कि हमने पूर्व में उल्लेखित किया इस ग्रंथ की कोई भी प्रति 1721 के पूर्व की नहीं है। यदि यह ग्रंथ प्राचीन स्तर का होता तो इसकी प्राचीन प्रतियाँ भी उपलब्ध होनी चाहिए थी। उपलब्ध प्रतियों के संदर्भ में आचार्य विजयकल्याणबोधिसूरीश्वर जी ने जो सूचनाएँ दी हैं और जो मूल पाठ उपस्थित किए हैं उनसे ऐसा लगता है कि इस ग्रंथ की कोई भी प्राचीन हस्तप्रत उपलब्ध नहीं है। समस्त प्रतियों का जो संग्रह आचार्यश्री ने किया है, वह सब कागज की प्रतियाँ हैं, और संवत् 1699 के पश्चात् परवर्ती काल की हैं। इस ग्रंथ की एक भी हस्तप्रत न तो ताडपत्रीय है, न प्राचीन लिपि में उपलब्ध है। 16 वीं शताब्दी के पूर्व प्रायः आगमों में पड़ी मात्रा का प्रयोग होता था, इनमें से कोई भी प्रति पड़ी मात्रा में नहीं है। इससे हम इस निर्णय पर पहुँच सकते हैं कि यह ग्रंथ किसी आचार्य के द्वारा 17 वीं शताब्दी में बनाया गया होगा, और प्राचीन ग्रंथ के रूप में डाल दिया गया होगा। अतः इस ग्रंथ की प्राचीनता पर संदेह बना रहता है। जब तक इसकी कोई प्राचीन ताडपत्रीय प्रति 11 वीं 12 वीं शताब्दी की शैली में लिखी नहीं मिलती है, तब तक इस ग्रंथ को अति प्राचीन नहीं माना जा सकता है। इसमें प्रयुक्त 22 व्यक्तियों का उल्लेख यह बताता है कि जब स्थानकवासी परम्परा बावीस टोला के नाम से प्रसिद्ध थी तब ही इस ग्रंथ का निर्माण हुआ होगा, क्योंकि बावीस की संख्या का सम्बन्ध बावीस टोला अर्थात् स्थानकवासी परम्परा से भिन्न किसी अन्य सम्प्रदाय से नहीं हो सकता है स्थानकवासी परम्परा का यह नाम धर्मदासजी के 22 शिष्यों के आधार पर पड़ा था। अतः यह ग्रंथ यही सिद्ध करता है कि इसमें जो सूत्र की अवहेलना करने वाले जिन बावीस व्यक्तियों की चर्चा है वे स्थानकवासी परम्परा से सम्बद्ध रहे हुए होंगे। अतः यह ग्रंथ मूलतः अमूर्तिपूजकों की आलोचना से सम्बन्धित है। धर्मदासजी के 22 शिष्यों से इस परम्परा का नाम बावीस टोला हुआ। धर्मदासजी का काल विक्रम संवत् 1680 के आस-पास रहा है अतः ग्रंथ संवत् 1700 के आसपास बना होगा। इसकी प्राचीनतम प्रति सं. 1721 की है। यह सत्य है कि श्वेताम्बर परम्परा जिसमें स्थानकवासी और तेरापंथी दोनों

समाहित हैं, उसके आगमों यथा ज्ञाताधर्मकथांग, स्थानांग, समवायांग, जीवाजीवाभिगम, रायपसेणीय आदि में 'जिणपडिमा' (जिन प्रतिमा) के उल्लेख प्राप्त हैं। साथ ही उनमें सूर्याभदेव एवं द्रौपदी द्वारा जिनप्रतिमा के अर्चन के उल्लेख भी हैं। मात्र यही नहीं मौर्यकालीन (सम्प्रति के काल की) जिन प्रतिमाएँ लोहानीपुर (पटना) से प्राप्त भी हुई हैं और वे पटना म्यूजियम में आज भी सुरक्षित हैं, इससे यह निष्कर्ष भी निकलता है कि अशोक मौर्य के पश्चात् उसके पौत्र सम्प्रति के काल में जैनधर्म में जिनप्रतिमा के निर्माण और पूजन की परम्परा प्रचलित थी। उससे पूर्व की न तो जिनप्रतिमाएँ और न जैनों की विशिष्ट पूजन विधि का उल्लेख प्राप्त है यद्यपि जैन धर्म में प्रारम्भ में वंदन और स्तुति रूप पूजा प्रचलित रही होगी और बाद में द्रव्य पूजा प्रारम्भ हो गई होगी। शक्रस्तव सम्बन्धी आगमों में जो निर्देश उपलब्ध हैं वे स्तुतिरूप पूजा के ही हैं।

**इस ग्रन्थ की भाषा**

इस ग्रन्थ की भाषा पर विचार करने पर हम पाते हैं कि इस ग्रन्थ की भाषा परवर्तीकाल की महाराष्ट्री प्राकृत है, जिस पर कहीं-कहीं अपभ्रंश एवं पुरानी हिन्दी का प्रभाव भी देखा जाता है अतः स्पष्टतः यह ग्रंथ प्राचीन नहीं है और सतरहवीं शती के बाद का है। आगमों में चूंकि अंगचूलिया और वग्गचूलिया ये दोनों ग्रंथ अनुपलब्ध थे, अतः उनके स्थान पर इनकी विषय वस्तु को डाल दिया गया होगा। पुनः जब विशेष रूप से वग्ग (वंग) चूला की भाषा का प्रश्न है एक उदाहरण देखिये-वंगचूलिया तीरथ श्री ..... अनुं ग्रथी लेखीत। 'कामलयगणियं मीलेई' (पृ. 13) इसी प्रकार अग्निदत्त पुरुष को कभी स्त्रीलिंग और कभी पुल्लिंग में प्रयोग किया गया। जैसे- पृ. 13 अग्निदत्ता।

पुनः इस ग्रन्थ में श्रुत की अवहेलना करने वाले 22 पुरुषों का निर्देश है। लेखक ने 22 की संख्या को क्यों चुना- यह संख्या इससे कम या अधिक भी हो सकती थी। ज्ञातव्य है कि प्रारम्भ में यह अमूर्तिपूजक परम्परा मालवा एवं राजस्थान में वाबीस टोला के नाम से प्रसिद्ध थी। अतः इस ग्रन्थ में लेखक का इशारा उस युग की अमूर्तिपूजक परम्परा की ओर ही था। वे इसे श्रुत की अवहेलना करने वाली मानते थे, अतः उन्होंने अध्ययन का नाम भी श्रुत की अवहेलना करने वाले की उत्पत्ति, ऐसा दिया। प्राचीन ग्रन्थों में अध्यायों की संख्या प्रायः एक से अधिक होती थी जबकि यह ग्रन्थ एक ही अध्याय में समाप्त हो रहा है, पुनः प्राचीन स्तर के ग्रन्थों में विषय का वैविध्य होता था, जबकि इस ग्रन्थ में एक ही विषय प्रतिपादित है कि श्रुत की अवेहलना करने वाले कैसे-कैसे क्रम से विभिन्नयोनियों में भटकते हुए अंत में नरक गति के मेहमान बनते हैं।

## ग्रन्थ का नाम उवंगचूलिया या वग्गचूलिया

प्रस्तुत कृति का एक नाम वर्गचूलिका माना जाता है, किन्तु यह मान्यता भ्रान्त है। वर्ग का अर्थ अध्ययनों का समूह होता है जबकि प्रस्तुत कृति में एक ही अध्ययन है। अतः मेरी दृष्टि में मूल में ग्रन्थ का मूल नाम सुयहीलना उत्पत्ति था। कालांतर में इसे वग्गचूलिया कहा गया। पहले यह ठवंग उपांगचूला (उवंगचूला) थी और बाद में इसे वर्ग चूलिका मान लिया गया, क्योंकि अंग आगमों में अन्तगडदशा में वर्गों का उल्लेख है, अतः इसे वर्गों से सम्बन्धित मानकर वंगचूलिका या वग्गचूलिया कहा गया है।

वर्तमान में इस ग्रन्थ का नाम वर्गचूलिका प्रचलित है, किन्तु क्या यह नाम वास्तविक है, यह विचारणीय है। जहाँ तक प्राचीन स्तर के आगमों के मूलपाठों का प्रश्न है, उनमें इसके दो रूप मिलते हैं- 1. उवंग चूलियाओ और 2. वग्गचूलियाओ। उवंग चूलिया का एक अर्थ उपांग चूला भी होता है, अतः जैसे अंग चूला है वैसे ही इसका नाम उपांग चूला होना चाहिये। यहाँ उपांग शब्द में प्रारम्भ में 'उ' का लोप करके और संयोग में 'आ' का ह्रस्व करके तथा प का 'व' करके उवंग या वंग शब्द बनाया गया है। परन्तु कुछ आचार्यों ने र्ग में ग का द्वित्व मान करके 'वग्ग' शब्द माना है, प्राकृत के वग्ग का अर्थ वर्ग भी होता है, क्योंकि प्राकृत में संधि सवर्णीय होती है अतः वर्ग का वग्ग बनता है। हमारी समस्या यह है कि हम किस उचित अर्थ का ग्रहण करें? आचार्य कल्याणबोधिसूरीश्वरजी ने यहाँ उपांग का निरसन करके वर्ग अर्थ गृहीत किया है। किन्तु मेरी दृष्टि में आगमों में विशेष रूप से अन्तकृद्दशा में वर्ग की व्यवस्था है, अन्यत्र अंग साहित्य में प्रायः इस व्यवस्था का अभाव देखा जाता है, जबकि उपांगों की व्यवस्था प्राचीन है। अतः उवंग से उपांग का ही ग्रहण करना चाहिये। हम देखते हैं कि प्राचीन ग्रन्थों में इसका नाम 'उवंगचूला' ऐसा ही होगा। नेमिविज्ञानसूरि ज्ञान भण्डार की प्रति में वंग चूलिया ही पाठ है, मोहनलाल जी जैन ज्ञान भण्डार की एक प्रति में भी वंग पाठ है, जिसका तात्पर्य उपांग ही होगा।

प्राकृत में स्वर संधि में 'अ', 'आ', 'उ' आदि स्वरों का ह्रस्व या लोप होता है। जैसे- तथापि का तहवि। इस आधार पर उपांग का उवंग एवं वंग रूप बनता है। साथ ही प्राकृत के ध्वनि परिवर्तन में 'प' का 'व' होता है जैसे- पाप का पाव आदि। अतः 'उवंग' या वंग यह शब्द प्राकृत के नियमों के अनुसार उपांग का उवंग या वंग बनता है।

दूसरे जो वग्ग नाम है, उसका भी वंग बन सकता है क्योंकि संस्कृत शब्द वक्र का प्राकृत में वंक होता है, उसी नियम से वर्ग (वग्ग) का वंग भी बनेगा। इस प्रकार चाहे वह वंग हो या वग्ग हो, उसका भी मूल अर्थ उपांग ही होगा। क्योंकि उपांगों में भी चूलिकाएँ थीं। ये चूलिकाएँ आज के परिशिष्ट के समान ही छूटी हुई विषय वस्तु के तात्पर्य की सूचक

थीं। लेखक या परवर्ती आचार्यों को जो विषय उस आगम में जोडने लायक प्रतीत होता है उसे वे प्रथम परिशिष्ट में डाल दिया करते थे। बाद में उसे उस आगम की विषय वस्तु बना दिया जाता था, जैसे- आयारचूला का हुआ। प्रकीर्णक भी चूला रूप ही रहे थे। अत: यह मानना होगा कि वंग, उवंग या वंगचूला - उपांग चूला ही थी। मात्र अन्तकृद्दशा में 'वर्ग' शब्द देखकर वंग को वर्ग चूलिका मान लेना उचित नहीं है। वंग चूला का मूल सम्बन्ध उपांगों से रहा हुआ है। अत: इसे भी उवंगचूलिया ही होना चाहिए। श्वेताम्बर में जहाँ अंग चूलिका है वही दिगम्बरों में अंगपण्णत्ति ग्रन्थ आज भी है। पाटण हेमचन्द्र ज्ञान भण्डार की प्रति जो चन्द्रगणि द्वारा लिखित है उसमें उसका नाम वंग चूलिया ही है, क्योंकि उपांग के उ का लोप होकर उसका वंग नाम ही शेष रहता है। लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर की प्रति में भी वंग चूलियाए ऐसा पाठ ही मिला है, जयविजय ज्ञान भण्डार राधनपुर की प्रति में और सिरोही की दोनों प्रतो में 'वंगचूला' पाठ ही मिला है। इसी क्रम में देवसानो पाड़ो, अहमदाबाद की प्रति में भी वंग चूलिया ही पाठ मिलता है। जहाँ तक वंग या वग्ग पाठ का प्रश्न है, वह कम ही मिलता है पुन: वग्ग का संस्कृत रूप वर्ग मान लेना भी विवादास्पद ही है। उवंग या वंग रूप ही प्राचीन है और इस आधार पर इसे उपांग चूलिका मानना ही ज्यादा उपयुक्त है।

जहाँ तक वग्गचूलिका के नामोल्लेख का प्रश्न है, नंदी एवं नन्दीवृत्ति के अतिरिक्त कहीं नहीं है (137), स्थानांगसूत्र (10-175)पाक्षिकसूत्र, व्यवहारसूत्र (10.275) और अंगचूलिका में उसका उल्लेख मिलता है। किन्तु नन्दीसूत्र और उसकी वृत्ति को छोड़कर शेष आगमों - यथा पाक्षिकसूत्र, व्यवहारसूत्र मूल तथा अंगचूलिका में उसका नाम उवंग चूलिया ही मिलता है।

**वग्ग/वंग चूलिया की विषय वस्तु**

वर्ग चूलिका या उपांग चूलिका के प्रारम्भ में 12 गाथाएँ हैं और उसके बाद गद्य भाग है, इन 12 गाथाओं में प्रथम गाथा भगवान महावीर की वंदना रूप है, गाथा क्रमांक 2 से लेकर 6 तक पांच गाथाओं में महावीर की पाट परम्परा का उल्लेख है। इसमें भद्रबाहु के शिष्य, अग्निदत्त तक की पाट परम्परा बताई है, उसमें यह बताया गया है कि महावीर के बाद कौन आचार्य कितने काल तक रहे। महावीर के बीस वर्ष बाद तक सुधर्मा स्वामी पट्टधर रहे। सुधर्मा स्वामी के निर्वाण के पश्चात् चवांलीस (44) वर्ष तक जम्बू स्वामी पट्टधर रहे। उनके बाद ग्यारह वर्ष तक प्रभव स्वामी पट्टधर रहे। उनके पश्चात् तेवीस वर्ष तक स्वयम्भवस्वामी पट्टधर रहे। उनके बाद स्वयम्भव के शिष्य यशोभद्र पट्टधर हुए। स्वयम्भव विहार करते हुए श्रावस्ती नगर के कोष्ठक नामक उद्यान पहुँचे। वहाँ उनके

भद्रबाहु और सम्भूतिविजय ऐसे दो शिष्य हुए जो बारह अंगों के ज्ञाता थे। वे सदैव गुरु के समीप रह कर उनकी सेवा करते थे। इस गाथा में पासट्ठियाँ शब्द आया है, जिसका कल्याणबोधि सूरीश्वरजी ने समीप रहकर ऐसा अर्थ किया है जो उचित लगता है। उन भद्रबाहु का एक शिष्य अग्निदत्त था, जो मिथिला के लक्षिक नामक उद्यान में तप करता था। उस उद्यान में बाबीस गोष्ठिक पुरुष मंद्यमास का सेवन करते हुए कामलता वेश्या में अनुरक्त होकर विचरण करते थे। उन लोगों ने साधु को देखकर उसको मारने का विचार किया। वे निकृष्ट और अतिपापी, अति तीक्ष्ण शस्त्र हाथ में ग्रहण करके उस साधु के वध के लिए दौड़े। वे सभी मदांध होकर एक अंधकूप में गिरकर एक दूसरे पर शस्त्र से प्रहार करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए। मुनि इस घटना को देखकर उसके कारण का चिन्तन करने लगे- अरे! वे जिनधर्म का त्याग करके और वेश्या में आसक्त होकर, अकाल में ही मृत्यु को प्राप्त हुए। वे कहाँ उत्पन्न हुए होंगे?जब भद्रबाहु और सम्भूति विजय अपने गुरु यशोभद्र का कृत्यकर्म करके निवृत्त हुए तब अग्निदत्त नामक शिष्य हाथ जोड कर पूछने लगा- हे भगवन्! वे अधार्मिक बाबीस गोष्ठिल पुरुष (मित्र मण्डली) अकाल में मृत्यु को प्राप्त करके कहाँ उत्पन्न हुए और इस विश्व में किन-किन योनियों में उत्पन्न होंगे। वे बाबीस व्यक्ति दुर्लभबोधि से कब सुलभबोधि होंगे? कृपया प्रसन्न होकर हमारे संशय का निवारण करें। तब तुगियायण गोत्र वाले तीन ज्ञान से युक्त दृष्टिवाद के ज्ञाता यशोभद्रसूरि शुभोपयोग से युक्त होकर कहने लगे- वे बाबीस गोष्ठिल पुरुष गति उत्पाद नामक नाम कर्म के प्रभाव से इस संसार में परिभ्रमण करते हुए दुर्लभबोधि ही रहेंगे। वे अपने प्रशिष्य अग्निदत्त को ऐसा कहने लगे- हे अग्निदत्त! वे बाबीस गोष्ठिल पुरुष तुम्हारे बध के लिए दौडते हुए मद्य के वशीभूत होकर अंधकूप में गिर गये और परस्पर तीव्र शस्त्रों से एक दूसरे को छिन्न करते हुए पुनः कामलता की प्राप्ति के भाव रखकर मृत्यु को प्राप्त होकर, उसी कामलता वेश्या के स्तनों के नख से छिन्न हुए भाग में कृमि रूप में उत्पन्न हुए। यह उनका प्रथमभव था।

हे अग्निदत्त! उस कामलता नामक वेश्या ने कृमि योनि को प्राप्त उन गोष्ठिल पुरुषों के जीवो को प्राप्त कर उन बाबीस जीवों को अपने स्तन भाग से संक्रमित कर दिया, जिससे वे आकुल होकर घोर वेदना को प्राप्त हुए। उसके पश्चात् उस कामलता वेश्या ने अनेक विज्ञ चिकित्सकों से मंत्र, तंत्र, औषध आदि करवाई और उनमें से एक वैद्य ने शस्त्र से उसके स्तनों का विदारण करके उन बाबीस गोष्ठिल पुरुषों के जीवों को ,जो द्वीन्द्रिय जीवों के रूप में उत्पन्न हुए थे, का हरण करके जल से भरे पात्र में डाल दिया, वहाँ मासचर्म आदि की संधि को प्राप्त कर उन्हें थोड़ी सी समाधि प्राप्त हुई। उसके पश्चात् हे अग्निदत्त! उस कामलता वेश्या ने उन बाबीस कीटों को वहाँ भोजन आदि देकर उनकी पीड़ा को शांत

किया और तदनन्तर उस कामलता वेश्या ने उस वैद्य को विपुल भोजन एवं वस्त्र आदि देकर संतोषित करके विदा किया। उसके पश्चात् उस कामलता वेश्या ने अपनी पूर्व प्रीति के कारण यह मेरे हाथ से मरे नहीं, ऐसा विचार करके उनको मिथिला नगर के एक खण्डे में पड़े हुए एक सड़े हुए कुत्ते के पेट में डाल दिया, वहाँ वे कीट भूख प्यास आदि की पीडा को सहन करते हुए अन्त में मृत्यु को प्राप्त हुए। हे अग्निदत्त! उसके पश्चात् वे बाबीस कीट एकेन्द्रिय अवस्था को प्राप्त कर उत्पन्न हुए, वहाँ से मृत्यु को प्राप्त कर वे बाबीस जीव क्रमशः पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन एवं वनस्पति में जघन्य, मध्यम उत्कृष्ट और आयु की स्थिति को प्राप्त करते हुए परिभ्रमण करते रहे।

हे अग्निदत्त! उसके पश्चात् वे बाबीस जीव उस कामलता वेश्या के उदर में गिंडोले के रूप में उत्पन्न हुए, वहाँ से मृत्यु को प्राप्त करके उस कामलता वेश्या के मल-मूत्र आदि में उत्पन्न होते हुए वहाँ से काल करके वे बाबीस जीव द्वीन्द्रिय अवस्था को प्राप्त हुए। फिर द्वीन्द्रिय अवस्था के पश्चात् वे त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय बने और उस कामलता वेश्या के घर में विकलेन्द्रिय के रूप में सात बार यथाक्रम से उत्पन्न हुए। यहाँ तक उनके 29 भव हुए।

हे अग्निदत्त! वे बावीस गोष्ठिल पुरुष 30 वें भव में उस वेश्या के घर में मेंढक के रूप में उत्पन्न हुए। वहाँ की आयु पूर्ण होने पर वे 31 वें भव में उस कामलता वेश्या के घर में मूषक (चूहा) के रूप में उत्पन्न हुए और एक मास से कुछ कम की आयु प्राप्त की। 32 वें भव में उस वेश्या के द्वार के सामने सुअर के रूप में उत्पन्न हुए। वहाँ से मृत्यु को प्राप्त करके 33 वें भव में एक चांडाल के कुल में उत्पन्न हुए। वहाँ वे मल-मूत्र, विष्ठा आदि से युक्त एवं अनेक प्राणियों को मारकर उनका आहार करते रहे। नौ वर्ष की अवस्था में वहाँ से मृत्यु को प्राप्त होकर पुनः चांडाल के कुल में उसके पुत्र के रूप उत्पन्न हुए। उसके बाद वे बाबीस जीव अलग-अलग होकर चांडाल कुल में वृद्धि को प्राप्त करके हुण्डक संस्थान से युक्त होकर दीर्घ दाँत, लम्बा पेट आदि अदर्शनीय अवस्था को प्राप्त हुए।

इधर वह कामलता वेश्या भी वृद्धि को प्राप्त होकर अनेक प्रकार से धनी लोगों से वस्त्र आदि को प्राप्त करके भोजन आदि के लिए भिक्षा मांगने लगी। परिव्राजिका के रूप में अपने पूर्वबद्ध अनुराग के कारण मिथिला नगरी में ही रहने लगी। उसके पश्चात् वह कामलता वेश्या शुद्ध परिव्राजिका बन गई। फिर परिव्राजिका के रूप में सर्व तीर्थों को नमस्कार करने के भाव से काशी जनपद में और वहाँ से अपने गुरु को पूछकर अवन्तिका में शिप्रा नदी के किनारे परिव्राजिकाओं के साथ रहने लगी। वहाँ वह गेरुए वस्त्र पहनकर, त्रिदण्ड, कुडी, अंकुश, अक्षमाल आदि से युक्त होकर भ्रमण करने लगी। तत्पश्चात् वह कामलता वेश्या परिव्राजिका के रूप में शिप्रा नदी के किनारे समागत हुई। उस कामलता नामक वेश्या को

शिप्रा नदी के किनारे आया हुआ जानकर अवन्तिका जनपद के अनेक श्रेष्ठी सेनापति आदि उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष वहाँ यात्रा के लिए आने लगे। वहाँ वे बाबीस श्वपाक कुल में उत्पन्न वे बाबीस जीव भी यात्रा के लिए वहाँ आए। वह कामलता वेश्या परिव्राजिका के रूप में उन स्त्रियों एवं पुरुषों के समक्ष शौचमूलक धर्म का उपदेश देने लगी। वह बताती थी कि यह शौचमूलक धर्म दो प्रकार का है- द्रव्यशौच और बाह्यशौच। जल, मिट्टी आदि से स्नान करना द्रव्यशौच है और मंत्र आदि से युक्त होना यह बाह्यशौच है। जब भी हमें किसी प्रकार की अशुचि होती है, सम्पूर्ण शरीर को मिट्टी से लिप्त करके फिर उसे शुद्ध जल से साफ कर लेते हैं, उससे वह अशुचि भी शुचिरूप हो जाती है। इस प्रकार जल से अभिषेक करने पर परम पद की प्राप्ति होती है। तदनन्तर वे चांडाल कुल में उत्पन्न बाबीस जीव कामलता वेश्या को कहने लगे- ''आप से शौचधर्म को सुनकर हम शौचमूलक धर्म को ग्रहण करते हैं और प्रणाम करके अपने घर को लौट गए और वे शौचमूलक परिव्राजक धर्म के परमभक्त हुए। तदनन्तर वे बाबीस चांडाल मिथ्यादर्शन को धारण करके अन्य धर्मों की ओर अग्रसर हुए। उसके पश्चात् वे बाबीस चांडाल शेष पांचों दर्शनों को क्रमशः प्राप्त करते हुए जिनमार्ग को प्राप्त हुए और उसमें श्रद्धा को प्राप्त करके भी जिनचैत्यों का अवर्णवाद और निंदा करने लगे। तत्पश्चात् वे बावीस चांडाल कुल में उत्पन्न परिव्राजक धर्म में अनुरक्त जैन धर्म की निन्दा करने वाले भोजन के हेतु आमत्रंण को प्राप्त करके मात्र दाल का भोजन करने से 5 वर्ष तक परिव्राजक अवस्था में रहकर आयु का क्षय होने पर अवन्तिका में 34 वें भव में भण्डक कुल में उत्पन्न हुए। वे बावीस भण्डक क्रमशः वृद्धि को प्राप्त करके अनेक श्रेष्ठियों, अमात्यों एवं नरपति आदि को विट चेष्टा के द्वारा उनका मनोरंजन करने लगे। किसी दिन वे कुशस्थल नगर के ब्रह्मदीप राजा के समक्ष अन्यों की हंसी उड़ाते हुए दुष्ट चेष्टा से उपदेश देने लगे। वहाँ तेले के तप के उपवास से युक्त दो साधु भोजन प्राप्त करने के लिए भिक्षार्थ आए, उस समय वे बाबीस भण्डक कलरव करते हुए अर्थात् कोलाहल करते हुए भाग गए और उन मुनियों की निंदा करने लगे। वहाँ वे साधु युगल मौनव्रत का अवलम्बन कर रहे। हे अग्निदत्त! वे बावीस भण्डक कुल में उत्पन्न 35 वें भव में अनेक कुलों में चौदह विद्याओ में पारगंत होकर ब्राह्मणों के घर में उत्पन्न हुए वे अपने वंशानुगत धर्मशास्त्र पुराण आदि चतुर्दश विद्याओं के धारक हुए। हे अग्निदत्त! वहाँ वे ब्राह्मण द्वारा प्राप्त आमत्रंण से, यज्ञ वाटिका के द्वार बन्द होने से खड़े रहे, यज्ञ वाटिका में कुडछी से यज्ञ में घी डालने से भयंकर अग्नि उत्पन्न हुई, उस अग्नि से प्यास से तृषित कंठ वाले वे मृत्यु को प्राप्त होकर शिप्रा नदी के एक कुण्ड में मछली के रूप में उत्पन्न हुए। इसके बाद सात भव जलचर के रूप में नौ भव खेचर के रूप में करके ग्यारह भव स्थलचर के रूप में करेंगे।

इस प्रकार 62 भव करके वे अन्तिम भव में मृग के रूप में उत्पन्न होंगे वे बाबीस मृग वृद्धि को प्राप्त करके वहाँ से 63 वें भव में मध्यदेश में श्रावक कुल में उत्पन्न होंगे। वणिक कुल में उत्पन्न वे बाबीस जीव बाल्य अवस्था के समाप्त होने पर बुद्धि को प्राप्त करके दुष्ट, भ्रष्ट, दूषित और दूसरे की निन्दा करने वाले होंगे। वहाँ वे जिनमार्ग की निन्दा करने वाले, देवगुरु के निन्दक, जिनमार्ग के विपरीत प्रज्ञापना करने वाले जिन प्रतिमा के निन्दक, चैत्य, तीर्थ और साधु-साध्वी का उपस्थापन करने वाले होंगे। वहाँ से मृत्यु को प्राप्त होकर वे पुनः वणिक् कुल में उत्पन्न होंगे।

हे अग्निदत्त! वह कामलता परिव्राजिका भी 78 वर्ष गृहवास में रहकर और 16 वर्ष तक परिव्राजिका के रूप में धर्म में अनुरक्त रहते हुए 94 वर्ष की सर्व आयु को प्राप्त करके एवं सात दिन-रात का अनशन करके मृत्यु को प्राप्त हुई और वहाँ से मृत्यु को प्राप्त होकर वाणव्यंतरी के रूप में सुवाच्छा नामक देवी के रूप में उत्पन्न हुई। वह सुवाच्छा व्यन्तरी एवं बद्ध अनुराग के कारण उन बाबीस गोष्ठिल पुरुषों को वणिक कुल में उत्पन्न देखकर प्रसन्न हुई और पूर्वभव की परम प्रीति के कारण उन्हें सहायता करने लगी। हे अग्निदत्त! वे बाबीस वणिक् उस व्यन्तरी के सहयोग से धन-धान्य और पुत्र आदि से युक्त होकर सत्कार भाव के उदय से वृद्धि को प्राप्त हुए। तत्पश्चात् वे वणिक् कुल में उत्पन्न बाबीस जीव प्राप्त धन-धान्य के कारण लोक में अपनी प्रशंसा करने लगे। वे कहने लगे हमारा धर्म सत्य है और परमार्थ प्राप्त कराने वाला है, शेष सभी अनर्थ है। हे मनुष्यों! देखो हमारे धर्म के प्रभाव से हम इस लोक में विपुल धन-धान्य से युक्त हैं और उसके परलोक के फल का तो कहना ही क्या। तुम भी हमारे धर्म को ग्रहण करो। इस प्रकार हे अग्निदत्त! वे बाबीस श्रावक धर्म से पथभ्रष्ट होकर छहों दर्शनों के मध्य एक-एक भव ग्रहण करेंगे। इस प्रकार असंख्य काल तक दुर्लभ बोधि को प्राप्त होंगे।

हे अग्निदत्त! वे बाबीस वणिक् के जीव भी 15 वर्ष तक अन्त में परिव्राजक होंगे। इस प्रकार 99 वर्ष की अवस्था को प्राप्त करके 16 रोगों से युक्त होकर अन्त में भ्रांत रूप में मृत्यु को प्राप्त होंगे। वे प्रथम नरक में 10 हजार वर्ष की आयु वाले नारकीय जीव होंगे, तदनन्तर मिथ्या भाव से युक्त होकर नाना प्रकार की योनियों में परिभ्रमण करते रहेंगे। किन्तु यहाँ भी श्रुत की अवहेलना करने के कारण दुर्लभबोधि को प्राप्त होंगे। अन्त में उस अग्निदत्त नामक साधु ने गुरु से पूछा कि यह श्रुत की अवहेलना कब तक रहेगी। उसके प्रत्युत्तर में यशोभद्रसूरि ने अग्निदत्त को कहा- "हे महाभाग! तू सुन। यह श्रुत की अवहेलना कब तक रहेगी? भगवान महावीर के निर्वाण प्राप्त होने के 219 वर्ष पश्चात् सम्प्रति नामक नृप उत्पन्न होगा वह जिनप्रतिमाओं की स्थापना करेगा। उसके 1699 वर्ष बाद दुष्ट वणिक ग्रह के

प्रभाव से लोग श्रुत की अवमानना करेंगे।. उस समय हे अग्निदत्त! वे बाबीस वणिक् जन भी श्रुत की अवेहलना करेंगे। उस समय संघ की श्रुत राशि पर 38 वाँ दुष्ट धुमकेतु नामक ग्रह लगेगा। उसकी स्थिति 333 वर्ष तक एक राशि पर रहेगी। उसके पश्चात् उसके मीन राशि में प्रवेश करने पर संघ के श्रुत का उदय होगा। फिर अपने गुरु भद्रबाहु और सम्भूति विजय से पूछकर के वह अग्निदत्त संलेखना को प्राप्त हुआ और उसके प्रभाव से प्रथम कल्प के देवता के रूप में उत्पन्न हुआ। श्रुत की अवहेलना के फल को जानकर यशोभद्र एवं अन्य भी जिनवचन के प्रति दृढ़चित्त वाले हुए।

**उपसंहार**

प्रस्तुतकृति के अवलोकन से यह सिद्ध होता है कि यह कृति नन्दीसूत्र में उल्लिखित अंगचूलिका की विषय वस्तु को वहाँ से हटा दिए जाने के पश्चात् सन् 1700 के आस-पास स्थानकवासियों के विरोध में लिखी गई है। मूल कृति की प्राकृत भाषा भी प्राचीन प्राकृत नहीं है तथा परवर्तीकालीन महाराष्ट्री प्राकृत भी शुद्ध नहीं है। अनेक ऐसे शब्द रूप है जिन्हें हम महाराष्ट्री प्राकृत का भी नहीं कह सकते हैं। उवंगचूलिका नामक इस कृति को देखने से ऐसा लगता है कि इस कृति की विषय वस्तु महाराष्ट्री प्राकृत के सम्यक् ज्ञाता के द्वारा भी नही लिखी गई और इसमें उनके विसगतियाँ हैं। जैसे प्रारम्भ में जिसकी जिज्ञासा से इस कृति की रचना हुई उसे पहले पुरुष अग्निदत्त और बाद में स्त्री अग्निदत्ता कहकर स्त्रीवाचक बना दिया गया। इसी प्रकार पहले उन बाबीस कीटों को वेश्या के द्वारा संक्रमित करने का लिखा है और बाद में उन्हें वैद्य द्वारा उसके स्तनों का विदारण करके निकाला जाना इस प्रकार के क्रम की विसंगतियाँ अन्यत्र भी एक दो जगह हैं। पुन: वेश्या में आसक्त उन पुरुषों की संख्या को बाबीस बताया गया है। यह भी उस युग में जब स्थानकवासी परम्परा मालवा और राजस्थान में बाबीस टोला के नाम से जानी जाती थी। उसी आधार पर उन बाबीस व्यक्तियों की संख्या का निर्धारण किया गया और चूंकि मूर्तिपूजक परम्परा स्थानकवासियों को श्रुत की अवहेलना करने वाले मानते हैं, अत: इस अध्याय का नाम भी श्रुतहीलना कहा गया है। इस प्रकार गम्भीरता पूर्वक अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि यह कृति परवर्तीकालीन है और उसके लेखक भी प्राकृत के गम्भीर अध्येता नहीं हैं। अत: यह भी स्थानकवासी परम्परा के विरोध में लिखकर कालान्तर में डाली गई है। स्थानकवासी परम्परा का प्रादुर्भाव संवत् 1531 के पश्चात् माना जाता है, किन्तु इस कृति में उनकी संख्या बाबीस माने जाने से यह निश्चित होता है कि जब स्थानकवासी परम्परा को बाबीस टोला के नाम से जाना जाता था। उसके पश्चात् भी इसकी रचना हुई होगी। इस प्रकार हम इस निश्चय पर पहुँचते हैं कि यह एक परवर्ती रचना है जो संवत् 1600 के

पश्चात् और 1721 के पूर्व लिखी गई है। स्थानकवासी परम्परा का बाबीस टोला के रूप में प्रादुर्भाव आचार्य धर्मदासजी के शिष्यों के माध्यम से हुआ और इसी परम्परा ने मूर्तिपूजा का घोर विरोध किया। अतः किसी मूर्तिपूजक आचार्य ने इसे लिखकर बाद में डाला। यह ग्रन्थ मुद्रित होकर अभी पहली बार ही प्रकाश में आया है, किन्तु इसके मध्य वह हस्तलिखित रूप में ही चलता रहा है। इसकी जो हस्तप्रतियाँ विपुल मात्रा में प्राप्त होती हैं, वे यह सूचित करती हैं कि मूर्तिपूजक परम्परा में इस ग्रन्थ का पर्याप्त प्रचलन रहा था।

*-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर, (मध्यप्रदेश)*

## स्वाध्यायी के लिए आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के सभी स्वाध्यायी भाई-बहनों से निवेदन है कि वे जिनवाणी पत्रिका में प्रकाशित स्वाध्यायी परिचय-पत्र को पूर्ण भरकर शीघ्र ही स्वाध्याय संघ कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) में प्रेषित करावें जिससे सभी स्वाध्यायी भाई-बहनों का परिचय-पत्र एवं निदेशिका तैयार की जा सके। कुछ क्षेत्रों के स्वाध्यायी भाई-बहनों के परिचय-पत्र प्राप्त हो चुके हैं। उन्हें यह परिचय-पत्र भरने की आवश्यकता नहीं है। परिचय-पत्र आप **31 दिसम्बर 2016** तक भिजवा देवें। उसके पश्चात् प्राप्त परिचय-पत्र स्वीकार नहीं होंगे। *-गोपालराज अबानी, सचिव*

## स्वाध्यायी परिचय-पत्र

**स्वाध्यायी का नाम:** ..........................................

**पिता/पति का नाम:** ..........................................

**स्थानीय पता:** ..........................................

..........................................

.......................................... **पिनकोड:** ............

**जन्म तिथि:** ..........................................

**फोन नम्बर:** .................... **मोबाइल नम्बर:** ....................

**ईमेल:** ..........................................

**अन्य जानकारी:** ..........................................

..........................................

..........................................

**नोटः**- स्वाध्यायी अपने व्हाट्सएप नम्बर एवं अन्य जानकारी अवश्य लिखें।

आरोग्य

# जीवनशैली और आरोग्य

*श्री पी. शिखरमल सुराणा*

33. रोगों के आक्रमण से बचने के लिए लोग टीका, इंजेक्शन लगवाते हैं, चूहे व मच्छरों के प्राण हरण करते हैं, घर-गली में दवा का छिड़काव करते हैं। सच तो यह है कि टीका, इंजेक्शन आदि हमें रोगों से न बचाकर अधिक रोगी बना रहे हैं और चूहे व मच्छर मारकर शायद ही कोई नीरोग रहा हो।
34. प्राकृतिक वातावरण में रहने वाले जानवरों के जीवन पर दृष्टि डालिये कि वे क्यों नीरोग रहते हैं? इसीलिए कि वे स्वाभाविक आहार पर रहते हैं, उनका रहन-सहन नैसर्गिक है और वे कोई भी दवा-दारू नहीं लेते।
35. मैदा, सफेद चीनी, रोटी-नमक, तेज मसाले आदि पदार्थ शरीर को गन्दा कर डालते हैं। वे आँतों में सड़ने लग जाते हैं।
36. जिन्हें अपना स्वास्थ्य बनाये रखने की इच्छा हो उन्हें चाहिए कि समय-समय पर उपवास करते रहें। एक समय दाल-रोटी और दूसरे समय तरकारी व फल आदि लेना ठीक है।
37. बारीक आटे की चुपड़ी रोटी बड़ी ही गरिष्ठ, हानिकर, रोग पैदा करने वाली होती है और पेट में जाकर बैठ जाती है। अतः रोटी हमेशा गेहूँ, जौ, बाजरे, मोटे आटे की, बिना छने चोकरदार आटे की होनी चाहिए।
38. भोजन के पाचन के लिए शारीरिक श्रम भी आवश्यक होता है, अतः अपना कार्य जहाँ तक सम्भव हो अपने हाथ से करें। प्रातः भ्रमण, व्यायाम एवं प्राणायाम भी स्वस्थ रहने में सहयोगी हैं।
39. रुग्णता की थोड़ी आकांक्षा या प्रारम्भिक अवस्था में ऐलोपेथी-दवाई लेने से बचें और प्रकृति के अचूक निर्दोष उपचारों द्वारा अपनी व्याधियाँ स्वयं मिटाने की चेष्टा करें।
40. शरीर की जो आवश्यकताएँ हैं, उन्हें वही जानता है और सब बातें अन्तःकरण स्वयं साफ बता देता है। हमें शरीर को सभी प्रकार के गुणों वाली स्वाभाविक खुराक देनी चाहिए, जिससे शरीर अपनी देखरेख स्वयं कर सकेगा। **(क्रमशः)**

*-राष्ट्रीय अध्यक्ष : अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (जोधपुर)*
*इंटरनेशनलज लॉ सेंटर, 61-63, डॉ. राधाकृष्णन रोड़, मैलापुर, चेन्नई-600004*

शोधालेख

# निःशस्त्रीकरण : बनाम पर्यावरण संरक्षण

## (आगम-साहित्य के सन्दर्भ में)

*डॉ. तारा डागा*

प्रत्येक राष्ट्र शस्त्रीकरण की प्रवृत्ति में अग्रसर है। विकास के नाम पर अर्थ का एक बड़ा भाग शस्त्रीकरण पर खर्च हो जाता है। आज न केवल आणविक शस्त्रों का निर्माण हो रहा है अपितु अरबों-खरबों डॉलर के अस्त्र-शस्त्रों का क्रय-विक्रय भी हो रहा है। यही नहीं अनेक स्थानों पर तो शस्त्र प्रयोग का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। युद्ध अभ्यास, युद्ध, आतंकवादी प्रशिक्षण प्रक्रिया के साथ-साथ परमाणु उत्पादन केन्द्रों पर नाभिकीय विस्फोट किए जाते हैं। इन सब प्रक्रियाओं में प्रोटोन, इलेक्ट्रोन के साथ-साथ न्यूट्रोन तथा अल्फा एवं बीटा कण प्रवाहित होते हैं। इनसे विस्फोट के समय उस स्थान का तापक्रम इतना बढ़ जाता है कि रेडियोधर्मी पदार्थ वायु-मण्डल की बाह्य सतह में प्रवेश कर जाते हैं, जो बाद में धूल कणों या संघत होकर बूंदों के रूप में सारे पर्यावरण में फैल जाते हैं। इससे जल, वायु तथा भूमि तो प्रदूषित होती ही है, साथ ही ये वनस्पति तथा जीव-जन्तुओं के शरीर में प्रवेश कर जैवविविधता के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा कर देते हैं। इनका दूरगामी परिणाम जीन व गुणसूत्रों के लक्षणों में परिवर्तन, सिर के बालों का गिरना, रक्त की कमी, गर्भाशय में गर्भ के गिरना, बच्चों का अपंग पैदा होना तथा कैंसर जैसे घातक रोगों के रूप में सामने आता है।[1]

इस प्रकार आणविक एवं रासायनिक शस्त्रों के निर्माण ने न केवल प्रकृति की व्यवस्था में बाधा डाली है, अपितु संपूर्ण धरा को उसमें रहने वाले जीव-जगत तथा वनस्पति जगत को विनाश की कगार पर खड़ा कर दिया है। विभिन्न स्तरों पर होने वाले इनके प्रयोगों से सारा पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ता जा रहा है। फिर भी शस्त्र-निर्माण की दौड़ में आज सारा विश्व लगा हुआ है। शस्त्रों की होड़ा-होड़ी इसी प्रकार चलती रही तो मानव उपयोगी समग्र पर्यावरण असंतुलित हो जायेगा और सारी मानव सभ्यता नष्ट हो जायेगी। इसका उदाहरण द्वितीय विश्व युद्ध के समय सारा विश्व देख चुका है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु हमलों के बाद प्रलय का जो तांडव हुआ उसके भयावह परिणामों ने सारे विश्व को चिन्ता में डाल दिया। सभी दिग्गज राजनेताओं द्वारा आणविक शस्त्रों के प्रयोग की गहरी भर्त्सना की गई। महात्मा गाँधी के शब्दों में 'मैं

आणविक शस्त्र के माध्यम से पुरुष, महिलाओं एवं बच्चों की सामूहिक हत्या को विज्ञान का सबसे निन्दनीय प्रयोग मानता हूँ।[2] स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू उन गिने चुने लोगों में से थे, जो 1945-46 के परमाणु बम विस्फोट की घटना के पश्चात् इस सत्य के पक्षधर रहे कि रेडियाधर्मी विकिरण वायुमण्डल को प्रदूषित कर आने वाली पीढ़ियों के जीवन में जहर घोल सकती है। स्वयं जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में- 'एक आणविक युग न तो विजय की सम्भावना को प्रस्तुत करता है और न ही हार को, बल्कि यह तो केवल सम्पूर्ण विध्वंस की सम्भावना ही प्रस्तुत करता है।'[3]

इन घटनाओं के पश्चात् से ही विश्व के सभी राष्ट्र इस बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि सैनिक व युद्ध के उद्देश्यों के लिए रासायनिक व आणविक हथियार पूर्णतः प्रतिबंधित होने चाहिए। यहीं से निःशस्त्रीकरण की प्रक्रिया का जन्म हुआ। भारत सहित विश्व के अन्य कई राष्ट्रों की इस दिशा में सकारात्मक सोच के परिणामस्वरूप निःशस्त्रीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। निःशस्त्रीकरण हेतु विभिन्न राष्ट्रों द्वारा किये गये कुछ प्रयास द्रष्टव्य हैं[4]-

सन् 1946 में अमेरिका के प्रमुख प्रतिनिधि बनार्ड वरूच द्वारा भविष्य में शांतिपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति हेतु आणविक ऊर्जा के प्रयोग की सम्भावना को देखते हुए एक योजना की प्रस्तुति, सन् 1955 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोग से संबंधित जेनेवा में एक विश्वस्तरीय सम्मलेन, सन् 1962 भारत द्वारा अन्य गुट निरपेक्ष देशों के साथ मिलकर 18 राष्ट्रीय निःशस्त्रीकरण समिति का निर्माण सन् 1963 में मास्को में तीन आणविक शक्ति सम्पन्न देशों के विदेश मंत्रियों द्वारा वातावरण, अंतरिक्ष एवं जल में आणविक शस्त्रों के परीक्षण पर अवरोध के लिए निर्मित संधि-पत्र पर संयुक्त राष्ट्र संघ के सचिव की उपस्थिति में हस्ताक्षर, सन् 1968 में आणविक परीक्षण आंशिक रूप से बंद करने के लिए रूस और अमेरिका के बीच अणु प्रसार निषेध संधि, सन् 1982 में श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा संयुक्त राष्ट्र के विशेष सत्र में निःशस्त्रीकरण हेतु एक पंचसूत्रीय प्रस्ताव का प्रस्तुतीकरण, नवम्बर 1986 में राजीव गाँधी एवं सोवियत नेता गोर्बाच्योव के मध्य आणविक शस्त्र मुक्त एवं अहिंसामय विश्व के निर्माण हेतु दस सूत्रीय कार्यक्रम वाले घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर आदि प्रयासों से विश्व भर में सर्वत्र निःशस्त्रीकरण की गूंज सुनाई देने लगी है। बड़े आश्चर्य की बात है कि शस्त्रीकरण की भयावह परिणति ने निःशस्त्रीकरण के अभियान को जन्म दिया।

इसके पश्चात् भी लगातार इस दिशा में प्रयास होते रहे, लेकिन आणविक शस्त्रों की समाप्ति की संधियाँ सैद्धांतिक रूप में ही लागू हुई। सन् 2006 में उत्तरी कोरिया द्वारा परमाणु

बम के निर्माण एवं उसकी शक्ति के आह्वान के साथ ही निःशस्त्रीकरण की प्रक्रिया दिवास्वप्न ही प्रतीत होने लगी। वस्तुतः राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा तथा शांतिपूर्ण कार्यक्रम के लिए आणविक ऊर्जा के प्रयोग हेतु आणविक शस्त्रों के विकल्प को सभी राष्ट्र सुरक्षित रखना चाहते हैं। कहने का तात्पर्य है कि दोहरी नीति के तहत एक ओर अपनी सम्प्रभुता को स्थापित करने की दौड़ में सभी राष्ट्र अपनी आणविक शस्त्र सीमा बढ़ाना चाहते हैं, वहीं दूसरी ओर उनकी यह नीति रहती है कि दूसरे कमजोर राष्ट्र आणविक क्षमता कम करें। इस प्रकार आत्मतुला, मित्रता, अभय जैसे सद्गुणों के अभाव में निःशस्त्रीकरण के स्वर धीरे-धीरे धीमे पड़ने लगे। यहाँ आगम-साहित्य के सन्दर्भ में निःशस्त्रीकरण के स्वरूप एवं उसके क्रियान्वयन के विकल्पों की चर्चा की जा रही है।

अहिंसा के पुरस्कर्ता तीर्थंकर महावीर इस तथ्य से भली-भांति परिचित थे कि कुछ प्रेक्षेपास्त्रों के निषेध से निःशस्त्रीकरण की बात नहीं बनेगी, क्योंकि किसी भी प्रकार के शस्त्रीकरण की प्रवृत्ति चाहे द्रव्यशस्त्र हो या भावशस्त्र मानवता के गहन विनाश का कारण बन सकती है। जैसा कि उन्होंने आचारांगसूत्र[5] में कहा है-

**एस खलु गंथे-** शस्त्रीकरण की प्रवृत्ति ग्रन्थि है।

**एस खलु मोहे-** यह मोह है।

**एस खलु मारे-** यह मृत्यु है।

**एस खलु णरए-** यह नरक है।

**तं से अहियाए-** शस्त्रीकरण की प्रवृति मनुष्य के लिए अहितकर है।

**तं से अबोहीए-** यह प्रवृत्ति विवेक का विनाश करने वाली है।

शस्त्रीकरण के उक्त भयानक परिणामों से परिचित आगम प्रणेता भगवान महावीर ने ढाई हजार वर्ष पहले निःशस्त्रीकरण की बात कही। आचारांगसूत्र में वे कहते हैं- 'अत्थि सत्थं परेण परं, णत्थि असत्थं परेण परं' (आचारांगभाष्यम्, 3.4.82) अर्थात् शस्त्र एक से बढ़कर एक हो सकता है अशस्त्र से बढ़कर कुछ नहीं। उत्तराध्ययनसूत्र[6] में कहा है- जो भी जगत के आश्रित त्रस और स्थावर जीव हैं उनके प्रति मन, वचन एवं काया से किसी प्रकार के दण्ड का प्रयोग न करें। महावीर के अनुसार निःशस्त्रीकरण कायरों का मार्ग नहीं है। जो वीर है वही इस मार्ग पर आगे बढ़ते हैं।[7] इसे आज की भाषा में निःशस्त्रीकरण का प्रथम आह्वान कहा जा सकता है।

आणविक शस्त्रीकरण पर्यावरण के सर्वाधिक विनाश का कारण है। यदि हम पारिस्थितिकीय संतुलन व पर्यावरणीय संवर्द्धन को प्राप्त करना चाहते हैं तो आवश्यक है

कि आणविक एवं रासायनिक शस्त्रों का निर्माण, व्यापार व उनका प्रयोग करना, करवाना अथवा करवाने वाले राष्ट्रों का समर्थन आदि क्रियाओं को प्रतिबंधित करें। आगम ग्रन्थों में न केवल शस्त्र निर्माण का निषेध किया गया है अपितु शस्त्र का निर्माण न हो इस संदर्भ में आगम परम्परा में गृहस्थ की व्रताचार संहिता में नियमों का विधान किया गया है। उपासकदशांगसूत्र के अनुसार धर्म, अर्थ एवं काम के प्रयोजन के बिना जो भी हिंसा होती है उसका समावेश अनर्थदण्ड के अन्तर्गत किया गया है। इस व्रत को धारण करने वाला गृहस्थ किसी भी प्रकार की निष्प्रयोजन हिंसा का त्याग करता है। आगम प्रणेता महावीर ने निःशस्त्रीकरण हेतु उपासकदशांगसूत्र[8] अनर्थदण्डव्रत के माध्यम से सामान्य व्यक्ति के लिए निम्न क्रियाओं का निषेध किया-

1. **हिंसप्पयाणे**- हिंसक शस्त्रों का निर्माण करना। आचार्य अभयदेव सूरी के अनुसार जिनसे हिंसा होती है उन अस्त्र, शस्त्र, आग, विष आदि हिंसा के साधनों को क्रोधाविष्ट या क्रोधावेश से युक्त व्यक्ति के हाथों में देना हिंसाप्रदान है।
2. **संजुत्ताहिकरणे**- हिंसामूलक शस्त्रों का संयोजन करना।
3. **पावकम्मोवदेसे**- हिंसा हेतु अस्त्र-शस्त्रों का प्रशिक्षण देना, प्रेरणा देना अथवा हिंसक कार्य करने के लिए किसी को उत्तेजित करना।

श्रावकाचार के उक्त तीनों निर्देश निःशस्त्रीकरण की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। श्रावक व्रतों को धारण करने वाला स्वयं शस्त्र का निर्माण नहीं कर सकता है, न उनका संयोजन कर सकता है, न ही हिंसक शस्त्रों का क्रय-विक्रय कर सकता है। इस प्रकार शस्त्र-निर्माण एवं शस्त्र-व्यापार के सम्बन्ध में उपासकदशांगसूत्र में गृहस्थ के लिए दी गई यह आचार-संहिता निःशस्त्रीकरण के क्षेत्र में उस समय भी उपादेय थी और आज भी उतनी ही उपादेय है।

यहाँ एक प्रश्न विचारणीय है कि विभिन्न राष्ट्रों द्वारा अथक प्रयासों के बाद भी निःशस्त्रीकरण के प्रयास असफल क्यों रहे? संभवतः इसका कारण यही रहा कि उन्होंने शस्त्रीकरण की समस्या का समाधान शस्त्र निर्माण के मूल कारणों में नहीं खोजा। इस दिशा में आगमिक दृष्टि अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है। आगम प्रणेताओं ने शस्त्रीकरण की प्रवृत्तियों के मूल कारणों को समझा और उनके समाधान के प्रयास किए।

आगम प्रणेताओं के अनुसार शस्त्र-निर्माण के मूल में एक ही कारण है- असंयम। असंयम ही अनन्त इच्छाओं और आकांक्षाओं को जन्म देकर भय, तृष्णा एवं प्रभुता का कारण बनता है जिसके तहत व्यक्ति शस्त्र-निर्माण एवं उसके प्रयोग में जुट जाता है।

अनन्त इच्छाओं और असीम आकांक्षाओं को कहीं तो विराम देना होगा। इच्छाओं का संयम ही निःशस्त्रीकरण का सम्यक् दर्शन है। यदि इच्छाओं पर संयम रखकर आवश्यकता पूर्ति का दर्शन विकसित किया जाए तो शस्त्रीकरण की संभावना को कम किया जा सकता है। जैसा कि आचारांगसूत्र[9] में कहा है- जो स्वेच्छाचारी एवं विषयासक्त होते हैं वे आरंभ (हिंसा) में नए-नए बंधनों (राग-द्वेष) को जन्म देते हैं जबकि संयमी के लिए पापकर्म अकरणीय है। आंकाक्षाओं को खुली छूट देकर तो निःशस्त्रीकरण की बात कोरी कल्पना ही होगी। आगम साहित्य में इच्छाओं पर संयम हेतु श्रमणाचार संहिता में अपरिग्रह व्रत तथा गृहस्थ की व्रताचार संहिता में इच्छा परिमाण, उपभोग-परिभोग परिमाण तथा दिशा-परिमाण आदि व्रतों का विधान किया गया है।[10]

यह एक बात ध्यान देने योग्य है कि भावात्मक शस्त्रों का निःशस्त्रीकरण किये बिना पत्थर, तलवार, बन्दूक या परमाणु बम जैसे द्रव्य शस्त्रों का निःशस्त्रीकरण संभव नहीं है। सभ्यता के प्रारम्भिक काल से लेकर वर्तमान परमाणु युग तक जितने भी अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण हुआ, उनकी पृष्ठभूमि में उतने ही भाव निर्मित हुए होंगे। आगम प्रणेता महावीर इस तथ्य से भलीभाँति परिचित थे। स्थानांगसूत्र[11] में उन्होंने अग्नि, विष, लवण, स्नेह, क्षार तथा अम्ल को द्रव्यशस्त्र तथा दुष्प्रयुक्त मन, वचन, काया तथा अविरति को भावशस्त्र कहा। आचारांगनिर्युक्ति[12] में भी शस्त्र की परिभाषा देते हुए कहा है- सभी मारक पदार्थ द्रव्यशस्त्र हैं। असंयम भावशस्त्र है। इस सम्बन्ध में जैन आचार्यों ने लिखा है- भगवान् ने प्रस्तर, लौह आदि धातुओं से बने शस्त्रों को शस्त्र की परिगणना में दूसरा स्थान दिया। उनकी भाषा में पहला स्थान है- शस्त्र के निर्माण के लिए क्रियाशील भाव का तथा उस अविरति या आकांक्षा का, जो धातु-शस्त्रों के निर्माण की मूलभूत प्रेरणा है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा उद्घोषित स्वर है- युद्ध पहले मनुष्य के मस्तिष्क में लड़ा जाता है, फिर समरांगण में उसी भाव-शस्त्र के स्वर का पुनरुच्चारण होता है।[13] भावों की विशुद्धि के लिए आगम साहित्य सतत प्रयत्नशील रहा है। जैसा कि उत्तराध्ययनसूत्र में कहा है- **'अप्पसत्थाओ वज्जिता पसत्थाओ अहिट्ठेज्जासि'** (33.61) अर्थात् अप्रशस्त भावों का त्याग करके प्रशस्त भावों में स्थिर हो। भाव संयमी के लिए शस्त्र संभारभ (पापकर्म) अकरणीय है।[14]

आज विभिन्न राष्ट्रों द्वारा निःशस्त्रीकरण के प्रयास उन्हीं शस्त्रों तक सीमित हैं, जो प्रत्यक्ष रूप से जीव जगत के लिए हानिकारक हैं। प्राकृत आगम-साहित्य में वर्णित निःशस्त्रीकरण की प्रवृति इससे विशिष्टता लिए हुए है। आगम परम्परा में निःशस्त्रीकरण

की गूंज मानव या स्थूल प्राणियों तक ही सीमित नहीं रही है। आगमकारों ने गहराई में जाकर बहुत ही सूक्ष्मता से पर्यावरण के प्रत्येक घटक को प्रदूषित करने वाले शस्त्रों का प्रतिपादन किया है। पर्यावरण के विभिन्न घटकों-भूमि, जल, वायु, अग्नि एवं वनस्पति के संरक्षण के लिए भी निःशस्त्रीकरण की चर्चा आगमों में मिलती है। आचारांगनिर्युक्ति[15] में पर्यावरण के सभी घटकों- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, वनस्पति को प्रदूषित करने वाले शस्त्रों की चर्चा की गई है। यही नहीं आगमों में पर्यावरण के ये घटक किसी भी प्रकार से प्रदूषित न हों, इस हेतु विवेक रखने का निर्देश दिया गया है। अंततः समस्त भौतिक एवं जैविक पर्यावरण के संवर्द्धन हेतु निःशस्त्रीकरण का निर्देश देते हुए आचारांगसूत्र[16] में कहा है- मेधावी स्वयं छः जीव निकाय पर शस्त्र का संभारभ (प्रयोग) न करे एवं दूसरों से उनका संभारभ न करवाये तथा संभारभ करने वाले दूसरों का अनुमोदन नहीं करे। जिसे छः जीव निकाय सम्बन्धी शस्त्र संभारभ परिज्ञात होते हैं, वही मुनि परिज्ञात कर्मा (कर्म त्यागी) कहलाता है।

**आयातुले पयासु** की अनुभूति के बिना पर्यावरण के समस्त भौतिक एवं जैविक घटकों के प्रति निःशस्त्रीकरण का भाव असंभव है। आगम ग्रन्थों में आत्मतुला, सर्वजीव समानता, अभय, मित्रता जैसे उत्कृष्ट भावों के आधार पर निःशस्त्रीकरण की अनुगूंज सुनाई देती है। आचारांगसूत्र[17] में कहा है- सब आत्माओं को समान जानकर शस्त्र से उपरत (अलग) हो जाओ। दशवैकालिकसूत्र[18] में भी कहा है- मन, वचन अथवा कर्म से त्रस प्राणियों की हिंसा न करो, इस संसार के विविध जीवों को आत्मवत् देखकर समस्त प्राणियों के प्रति शस्त्र प्रयोग से उपरत हो जाओ। निर्बल राष्ट्र शक्तिशाली राष्ट्रों से आतंकित होकर ही अपनी सुरक्षा के लिए शस्त्रों के निर्माण में जुट जाते हैं। संभवतः आज विश्व के सभी राष्ट्र- **'अभयो पत्थिवा तुब्भं अभयदाता भवाहि य।'** (उत्तराध्ययन सूत्र 18.11) अर्थात् हे! राजन् तुम्हें अभय देता हूँ, तुम दूसरों के लिए अभय दाता बनो, इसी अभयीकरण के पुनरुच्चारण की ही प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस प्रकार आगम साहित्य में भाव संयम के साथ-साथ समता, अभय एवं मित्रता जैसे मानवीय गुणों के आलोक में निःशस्त्रीकरण की अवधारणा को सुदृढ़ करने का प्रयास हुआ है।

अन्ततः यही कहना पर्याप्त है कि शस्त्रीकरण मनुष्य-जाति के लिए संहार का कारण बन सकता है। इसलिए हम प्रारम्भ से ही निःशस्त्रीकरण का मूल्य आंकें, उसे समझें और जीवन में अधिक से अधिक निःशस्त्रीकरण का प्रयोग करें। निःशस्त्रीकरण पर्यावरण विशुद्धि एवं उसके संरक्षण का हेतु है। निःशस्त्रीकरण के द्वारा ही मानव-जाति सुख और शांति से रह सकती है। आज निःशस्त्रीकरण के सन्दर्भ में आगमिक वाणी का विश्लेषण

किया जाए तो जीव जगत ही नहीं सम्पूर्ण पर्यावरण की दिशा में सकारात्मक परिणाम सामने आ सकते हैं।

**संदर्भः-**


1. पर्यावरण अध्ययन, मुक्तिनाथ झा, सनराइज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2008, पृ. 143
2. भारतीय आणविक नीतिः बदलते प्रतिमान एवं सन्दर्भ, डॉ. हेमलता मिश्र, गौड पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2009, पृ.1
3. भारतीय आणविक नीति : बदलते प्रतिमान एवं सन्दर्भ, डॉ. हेमलता मिश्र, पृ. 4
4. (क) भारतीय आणविक नीति : बदलते प्रतिमान एवं सन्दर्भ, डॉ. हेमलता मिश्र

   (ख) A Brief History of Nuclear Weapons Status, Page 1-4
5. आचारांगसूत्र, संपादक- मुनि मधुकर, प्रथम अध्ययन, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, 2012
6. उत्तराध्ययनसूत्र, संपादक- मुनि मधुकर, 8.10, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, 2012
7. पणया वीरा महावीहिं आचारांगभाष्यम्, 1.3.37, संपादक- आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 2012
8. उपासकदशांग, संपादक- मुनि मधुकर, 1.43,52, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, 2012
9. आचारांगभाष्यम्, भाष्यकार- आचार्य महाप्रज्ञ, 1.7.172-174 जैन विश्व भारती, लाडनूं, 2012
10. उपासकदशांग, संपादक- मुनि मधुकर, प्रथम अध्ययन, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, 2012
11. स्थानांगसूत्र, संपादक- मुनि मधुकर, 10.93, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, 2012
12. निर्युक्ति पंचक, आचारांग निर्युक्ति, संपादक- आचार्य महाप्रज्ञ, गाथा 96, जैन विश्व भारती, लाडनूँ, 1999
13. अहिंसा और अणुव्रत, सिद्धान्त और प्रयोग, आचार्य तुलसी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ, 2007, पृ. 53
14. आचारांगभाष्यम्, संपादक- आचार्य महाप्रज्ञ, 1.7.174, जैन विश्व भारती, लाडनूँ, 2012
15. निर्युक्ति पंचक, आचारांग निर्युक्ति, संपादक- आचार्य महाप्रज्ञ, गाथा 95,113-114,149-150, 170-171, जैन विश्व भारती, लाडनूँ, 1999
16. आचारांगभाष्यम्, भाष्यकार- आचार्य महाप्रज्ञ, 1.7.176-177, जैन विश्व भारती, लाडनूँ, 2012
17. समयं लोगस्स जाणित्ता एत्थ सत्थोवरए, आचारांगभाष्यम्, आचार्य महाप्रज्ञ, 3.1.3, जैन विश्व भारती, लाडनूँ, 2012
18. दशवैकालिकसूत्र, सम्पादक- आचार्य हस्तीमलजी म.सा.,8.12, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, 1993


*-प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर (राज.)*

नववर्ष पर विशेष

# नववर्ष, पार्श्वनाथ जयन्ती और अहिंसा-दिवस

*डॉ. दिलीप धींग 'एडवोकेट'*

जैनधर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक महापुरुष हैं। प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी और सभी भारतीय भाषाओं में भगवान पार्श्वनाथ के हजारों स्तोत्र, भजन, गीत, काव्य आदि मिलते हैं। सर्वाधिक मन्दिर, मूर्तियाँ, स्तुतियाँ, यंत्र, मंत्र आदि तीर्थंकर पार्श्वनाथ के प्राप्त होते हैं। भारतीय मूर्तिकला और चित्रकला के विकास में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमाओं और चित्रों का विशेष स्थान है। पौष कृष्ण दशमी को देशभर में भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक श्रद्धा-भक्ति के साथ मनाया जाता है। देश में भगवान पार्श्वनाथ के कई प्रसिद्ध मन्दिरों पर मेले लगते हैं। तारीख की दृष्टि से भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक प्रायः दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह से लेकर जनवरी के प्रथम सप्ताह में आता है।

आजकल जैन समाज में कुछ सन्तों की निश्रा में एक नई परम्परा चल पड़ी है, वह है- जनवरी की पहली तारीख को साधु-साध्वियों के सान्निध्य में 'नववर्ष महामांगलिक' का कार्यक्रम। किसी भी निमित्त से जप-तप, सामायिक-स्वाध्याय आदि आराधनाएँ होती हैं तो अच्छा ही है। यदि ऐसी आराधना से हमारा अपना कोई सांस्कृतिक पर्व या तिथि जुड़ जाए तो सोने में सुहागा हो जाए। इसी दृष्टि से अनुरोध है कि नववर्ष की आराधना को भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक से जोड़ा जाए। इससे हमारी नववर्ष आराधना निम्न रूपों में हो सकती हैं -

1. तारीख की दृष्टि से कुछ दिन पहले,
2. तारीख की दृष्टि से कुछ दिन बाद,
3. कभी-कभी नये वर्ष की पहली तारीख को ही पार्श्वनाथ-जन्म-कल्याणक का सुयोग बैठ जाता है।

इस वर्ष तारीख की दृष्टि से पार्श्वनाथ जयन्ती (पौष कृष्ण दशमी) 23 दिसम्बर को है। आजकल समाज में एक परम्परा और गतिमान है कि सन्तों के जयन्ती समारोह निकटतम रविवार को आयोजित किये जाने लगे हैं। इस दृष्टि से यदि नववर्ष के नाम पर होने वाला महामांगलिक का आयोजन पार्श्वनाथ जयन्ती को ही कर लिया जाए तो यह जैन समाज में सांस्कृतिक जागरण और एकता की दिशा में बड़ा कदम होगा। जैन समाज में

पार्श्वनाथ जयन्ती श्रद्धा, भक्ति, उत्साह और उत्सव के साथ मनाई जाती है। यदि जैन संघों तथा संतों के सान्निध्य में होने वाले नववर्ष महामांगलिक कार्यक्रम पार्श्वनाथ जयन्ती को ही सम्पन्न किये जाएं तो यह सचमुच 'महामंगलकारी' कार्य होगा। क्योंकि जप-तप व साधना के क्षेत्र में पौष बदि दशमी की तिथि का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'महामांगलिक' के साथ ही जप-तप, सामायिक आदि आराधनाएँ भी सहज जुड़ जायेंगी। पार्श्वनाथ जयन्ती पर श्रद्धा के साथ शुरू किये गये तप-तप तथा नये कार्य विशेष सुफलदायी बनते हैं।

भगवान पार्श्वनाथ ने अंधविश्वासों का प्रतिवाद किया। अहिंसा, करुणा, समता और क्षमा का उपदेश दिया। संस्कृति, लोक-संस्कृति और अहिंसा की दृष्टि से पार्श्वनाथ जयंती का अत्यधिक महत्त्व है। अहिंसा-पर्व और लोक-उत्सव के रूप में उनकी जयन्ती मनाई जाती है। इस दृष्टि से पार्श्वनाथ जयन्ती के सन्दर्भ में एक और निवेदन है; वह है- इस पावन दिवस पर अपने-अपने क्षेत्र (प्रदेश, संभाग, जिला, नगर, कस्बा, ग्राम आदि) में शासकीय स्तर पर अगता (अहिंसा-दिवस) घोषित करवाना। इसे अमारि-प्रवर्तन भी कहते हैं।

उल्लेखनीय है कि जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी ने अनेक रियासतों और क्षेत्रों में पार्श्वनाथ जयन्ती पर अनेक अहिंसा-दिवस घोषित करवाये थे। उनकी सत्प्रेरणा से घोषित अहिंसा-दिवसों का पूर्णतः अनुपालन होता था। अहिंसा-दिवस के दौरान सम्बन्धित क्षेत्र में पशु-पक्षी वध और मांस-मछली के क्रय-विक्रय पर पूर्णतः कानूनी प्रतिबंध रहता था और सभी बूचड़खाने बिल्कुल बन्द रहते थे। जैन दिवाकर जी की प्रेरणा से विशाल मेवाड़ रियासत एवं अनेक रियासतों और राज-ठिकानों की ओर से महावीर जयन्ती की ही भाँति पार्श्वनाथ जयन्ती पर भी स्थायी अहिंसा दिवस घोषित थे। इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए वर्ष 2008 में नगर परिषद् उदयपुर तथा राजस्थान सरकार की ओर से अहिंसा दिवस घोषित किये गये थे। बाद में उदयपुर नगर निगम की ओर से भी ऐसे पवित्र आदेश जारी किये गये।

अहिंसा-दिवस की परम्परा मात्र जीवरक्षा ही नहीं, अपितु पर्यावरण-रक्षा से भी जुड़ी है। सभी श्रद्धालुओं, अहिंसा-प्रेमियों और पर्यावरण-रक्षकों से निवेदन है कि वे पार्श्वनाथ जयन्ती पर अपने-अपने क्षेत्र में अहिंसा-दिवस घोषित करवाएँ और उसका समुचित पालन करवाएँ। ऐसा करके हम सही अर्थों में नववर्ष, भगवान पार्श्वनाथ जयन्ती और भारतीय संस्कृति की उपासना कर सकेंगे। अहिंसा-दिवस पत्र के लिए इन पंक्तियों के लेखक से सम्पर्क किया जा सकता है। *-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु) दूरभाष: 044-25298082, 094144-72720, ईमेल-* drdhing@gmail.com

तत्त्व-चर्चा

# जिज्ञासा-समाधान

उत्तराध्ययन सूत्र को आधार बनाकर साधु-साध्वियों से किए गए प्रश्नों के प्राप्त उत्तरों से श्री सौभाग्यमलजी जैन-व्याख्याता द्वारा संकलित समाधान।-**सम्पादक**

**जिज्ञासा**– पुण्य सोने की कटार है।

**समाधान**– पुण्य को सोने की कटार कहा गया है। कटार (तलवार) अपनी सुरक्षा के लिए अपने पास रखी जाती है ताकि संकट के समय अपने प्राणों की रक्षा हो सके। ठीक इसी तरह पुण्य भी सुरक्षा कवच है। पुण्य से ही हम सुरक्षित हैं। पुण्य क्षीण होने पर संकट आते देर नहीं लगती। भगवती सूत्र में गौतम स्वामी द्वारा पृच्छा की गई कि हे भगवन्! यह लवण समुद्र अपनी अथाह जल राशि से जंबूद्वीप को आप्लावित क्यों नहीं करता? भगवान ने फरमाया कि इस जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में ऐसी पुण्यवान न्याय नीति सम्पन्न आत्माएँ रही हुई हैं- जिनके त्याग के प्रभाव से लवण समुद्र का जल सीमाओं में बँधा रहता है। जिस दिन पुण्य में कमी होगी, उस दिन प्रकृति अपना कैसा रंग दिखायेगी, कहा नहीं जा सकता।

द्वारिका का विनाश तब तक नहीं हुआ जब तक आयंबिल की ओली चलती रही। ज्योंहि आयंबिल बंद हुआ त्योंहि पुण्य बल घट गया और द्वारिका का विनाश हो गया। जब तक पुण्य है, तब तक जीवन सुरक्षित है। अतः बृहद् आलोयणा में कहा गया– "पुण्यक्षीण जब होत है, उदय होत है पाप। दाझे वन की लाकड़ी, प्रज्वले आपो-आप।" पुण्य समाप्त होते ही और पाप के उदय होते ही सब समाप्त हो जाते हैं। और तो और वन की लकड़ी भी अपने आप प्रज्वलित हो जाती है। अतः अपेक्षा से पुण्य सोने की कटार नहीं आभूषण है। जो वक्षस्थल को आभूषण की तरह जीवन को सुशोभित बनाती है। कटार काटने का काम करती है। कटार शत्रु का संहार करती है, इसी प्रकार पुण्य के द्वारा राग-द्वेष रूप शत्रुओं का संहार होता है। पुण्य व्यक्ति को संसार-समुद्र से तिराने के लिए नौका का काम करता है। निगोद में रहा हुआ, अव्यवहार राशि में अकाम निर्जरा करता हुआ जीव एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक पहुँच जाता है। पहुँचाने में पुण्य सहायक होता है। पुण्य के बिना धर्म-साधना नहीं होती। पुण्य की 42 प्रकृत्तियों में धर्म करने के लिए सातावेदनीय, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय जाति, त्रस नाम कर्म, औदारिक शरीर, वज्र ऋषभनाराच संहनन, उच्च गोत्र आदि बातें होना आवश्यक है। ये सब पुण्य से ही होती हैं। सम्यक्त्व मोक्ष की प्रथम सीढ़ी है। पुण्य के

बिना साधक देश चारित्र व सकल चारित्र का पालन नहीं कर सकता है।

इसी बात को पुष्ट करते हुए उत्तराध्ययन सूत्र के पाँचवें अध्ययन की अठारहवीं गाथा में इस प्रकार कहा- "मैंने परम्परा से यह सुना है कि संयमी और जितेन्द्रिय पुण्यात्माओं का मरण अतिप्रसन्न और आघात रहित होता है। सकाम मरण के अधिकारियों के 3 लक्षण बताये हैं- संयमी, जितेन्द्रिय और पुण्यशाली।

इसी बात की उत्तराध्ययन सूत्र के 12 वें अध्ययन की 12 वीं गाथा में मुनि रूपी पुण्य क्षेत्र में दान देने हेतु यज्ञार्थियों को यक्ष की प्रेरणा-

"थलेसु बीयाइं ववन्ति कासगा, तहेव निन्नेसु य आससाए।
एमाए सद्धाए दलाह मज्झं, आराहए पुण्णमिणंसु खेत्तं।।"

अच्छी फसल की आशा से किसान जैसे ऊँची नीची भूमि में बीज बोते हैं, उसी श्रद्धा से मुझे भिक्षा देकर पुण्य क्षेत्र की अवश्य आराधना करें।

इसी बात को उत्तराध्ययन सूत्र के 13 वें अध्ययन की 32 वीं गाथा में महामुनि चित्तजी ने चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त को समझाते हुए कहा-

"जइ तं सि भोगे चइउं असत्तो, अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं।
धम्मे ठिओ सव्व पयाणुकंपी, तो होहिसि देवो इओ विउव्वी।।"

अरे राजन्! यदि काम-भोगों को छोड़ने में असमर्थ हो तो आर्य कर्म तो करिए। धर्म में स्थिर होकर प्राणियों पर अनुकंपा करिए ताकि यहाँ से मरकर देवगति में देव हो सकें। इसी पुण्य को अपनाकर अनेक जीवात्माएँ संसार समुद्र से तिरी हैं। इस बात को दृढ़ करते हुए उत्तराध्ययन सूत्र के 18 वें अध्ययन की 34 वीं गाथा में भगवान ने कहा-

"एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थ धम्मो वसोहियं।
भरहोवि भारहं वासं, चिच्चा कामाइं पव्वए।।"

धर्म और अर्थ युक्त पुण्य पद को सुनकर संपूर्ण भारत वर्ष के छः खण्ड का राज्य छोड़कर भरत चक्रवर्ती ने दीक्षा ग्रहण की।

दीक्षा के संदर्भ में कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्टनेमि से मन का दर्द व्यक्त करते हुए कहते हैं। जिसका वर्णन अंतकृतदशांग सूत्र के पाँचवें वर्ग के प्रथम अध्ययन में इस प्रकार आया है-"अधण्णे अकयपुण्णे।" मैं धर्महीन पुण्यहीन हूँ। इसलिए मैं श्रावक व श्रमण धर्म को स्वीकार नहीं कर सकता। शास्त्रवाणी के अनुसार भी जैन दीक्षा लेने वाली आत्माएँ अनन्त पुण्यशालिनी होती हैं। पुण्य की बहुलता के बिना दीक्षा के भाव नहीं आ सकते, यही कारण है कि प्रथम गुणस्थान से जीव को सीधा चौथे गुणस्थान में पहुँचाने वाला सम्यक्त्व, पाँचवें गुणस्थान से छट्ठे, सातवें गुणस्थान में पहुँचाने वाला सर्वचारित्र भी पुण्य के बिना

नहीं होता। सर्वचारित्र की आराधना पूर्वक गुण श्रेणि में अनन्त गुणी विशुद्धि के द्वारा घाती कर्मों का क्षय करके 13 वें गुणस्थान में पहुँचने में भी पुण्य सहायक है तथा 14 वें गुणस्थान के अंत में गन्तव्य स्थान मोक्ष में पहुँचते समय साधन रूप पुण्य की संपूर्ण प्रकृतियाँ छूट जाती हैं। उसे छोड़ने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता नहीं है। पुण्य किसी भी स्तर पर हेय नहीं है। चाहे भवी हो या अभवी, व्रती हो या अव्रती, कृष्ण पक्षी हो या शुक्ल पक्षी सभी को आगे बढ़ाने में पुण्य सहायक बनता है। किसी के लिए भी बाधक नहीं। स्वतः छूटता है, जैसे- यथाख्यात चारित्र चौदहवें गुणस्थान में अपने आप छूट जाता है। बाधक पुण्य नहीं, घाती कर्म हैं। पुण्य उपादेय है, पर मुक्ति में जाते समय स्वतः छूट जाता है। पुण्य बंधन, बेड़ी व शूली रूप नहीं है।

कटार चाहे सोने की हो या लोहे की या पीतल की, कटार तो हर स्थिति में हेय ही होती है। पर पुण्य हेय नहीं, पुण्य तो उपादेय है, सहयोगी साधन है- "पुनाति इति पुण्यं।" पुण्य आत्मा को पवित्र करता है। शुभ प्रवृत्ति रूप है तथा शुभ भोगों से बँधने के कारण संवर भी है। पुण्य व पाप का विभाजन कषायों के कारण होता है। विशुद्धि के बढ़ने से जिसका अनुभाग बढ़े वह पुण्य है और संक्लेश के बढ़ने से जिसका अनुभाग बढ़े वह पाप है। संक्लेश हेय है, विशुद्धि उपादेय है। जिस पुण्य से समकित, संयम, केवलज्ञान, मोक्ष की प्राप्ति होती है वह किसी भी दृष्टि से हेय नहीं हो सकता।

उत्तराध्ययन सूत्र के 5 वें अध्ययन की 18 वीं गाथा में कहा- "मरणंपि सपुण्णाणं" पुण्यशाली को ही समाधिमरण होता है, बिना पुण्यवानी के गुरु का सहयोग, सद्बुद्धि, साधना की अनुकूलता कुछ भी प्राप्त नहीं होती और इसके बिना समाधिभाव नहीं आता तथा समाधिभाव वालों के ही समाधिमरण होता है। यदि समाधिमरण को उपादेय मानते हैं तो वहाँ तक पहुँचाने वाले पुण्य को हेय कैसे कह सकते हैं?

शास्त्र में कहीं भी पुण्य को हेय नहीं कहा- सर्वत्र पाप को ही छोड़ने योग्य कहा गया है। उत्तराध्ययन सूत्र के 13 वें अध्ययन की 32 वीं गाथा में- "अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं"। स्पष्ट रूप से चित्त मुनि ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती को आर्य कर्म अर्थात् पुण्य करने के लिए प्रेरणा कर रहे हैं, क्योंकि जो सही करता है, वह किये हुए गलत के प्रभाव को नष्ट कर देता है तथा नहीं करने को उपलब्ध होता है। चित्त मुनि को लगा, जब ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती संपूर्ण भोगों से ऊपर नहीं उठ पा रहा है तो उपलब्धियों के सदुपयोग का उपदेश देते हैं। पुण्य कर्म, पाप-कर्म के नाश का हेतु होने से कटार नहीं कंगन है, अर्थात् उपादेय है।

कहा है- "पुण्य का पालन-पाप का प्रक्षालन।" पुण्योदय से प्राप्त की आसक्ति हेय है, उसका सदुपयोग पुण्य प्रवर्धक है, वो आत्मा का सहयोगी है। कपड़े-साबुन भिन्न हैं, पर

वह साबुन कपड़े को विशुद्ध करती है उसी प्रकार पुण्य तत्त्व आत्मा से कथंचित् भिन्न होकर भी उसके निर्जरा कार्य में सहयोगी बनता है। उत्तराध्ययन सूत्र के 13 वें अध्ययन की 21 वीं गाथा में- "धणियं तु पुण्णाइं, अकुव्वमाणो।" चित्त मुनि ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती को समझाते हैं कि हे राजन्! इस अशाश्वत मानव जीवन में जो विपुल पुण्य कर्म (शुभ अनुष्ठान) नहीं करता, वह मृत्यु के मुख में पहुँचने पर पश्चात्ताप करता है। वह जीव धर्माचरण न करने के कारण परलोक में भी पश्चात्ताप करता है। पाप, पश्चात्ताप का हेतु है, पुण्य नहीं। अतः पुण्य उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार भी उपादेय ही है।

## हीरा गुरु अष्टक

*महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा.*

नगर पीपाड है सुखकार, जहाँ पर लीना है अवतार।
चरणों में वंदन बारम्बार, हीरा गुरुवर सुमरो हर बार।।1।।

गाँधी कुल में खुशियाँ छाई, घर-घर मांही बंटी बधाई।
हीराचन्द्र दिया नाम निखार, हीरा गुरुवर सुमरो हर बार।।2।।

भर यौवन उम्र आई, हस्ती गुरु की शरण पाई।
पीपाड़ में संयम लीना हितकार, हीरा गुरुवर सुमरो हर बार।।3।।

गहन एकान्त में करते ध्यान, नर-नारी भी करे प्रणाम।
तप संयम से मंडित अभिराम, हीरा गुरुवर सुमरो हर बार।।4।।

स्वर्णिम जन्म-दिवस गुरु का आया, शहर मदनगंज मन भाया।
कर दर्शन गुरु का मनड़ो हरषे अपार, हीरा गुरुवर सुमरो हर बार।।5।।

है आकर्षण गरिमामय गुरु दर्शन का, स्वाध्याय पुष्ट पाथेय बने जीवन का।
करे छाया हरे माया शांति है अपरम्पार, हीरा गुरुवर सुमरो हर बार।।6।।

हीरा गुरु नाम से संकट टले, मनवांछित सब आशा फले।
ग्राम नगर करे विहार, हीरा गुरुवर सुमरो हर बार।।7।।

सुखकारी दीक्षा दिवस आया, हर जगह है आनन्द छाया।
मंजु कौशल्या पुनीतप्रभा करे गुणगान, हीरा गुरुवर सुमरो हर बार।।8।।

*-संकलनः श्री पारसमल गिड़िया, पावटा, जोधपुर-342006 (राज.)*

English-Section

# STUDY OF UTTARĀDHYAYANA SŪTRA

*Dr.Priyadarshana Jain*

## INTRODUCTION

The Uttarādhyayana Sūtra occupies an important place in Jaina canonical literature. It is a representative work of Śramanic current of thought. It has importance for its spiritual fervor, ethical notes, historical references, interesting stories, striking metaphors, inspiring dialogues, besides rituals and code of conduct of an aspirant treading on the path of emancipation. We find in the Uttarādhyayana Sūtra an indepth analysis of almost all matters relating to life and living, particularly art of right living. It makes a thorough analysis of the internal mind which is a store-house of energy as well as the external world which is the work place of all mundane souls. In a way it is the 'Gita' of the Jains, hence its importance is undebated. The contents of the Uttarādhyayana Sūtra is relevant in all times and is for all people. It is a mini encyclopedia of Jaina faith and practices spread over thirty-six chapters. The depth of Jaina Philosophy and the vastness of contents are two unique features of the Uttarādhyayana Sūtra. Jaina Philosophy, Epistemology, Metaphysics, Ethics, Sociology, Psychology are some of the heads under which the Uttarādhyayana Sūtra can be studied.

The Āgamas are the sacred texts of the Jains. They are revealed by ***Āpta*** i.e. authoritative personages i.e. omniscients, constructed by the ***Gaṇadharas*** i.e. prime disciples of the Tirthankaras and practised by ***Munis*** i.e. ascetics [Aa + Ga + Ma]. They had been handed down through an oral tradition and were documented nearly 1000 years after Lord Mahavira's nirvāṇa. We get four classifications of the Agamas[1]-

| | | |
|---|---|---|
| 1. Classification I | - | 14 Purvas and 12 Angas. |
| 2. Classification II | - | Four Anuyogas. |
| 3. Classification III | - | Aṇga Praviṣṭa and Aṅga Bāhya |
| 4. Classification IV | - | Aṇga Upāṅga, Mula and Cheda Sutras. |

The Uttarādhyayana Sūtra is an Aṇga Bāhya Mūla Āgama and is

not constructed by the Ganadharas but revealed by Lord Mahavira before his Nirvana. Mula means fundamental or basic. The Uttarādhyayana Sūtra is a Mula Sutra for the fundamentals of Jaina beliefs and practices are discussed, it is the original revelation of Lord Mahavira and its study is a pre-requisite for the study of the Jaina canonical literature. The Uttarādhyayana Sūtra is written in Uttarādhyayana Sūtra style in which the words are less but the meaning they convey are comprehensive and indepth. Uttara + Adhyayana, Uttarā means answers or excellent and adhyayana means study or lessons. Thus Uttarādhyayana means the lessons revealed later or last, some chapters are in question and answer style and it also means excellent lessons. Tradition reveals that it is the last sermon of Lord Mahavira discoursed at Pāvāpurī, Bihar. It is in Ardhamagadhi and it is partly in prose, mostly in poetry and some chapters are a mixture of both. The language of Ācāranga and Sūtrakṛtāṅga is comparatively archaic and so is that of Uttarādhyayana.[2] It is a representative work of 600 B.C to 400 A.D. The subject matter of all the four Anuyogas, Caraṇakaraṇānuyoga – Ethics, Dharmakathānuyoga – Tales, Ganitānuyoga - Calculations and Dravyānuyoga – Metaphysics is spread in the Uttarādhyayana Sūtra.

**COMMENTARY LITERATURE**

Of all the Āgamas the Uttarādhyayana Sūtra is the most popular work and widely commented upon. After the Tattvartha Sutra we find so many publications of the Uttarādhyayana Sūtra and it is because of the contents, parables, illustrations, simple narrative style and the indepth analysis of the topics discussed. We have a Niryukti by Bhadrabahu II, a Cūrni by Gopālika Mahattara Śiṣya, Brhadavṛtti by Vadī-Vetāla Shāntisūri, Sukhabodhā tika by Nemichandra Suri and around a dozen other commentaries.[3]

A glance at the 36 chapters of the Uttarādhyayana Sūtra gives us an idea of the variety of the contents.

**CHAPTERISATION OF UTTARĀDHYAYANA SŪTRA**

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Vinaya | Discipline |
| 2 | Parisaha | Afflictions |
| 3 | Caturangiya | Four Essentials |
| 4 | Asamskruta | Irreparability of life |
| 5 | Akamamaraṇiya | Art of dying |
| 6 | Ksullaka Nirgranthiya | Young ascetic |

| | | |
|---|---|---|
| 7 | Urabhriya | Parable of the lamb |
| 8 | Kapilya | Conquering greed |
| 9 | Namipravrajya | Jaina spirituality |
| 10 | Drumapatraka | Awakened life |
| 11 | Bahusruta | The learned one |
| 12 | Harikesiya | Austerity and Yagna |
| 13 | Chitta Sambhuta | Bitter fruits of volition |
| 14 | Ikkhukariya | Renunciation |
| 15 | Sabhiksuka | Qualities of an ascetic |
| 16 | Brahmacarya | Celibacy |
| 17 | Papa sramaniya | Sinful sage |
| 18 | Sanjatiya | Fearlessness and King Sanjaya |
| 19 | Mrugaputriya | Detachment of the body |
| 20 | Mahanirgranthiya | Biography of Anathi Muni |
| 21 | Samudrapaliya | Fruits of deeds done |
| 22 | Rathanemiya | Steadiness in restraint |
| 23 | Keshi Gautama | Dialogue between the two |
| 24 | Pravacana mata | Mother of ascetics |
| 25 | Yajniya | True Yajna |
| 26 | Samacari | Duties of an ascetic |
| 27 | Khalunkiya | Parable of bullocks |
| 28 | Moksa marga gati | Path of emancipation |
| 29 | Samyaktva Parakrama | Right exertion |
| 30 | Tapomarga | Austerities |
| 31 | Caranavidhi | Conduct |
| 32 | Apramada sthana | Causes of negligence |
| 33 | Karma prakriti | Karma theory |
| 34 | Lesya | Colouring of the soul |
| 35 | Anagara marga | Asceticism |
| 36 | Jivajiva vibhakti | Description of soul and matter. |

**ESSENCE OF THE UTTARĀDHYAYANA *SŪTRA* OR THE PHILOSOPHY OF MAHAVIRA AS REVEALED IN THE UTTARĀDHYAYANA SŪTRA:**

Philosophy of Mahavira is the wisdom of the self, the inner, pure

transcendental self. Metaphysics (Tattva Mimāṃsā) enables us to develop faith in it, Epistemology (Jñāna Mimāṃsā) imparts the knowledge of it and Ethics (Ācāra Mimāṃsā) inspires the aspirants to nurture spirituality and take to the prescribed rituals for self-realization and perfection. Faith, knowledge and practice-together lead the aspirant on the pathway of emancipation. Ethics is the practice for highest good, through Metaphysics one believes in the transcendental and knows very well the limitations of the senses , the basis of Metaphysics is the Epistemology i.e. revelations of the all-knowing omniscient Tirthankara Arhats. When the three together are blended in spirituality, they serve the purpose of enlightenment. Thus spirituality is for the God in Man and Ethics is for the Man in Society and Uttarādhyayana Sūtra serves both these purposes. Mahavira experienced this spirituality, practised the ethics thereupon became omniscient and enlightened and lastly revealed the truth, hence his philosophy of Anekanta and his religion of Ahimsā are universal and for all times and for all people.

The social evils like slavery, casteism, animal sacrifices etc that were there in the society at the time of Lord Mahavira, too have been addressed in the Uttarādhyayana Sūtra. One can see the influence of Mahavira and the Sramanic thought on the social, political and also on the philosophical schools of that time. So many verses that appear in the Uttarādhyayana Sūtra can be traced in the Mahabharata, Bhagavad Gita, Manusmriti, Dhammapada etc. The Uttaradhyayana Sutra is a song of the soul, it teaches the art of right living as well as art of dying. Winternitz, while introducing the Jaina canons says that "With rare exceptions the sacred books of the Jainas are written in a dry-as-dust, matter-of-fact, didactic tone, seldom instinct with that general human interest which so many Buddhist texts possess. Uttaradhayana is one of his 'rare exceptions'. As a religious poem he holds it to be the most valuable portions of the canon, its oldest nucleus belonging to the ascetic poetry of India and having its parallel in the Buddhist literature such as the Suttanipata and the Dhammapada".

Based on the contents the Uttarādhyayana Sūtra can be treated under the following heads:[4]

(i) Monastic Teachings: Chapter 1-8, 10, 11, 15-17, 27, 32, 35.
(ii) Legendary Tales and Dialogues Chapters 9, 12 – 14, 18-23, and 25.
(iii) Dogmatic Discourses: 24, 26, 28-31, 33, 34, 36.

Let us briefly study the contents of the Uttarādhyayana Sūtra:

**SECTION I**

**MONASTIC TEACHINGS** : [Chapters 1-8, 10, 11, 15-17, 27, 32, and 35]

Chapter I is a sermon on Discipline (*Vinaya*). Vinaya is the root of all virtues. One who is disciplined alone can surrender and shine in life. Humility is a virtue of the wise and arrogance is the root of evil. An arrogant disciple is no good for the society. The Uttarādhyayana Sūtra gives two similies to drive home the significance of humility and discipline. Just as a bitch with rotten ears is shunned from all places, an undisciplined arrogant soul suffers endlessly; and just as a pig shuns the rice grains and feeds itself on excreta, the foolish disciple gives up the teachings of the wise and is a lost case for himself and for the teacher and society. The discipline of an ascetic who has renounced all mundane bondages is enumerated along with the fruit of the discipline. Verse 15 and 16 summarize the spiritual message of the Uttarādhyayana Sūtra. It is said that it is better to conquer oneself, for difficult it is to conquer oneself. One who does so will be happy in this world and the next. One ought to conquer oneself by self –restraint and austere practices instead of being controlled by others.

Chapter II gives the details of the 22 afflictions faced by an ascetic during the course of this spiritual journey.

Chapter III teaches us time management and informs us of the four difficult requisites which are

a) human birth with humanitarian qualities like compassion etc.,
b) opportunity to hear the true sermons,
c) steadfast faith in truth, and
d) exertion in self-restraint.[5]

The commentary on the Uttarādhyayana Sūtra informs that due to the following 13 reasons one is not able to have right knowledge: laziness, delusion, disobedience, pride, anger, ignorance, tension, pleasure, gambling, etc. It is said that rational faith is difficult to acquire and it abides in a straight-forward soul.[6]

Chapters IV inspires us to be awakened and alert in life. Life is ephemeral and the time that passes away can never be got again, hence be not invigilant even for a while reminds the 10th chapter. Money, riches, kith and kin none can save the soul from oldage, disease and death. One who conquers his desires can be freed from all miseries.

Chapter V teaches the art of dying and discusses in detail the death of a wise man and that of a fool. Death is inevitable and the brave face it

with calm and poise. Chapter VI informs that ignorance is bondage and the ignorant are subject to pain and suffering in the web of transmigration. The wise give up the ten types of external possessions and fourteen types of internal possessions. The purpose of human life is to practice self-restraint in order to annihilate the karmas and to purify oneself. A self-realised ascetic lives like a bird not possessing anything and not saying anything for the morrow. He searches for the truth all by himself and nurtures friendliness towards all creatures.[7] This has been revealed by all-knowing all-seeing Arhat, Jñātaputra Lord Mahavira.[8]

Chapter VII reveals the philosophy of Mahavira through parables. Altogether four parables appear in this chapter and there are around 50 parables in the whole of Uttarādhyayana Sūtra which make the reading interesting. The parable of the lamb informs us that as a lamb is fed with rice and green grass only to be slaughtered for a feast, so the deluded people feed themselves on worldly pleasures to suffer the pangs of hell. Gatha 7.6 informs us the causes of hell as attachment, taking to non-vegetarian food intense violence and having immense possessions. Just as a fool loses a thousand gold coins for a penny so also the deluded souls lose this precious human birth for mundane pleasures. Just as a king eats the forbidden mango and loses his kingdom so also the ignorant souls fall prey to sense pleasures and lose this precious life. The fourth parable is of three traders who respectively lost, retained and increased their capital. The one who loses the capital of human life symbolizes the evil and sinful people, who land in hell. The one who retains it is the man who is virtuous but not spiritually inclined. Such a person retains his human form in the next birth. The third trader who multiplies his capital symbolizes the man who is noble and spiritual and rises to higher forms of existence. This illustration of three traders has a parallel in the biblical story of the talent and pound (book of Mathews 25, 14-30, Luke 19, 11-26).[9]

Chapter VIII is of Kapila Kevalin and deals with the evils of worldly life and advises the spiritual aspirants to shun it. Evils of causing injury to life, greed and indulgence in women are particularly elaborated. It says greed increases with every want.[10] The story of how greed was conquered by Kapila is told in the commentary literature as a prelude for this chapter. It is said that when Kapila recited this chapter for 500 thieves, all of them were transformed and later on renounced the world for spiritual perfection. He sang to them that contentment, self-restraint, renunciation

and non-violence are the way to happiness.[11]

Chapter X is titled *Dummapattayam* ie 'leaf of a tree' and is in the form of address by Mahavira to Gautama. There are 37 verses in this chapter and Lord Mahavira gives the admonition of not to be invigilant even for a while, 36 times. When Gautama Ganadhara sees that he is not being enlightened, Lord Mahavira reveals to him that it is due to attachment for Him, hence in this context explains to him the impediments for perfection and motivates him to give up invigilance. Lord Mahavira says that life is ephemeral like the leaf of a tree and like a dew drop and there are so many obstacles. It is indeed difficult to get a human birth and difficult it is to be born in a noble family where you get a chance to know yourself. Conquer yourself and realize your pure self. Having got this precious human birth one must exercise complete vigilance and should not be careless even for a while. The chapter can be summarized as:

"O! children of immortality!
Realize, arise and liberate yourself,
Your destination is far off,
The path is full of obstacles,
The resources are limited,
And so is time, hence
Be not invigilant even for a while. -said Mahavira

Chapter XI is Reverence to the Learned and it describes the characteristics of undisciplined and disciplined aspirants. Verse 11.3 informs that due to pride, anger, carelessness, disease and laziness one cannot acquire knowledge. People with the following eight qualities are worthy of acquiring knowledge. Not laughing too much, one with subdued senses, not revealing others' secrets, being chaste, not having a tainted character, not indulging in relishing tasty food, not having a short temper and one who has immense love for truth[12], such people alone can learn and absorb the teachings of the wise and holy. Like wise the text enumerates the 14 qualities of an undisciplined ascetic who is not worthy of learning and Nirvana[13] and 15 qualities of a disciplined ascetic worthy of Nirvana.[14]

Chapter XV is titled Sabhikkhu, ie. 'He is a true ascetic' and it enumerates the virtues of a true ascetic. A Bhikṣu is one who is devoted to the contemplation of the self, detached, self-restrained, equanimous, spiritually wise and materially selfless, dispassionate, bears all afflictions patiently, does not expect anything from anybody, eats less than required

and is committed to the practice of the three jewels. Chapter XVI is related to the practice of chastity. Chapter XVII is in contrast with Chapter XV for it enumerates the qualities of a fake and hypocritical monk who is idle, indolent and least interested in spiritual welfare. Again chapter XXVII too discusses the above theme of Papaśramana and with the illustration of the wicked bullocks informs the readers of the bitterness faced by a teacher whose disciples are arrogant, lazy and undisciplined.

Chapter XXXII titled *Pramadasthana* enumerates the things one should be careful about and that he must uproot all causes of attachments.[15] One who has acquired the all-knowing, supreme knowledge, has conquered ignorance, delusion, attachment and hatred, alone reaches Moksa and enjoys unobstructed happiness and bliss.[16] Just as a hen is born from an egg and an egg from a hen, so also delusion springs from desire and desire from delusion.[17] The seeds of karma are attachment and hatred and it springs from delusion and is the cause of birth and death and verily both birth and death are termed as misery.[18] Hence there is no pain for one who has no delusion, no delusion for one who has no desire, no desire for one who is not greedy and no greed for one who possesses nothing.[19] The same can be revealed as follows in a question and answer format.

| | |
|---|---|
| What is misery? | - Birth and Death |
| What is the cause of birth and death? | - Karmas |
| What are the seeds of Karma? | - Attachment and Aversion |
| What causes Karma? | - Delusion |

The sense pleasures and the temptations of the world allure the soul and are the root cause of delusion and bondage. The chapter reveals that a firefly meets with death due to its attraction for light, a deer due to the temptation of sound, a snake is trapped due to its attraction for smell, a fish is hooked due to the attraction for taste, a buffalo meets with death due to its liking for touch, an elephant is trapped due to its attraction for sexual pleasure. Attraction for one sense pleasure or the other becomes the cause of misery for each creature, what then to say of man who leads a beastly life absorbed in sensual and sexual pleasures. The verses reveal that the senses and the mind are not the cause of bondage and suffering but the attitude of the deluded soul is the cause of bondage, and there is no fear for one who is not deluded and is a Vitarāga i.e. Conqueror of attachment (and aversion).[20]

Chapter XXXV gives us a glimpse of the life of a Śramana who is totally committed to a life of self-restraint, detachment and renunciation.

The last verse of this chapter heralds that one who is detached, devoid of pride, is a Vītarāga i.e., conqueror of attachment and for whom the influx of karma has been arrested, and in him manifests Kevalajñana i.e. omniscience and he alone finally attains Nirvāna. **(Continue)**

**REFERENCES**


1.Uttarajjhayanāni – Introduction by Mahaprajña
2.An Introduction to Uttarajjhayana by R.P. Poddar
3.Uttarajjhayanāni – Introduction by Mahaprajña
4.An Introduction to Uttarajjhayana by R.P. Poddar
5.Uttarādhyayana Sūtra 3.1
6.Ibid 3.9, 12
7.Ibid 6.2
8.Ibid 6.18.
9. An Introduction to Uttarādhyayana Sūtra. Pg.23.
10.Uttarādhyayana Sūtra 8.17
11.Uttarādhyayana Sūtra Vol.I by Hastimalji Maharaj Pg. 269.
12.Uttarādhyayana Sūtra 11.4,5
13.Ibid 11.6-9
14. Ibid 11-10-13
15.Introduction to Uttarajjhayana Pg.30.
16.Uttarādhyayana Sūtra 32.2
17. Ibid 32.6
18. Ibid 32.7
19. Ibid 32.8
20. Ibid 32, 21


*-Asst Prof & Head, Dept of Jainology, University of Madras, Chennai-600005*

## प्रणाम एवं उसका परिणाम

*श्रीमती आशा धीरेन्द्र बांठिया*

प्रातः उठकर सबसे पहले नमस्कार मंत्र का स्मरण कीजिए एवं मुस्कुराइए। दूसरा कार्य अपने माता-पिता एवं सभी बड़ों को प्रणाम कीजिए। प्रणाम करने में संकोच न करें। यदि आज यह आदत नहीं है तो आदत डाल लें। दो-चार दिन संकोच रहता है, फिर यह आदत विनम्र बना देगी।

मंदिर में मूर्ति को, स्थानक में गुरु महाराज को वंदन कर लेते हैं, किन्तु हमारे जन्मदाता माता-पिता को प्रणाम करने में संकोच क्यों रहता है? अपने से सभी बड़ों को प्रणाम करें। जब हम बड़ों को प्रणाम करते हैं तो उनका हाथ आशीर्वाद के लिए ही उठता है। कोई भी हमको प्रणाम करते समय दुर्भावना युक्त आशीष नहीं देगा। मन में यदि झगड़े के भाव हैं तो प्रणाम के परिणामस्वरूप कलह कमजोर होकर प्रेम में परिणत हो जायेगा। जो प्रातः उठकर बड़ों से मिलने पर पाँव छूता है, वह बहुत भाग्यशाली है। उसके सिर पर आशीर्वाद एवं स्नेह की छत्र-छाया सदैव बनी रहती है।

*-ई-50, गार्डन स्ट्रीट, लाल बहादुर नगर, जयपुर (राज.)*

धारावाहिक

# लगन की वेला (24)

*आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'*

अरुण पिता के आदेश से मुनिराज धर्मप्रियजी के पदार्पण के पश्चात् उनके दर्शन करके बाहर चला गया। वह कई दिन तक बाहर परिभ्रमण करता रहा। कुशस्थलपुर में होने वाली घटनाओं की उसे कुछ भी जानकारी नहीं थी।

एक दिन सिद्धिदेवी ने नगरश्रेष्ठी से कहा- "आर्यपुत्र! अरुण बाहर है। यहाँ के आचार्य-पदारोहण के उत्सव के समाचार उसे दिये या नहीं?" नगरश्रेष्ठी ने उपेक्षा से कहा- "नहीं दिये। अब इसमें क्या समाचार देने हैं? वह स्वयं ही आ जायेगा। उसे कहाँ चैन है?"

पति की यह उपेक्षा सिद्धिदेवी को अच्छी नहीं लगी। गुरुदेव कितने पुण्यात्मा हैं। अब कुछ ही दिन के उनके दर्शन हैं। अरुण यदि कुछ दिन उनके सत्संग में रहे तो क्या हानि है? ऐसे समय में अपने पति की वक्रता उसके हृदय में चुभी। वह तीखे स्वर में बोली- "स्वामिन्! इस समय आपकी यह उपेक्षा उचित नहीं है। आप अरुण के कारण गुरु के प्रति धर्म के प्रति उपेक्षा करने लगे हैं। यह कहाँ तक ठीक है? कौन से कषाय का उदय है आपके।"

नगरश्रेष्ठी एकदम तनकर बोले- "कौन कहता है कि गुरु के प्रति, धर्म के प्रति मेरी उपेक्षा है? मैं समय-समय पर सभी कार्य बराबर करता हूँ। मैं कोई ऐसा बावला नहीं हूँ कि अपना कर्त्तव्य ही भूल जाऊँ।"

"यह तो आप अपने नाम के कारण, समाज के अग्रणी होने के कारण करते हैं"- सिद्धिदेवी को रोष आ रहा था। इसलिए वह अति स्पष्ट कथन करती जा रही थी- "हृदय से नहीं करते- आत्मा के लिये नहीं करते।"

"किसी भी कारण से करूँ? कैसे भी करूँ? पर कर तो रहा हूँ न। रही हृदय से करने की। क्या तुम सर्वज्ञ हो, जो मेरे मन का लेखा प्रस्तुत कर रही हो?" "सर्वज्ञ तो नहीं हूँ! पर अनुमान तो कर सकती हूँ। आपके काम ही ऐसे हैं। क्या आपने इस प्रसंग पर कल्याणी और उसके परिवार को बुलाने की बात भी सोची?"

"अरुण की माँ! आज तो तुम मुझसे लड़ रही हो। मैंने संदेश नहीं भेजा तो तुमने ही क्यों नहीं भेजा? क्या तुम उसकी माँ नहीं हो?" सिद्धिदेवी अपने रोष से लज्जित होकर

बोली- ''स्वामिन्! मैं लड़ रही हूँ? नहीं, मैं सही बात कह रही हूँ। गुरुदेव के स्थिरवास की विनति के हमारे आग्रह पर गाथापतिजी ने कहा था कि यदि किसी का पुत्र दीक्षा लेने को उद्यत हो जायेगा तो संघ में वैमनस्य हो सकता है, यह बात आप पर ही चरितार्थ हो गयी।''

यह बात सुनकर श्रेष्ठी को बुरा लगा। परन्तु वे बोले-''तुम कैसी बात करती हो? मैंने संघ में वैमनस्य कहाँ फैलाया। अपने पुत्र पर नियन्त्रण कोई पिता नहीं करता है क्या? वही मैंने किया- कुछ विपरीत तो किया नहीं है।''

सिद्धिदेवी ऐसे नियन्त्रण में विश्वास नहीं करती थीं। कोई गलत रास्ते पर जा रहा हो, उस पर अंकुश लगाना चाहिये, परन्तु जो कोई गलत मार्ग पर चरण नहीं धरता हो, उस पर नियन्त्रण करने से क्या लाभ? उससे वह व्यक्ति सही निर्णय नहीं ले सकता है या तो वह तनकर हठ पर चढ़ जाता है या फिर हीनता से दब जाता है। इसलिये वह बोली- ''मुझे बड़ा विचार होता है कि एक ओर सार्थवाह हैं और एक ओर आप हैं।''

बिना समय की इस तुलना से श्रेष्ठी चकित होकर बोले- ''सार्थवाहजी ने ऐसी क्या विशेषता की है?'' सिद्धिदेवी समझ गयी कि शिवसुन्दर के विषय में घटित बात का स्वामी को पता नहीं है। वह बोली- ''क्या आपको पता नहीं? किस निद्रा में सोये हैं? नगर में रहते हैं कि और कहीं?''

''हाँ, कह दो जंगल में रहता हूँ। सबके घर की बातों का पता रखना कोई आवश्यक नहीं है''- जरा अमर्ष से श्रेष्ठी बोले- ''पर फिर भी सुनूँ भी तो उन्होंने ऐसा क्या किया है, जो नगरसेठानी उनसे अपने स्वामी में न्यूनता देख रही है।''

सिद्धिदेवी ने श्रेष्ठी के व्यंग्य पर ध्यान नहीं दिया। वह भावप्रवण होकर बोली- ''धन्य है उनकी गुरुभक्ति! धन्य है उनका वात्सल्य! उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र शिवसुन्दर को गुरुचरणों में परम उदारता से समर्पित कर दिया।''

नगरश्रेष्ठी यह बात सुनकर विस्मित हो गये। उनके सामने परीक्षण-सभा का दृश्य तैर गया। वे बोल उठे- ''कौन शिवसुन्दर? वही जो अभी कुछ माह पूर्व ही महाकलायतन से लौटा है?''

''हाँ! वहीं तो।''

नगरश्रेष्ठी के मानस-पट पर कलादक्ष का भोला-सा सौम्यमुख का प्रतिबिंब उभर आया। उन्हें सार्थवाह का यह कार्य नहीं सुहाया। इतना भला, इतना सुन्दर पुत्र और वह भी ज्येष्ठ, क्या समर्पण करने की वस्तु है। वे अप्रसन्न स्वर में बोले- ''सार्थवाहजी का मस्तिष्क तो ठीक है। पुत्र क्या बलि का अज है, जो उसे यों किसी को भेंट कर दिया

जाये?"

"मुझे बस आपकी यह दोष-दर्शक दृष्टि ही अच्छी नहीं लगती"- सिद्धिदेवी ने भी अपनी अप्रसन्नता छिपायी नहीं। वह उपालंभ देती हुई कह रही थीं- "किसी के गुण-दर्शन की बात तो दूर रही। बस जो अपने को अरुचिकर है- अपने मतानुसार नहीं है, वह सब पागलपन है। बात की भीतरी तह में गये बिना कुछ भी कह बैठना- यह क्या बुद्धिमानी है और क्या आप जैसों के लिये शोभास्पद है? क्या युवा पुत्र को बिना उसकी इच्छा के त्याग-मार्ग पर चढ़ाया जा सकता है? दीक्षा के लिये तो बच्चा भी, चाहे जितना उसे प्रलोभन दो, हाँ नहीं करता है।"

नगरश्रेष्ठी वक्रता से बोले- "तुम्हारा आशय यह समझूँ कि मैं भी इसी प्रकार भेंट कर दूँ अरुण को? तुम स्त्रियों की गतानुगतिकता की आदत है। तुम लोगों को किसी के श्रेष्ठ वस्त्राभूषण दिखाई दें तो वैसे ही स्वयं के लिये लेने का मन हो जाता है। ऐसी बात धर्म के विषय में भी है। बस तुम लोगों को प्रतिस्पर्धा ही सूझती है।"

"स्वामिन्! आप मेरी बात का विपरीत अर्थ ले रहे हैं। मेरा तो आशय यही है कि जिसके बड़े सौभाग्य हों वही दीक्षा ले सकता है। शिवसुन्दर तो आचार्यश्री से बचपन से ही दूर था। फिर भी उसके भाव मुक्तिमार्ग पर चलने के हो गये। जिसके हृदय में उत्कट वैराग्य होता है, वह किसी के रोके रुकता नहीं है और जिसका वैराग्य मंद होता है, वह संतों की संगति में रहता हुआ भी कोरा रह जाता है"- उसने नगरश्रेष्ठी की ओर देखते हुए कहा- "क्या आपको अरुण ने कभी कहा है कि मुझे दीक्षा लेना है? मैं किस मुँह से कहूँ कि आप उसे गुरु-चरणों में भेंट कर दो, क्योंकि उसने मुझे कभी नहीं कहा कि मुझे दीक्षा लेना है। आपने मात्र शंका से ही उस पर प्रतिबन्ध लगाया है। मैं आपसे यही कहना चाहती हूँ कि आपका लगाया हुआ प्रतिबन्ध कितना वृथा है"- एक क्षण रुककर वह फिर बोली- "और बिना इच्छा वाले या मंद भाव वाले को भेंट चढ़ाकर, अपनी हँसी उड़ाना है क्या.."

नगरश्रेष्ठी ने हार मानते हुए कहा- "बस अब बहुत हो गया और कितना लम्बा भाषण दोगी?"- नगरश्रेष्ठी की भय के अभिनय की मुद्रा पर वह हँस पड़ी। श्रेष्ठी ने कहा- "कल्याणी के यहाँ तो कभी की सूचना भेज दी है। आचार्यदेव का संथारा चलेगा, तब तक वह यहीं रहेगी- यह प्रार्थना भी उसके श्वसुरजी से कर दी है, क्योंकि उसे यहाँ रहे बहुत लम्बा समय हो गया है। वहाँ से उत्तर भी आ गया है कि उसके सास-श्वसुर आदि द्वादशी की संध्या तक पहुँच जायेंगे। पर अरुण को समाचार नहीं भेज पाया और मैं भेज भी नहीं सकूँगा। तुम्हीं भेज देना। मुनीमजी आज ही जाने वाले हैं।"

सिद्धिदेवी यह बात सुनकर प्रसन्न हो गयी। वह प्रेम दरसाती हुई बोली- "अच्छा किया, आपने! पहले ही क्यों नहीं कह दिया। बात को इतनी घुमाने-फिराने की आपकी वृत्ति ही नहीं जाती।"- फिर चिन्ता व्यक्त करती हुई बोली- "परन्तु अरुण कैसे आ सकेगा? वह दूर है। आज दशमी हो गयी है। कब समाचार पहुँचेंगे और वह कब तक आ पायेगा। यदि वह नहीं पहुँच पायेगा, तो उसके मन में बड़ा खेद होगा।"

"अब क्या करें! जो होना था सो हो गया।"- यह कहते हुए नगरश्रेष्ठी वहाँ से चले गये।

सिद्धिदेवी ने भूर्जपत्र पर संक्षेप में समाचार लिखे और वह पत्र उसने मुनीमजी को दे दिया। परन्तु जब अरुण को वह पत्र मिला, तब वह कुशस्थलपुर की ओर प्रयाण करके एक मंजिल आगे आ गया था। नवमी के दिन उसका मन एकदम आकुल हो उठा और किसी अन्तःप्रेरणा से उसी दिन अपने नगर की ओर रवाना हो गया। समाचार पाते ही उसने अपनी गति तेज कर दी।

द्वादशी की संध्या को कल्याणी अपने ससुर, सास, जेठ, ननद और अपने लघु पुत्र के साथ कुशस्थलपुर आ गयी। उसके पुत्र की किलकारियों से भवन गूँजने लगा। उसने अरुण को वहाँ नहीं पाकर अपनी माता को इस बारे में पूछा। माता ने इतना ही कहा- "संभव है कल प्रातःकाल तक वह भी आ जाये।"

अरुण अरुणोदय के समय अपने नगर की ओर बढ़ रहा था। वह चिन्तन कर रहा था-"कैसी विडम्बना है। मैं महाकलायतन में अध्ययन करने इसलिये नहीं गया कि गुरुदेव का सामीप्य छूट जायेगा। परन्तु आज मैं गुरुदेव से कितना दूर हूँ और जो गुरुदेव से दूर था, महाकलायतन में जिसने अध्ययन किया और जिसे तत्त्वज्ञान अल्पतम ही प्राप्त हुआ है, वही शिवसुन्दर सदा के लिये गुरुचरणों में समर्पित होने जा रहा है.......।"

भवन के सन्मुख जाकर रथ खड़ा हो गया। चंडरश्मि भास्कर प्राची में कुछ ऊपर आ गया था। लगभग एक मुहूर्त जितना समय हो गया था। वह रथ से नीचे उतरा। उसने भवन में प्रवेश किया। उसे सबसे पहले कल्याणी ही मिली। उसने उसे देखते ही कहा- "अहो! आ गये ज्ञानीजी!" उसने बहिन को प्रणाम किया। कल्याणी ने आशीर्वाद दिया और बोली- 'अरे! ज्ञानीजी! बोल नहीं रहे हो! कैसे हो।"

"भगिनी! आपकी कृपा से आनन्द में हूँ। कब पधारीं आप।"

"कल संध्या को ही आयी हूँ। अम्ब से पूछा तो पता चला कि तुम बाहर हो। बहुत दुर्बल दिखाई दे रहे हो। भोजन करते हो कि नहीं? या व्यापार-चिन्ता अधिक है।"

विशेष वार्तालाप का अवसर नहीं था। वह और घर के सभी जन मुनिराज-विश्राम की ओर जाने की तैयारी कर रहे थे। उसने पिता, माता आदि को प्रणाम किया और उनसे आशीर्वाद लिया। सिद्धिदेव ने कहा- "आ गये! मुझे आशंका थी नहीं आ पाओगे। जाओ, जल्दी तैयार हो जाओ। मुनिराज-विश्राम पर आना।"

अरुण तैयार होने चला गया। (क्रमशः)

# संथारे के नारे

*श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'*

1. संयम में वीरा : यह संथारा
2. रत्नों में हीरा : यह संथारा
3. प्राणों से प्यारा : यह संथारा
4. जग से न्यारा : यह संथारा
5. गुरु कृपा से : यह संथारा
6. पुण्य धरा पर : यह संथारा
7. सोने से उज्ज्वल : यह संथारा
8. चन्दा से निर्मल : यह संथारा
9. सागर से गहरा : यह संथारा
10. कर्मों पर पहरा : यह संथारा
11. केसरी सिंह सा : यह संथारा
12. गज हस्ती सा : यह संथारा
13. नंदन वन सा : यह संथारा
14. चन्दन की खुशबू : यह संथारा
15. नश्वर काया : यह संथारा
16. सुख की छाया : यह संथारा
17. मन की समाधि : यह संथारा
18. मिट जाए व्याधि : यह संथारा
19. आकाश के जैसा : यह संथारा
20. मेरु से ऊँचा : यह संथारा
21. श्रद्धा की धारा : यह संथारा
22. सिद्धी का तारा : यह संथारा
23. चेतन की शक्ति : यह संथारा
24. भगवन की भक्ति : यह संथारा
25. मानसरोवर : यह संथारा
26. राजहंस सा : यह संथारा
27. सीप का मोती : यह संथारा
28. दीप की ज्योति : यह संथारा
29. संघ का गौरव : यह संथारा
30. संयम सौरभ : यह संथारा
31. त्याग बढ़ाता : यह संथारा
32. वैराग्य जगाता : यह संथारा
33. इतिहास बनाता : यह संथारा
34. भाव जगाता : यह संथारा
35. मोक्ष की आशा : यह संथारा
36. प्रेम की भाषा : यह संथारा
37. दया का उत्सव : यह संथारा
38. मृत्यु महोत्सव : यह संथारा
39. 'तीर्थ' का सपना : यह संथारा
40. धर्म है अपना : यह संथारा

*-राष्ट्रीय मंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 504, रिद्धी विनायक, दिग्विजयनगर, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)*

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमश:100)

# आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

*श्री धर्मचन्द जैन*

## (नाणत्ता)

**जिज्ञासा-** संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य वैक्रिय के किन-किन घरों में आकर उत्पन्न होते हैं?

**समाधान-** संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य वैक्रिय के निम्नांकित 34 घरों में आकर उत्पन्न होते हैं-

| | |
|---|---|
| सात नारकी के | 07 घर |
| दस भवनपति के | 10 घर |
| वाणव्यन्तर का | 01 घर |
| ज्योतिषी का | 01 घर |
| 12 देवलोक के | 12 घर |
| 9 ग्रैवेयक का | 01 घर |
| 4 अनुत्तर विमान का | 01 घर |
| सर्वार्थसिद्ध विमान का | 01 घर |
| कुल | 34 घर |

**जिज्ञासा-** नाणत्ता समझने की दृष्टि से उपर्युक्त 34 घरों को कितने भागों में विभाजित किया जाता है?

**समाधान-** उपर्युक्त 34 घरों को संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य की अपेक्षा से निम्नांकित दो भागों में विभाजित किया जाता है-

1. वैक्रिय के 15 घर (प्रथम नारकी का 1 घर, दस भवनपति के 10 घर, वाणव्यन्तर का 1, ज्योतिषी का 1 तथा पहले-दूसरे देवलोक के 2 घर)
2. वैक्रिय के 19 घर (दूसरी नारकी से सातवीं नारकी तक के 6 घर, तीसरे देवलोक से बारहवें देवलोक तक के 10 घर, नवग्रैवेयक का 1

घर, चार अनुत्तर विमान का 1 तथा सर्वार्थसिद्ध का 1 घर)

**जिज्ञासा-** संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य के वैक्रिय घरों में आने की अपेक्षा से उपर्युक्त दो भेद क्यों किये जाते हैं?

**समाधान-** दो भेद करने का कारण यह है कि प्रारम्भ के 15 घरों में तो कम से कम पृथक्त्व मास की आयु वाले सन्नी मनुष्य आकर उत्पन्न हो सकते हैं। किन्तु बाद के 19 घरों में कम से कम पृथक्त्व वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य ही आकर उत्पन्न हो सकते हैं। अर्थात् पहली नारकी तथा भवनपति से लेकर दूसरे देवलोक तक के देवों में पृथक्त्व मास (2 से 9 मास के लगभग) की आयु वाले सन्नी मनुष्य आकर उत्पन्न हो सकते हैं, जबकि दूसरी नारकी से लेकर सातवीं नारकी तथा तीसरे देवलोक से लेकर सर्वार्थसिद्ध विमान के 19 घरों में कम से कम पृथक्त्व वर्ष (2 से 9 वर्ष लगभग) की आयु वाले सन्नी मनुष्य आकर उत्पन्न हो सकते हैं।

यहाँ इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि 9 ग्रैवेयक तथा 5 अनुत्तर विमान के देवलोकों में उत्पन्न होने वाले सन्नी मनुष्यों की आयु लगभग 9 वर्ष की होना अनिवार्य है। क्योंकि इन देवलोकों में सर्वविरति चारित्र का पालन करने वाले ही उत्पन्न हो पाते हैं। सर्वविरति चारित्र को धारण करने के लिए लगभग 9 वर्ष की आयु (गर्भकाल+8वर्ष) कम से कम होनी ही चाहिए।

**जिज्ञासा-** संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य यदि वैक्रिय के 15 घरों में आकर उत्पन्न होते हैं तो किन-किन बोलों में नाणत्ता (अन्तर) पड़ता है?

**समाधान-** संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य यदि वैक्रिय के उपर्युक्त 15 घरों में आकर उत्पन्न होने वाले होते हैं तो उनमें जघन्य गमे से पाँच बोलों का तथा उत्कृष्ट गमे से तीन बोलों का, इस प्रकार कुल 8 बोलों का नाणत्ता पड़ता है।

जघन्य गमे से- 1. अवगाहना 2. ज्ञान 3. समुद्घात 4. आयुष्य और 5. अनुबन्ध इन पाँच बोलों का नाणत्ता पड़ता है। उत्कृष्ट गमे से- 1. अवगाहना 2. आयु और 3. अनुबन्ध इन तीन बोलों का नाणत्ता पड़ता

है।

**जिज्ञासा–** अवगाहना का नाणत्ता क्यों पड़ता है?

**समाधान–** जो पृथक्त्व मास की स्थिति वाला सन्नी मनुष्य वैक्रिय के उपर्युक्त 15 घरों में आने वाला होता है, वह जघन्य गमे वाला कहलाता है। ऐसे सन्नी मनुष्य की अवगाहना पृथक्त्व अंगुल अर्थात् 2 से 9 अंगुल के लगभग होती है। जबकि वैक्रिय के घरों में आने योग्य सन्नी मनुष्य की सामान्य (औधिक) अवगाहना पृथक्त्व अंगुल से लेकर 500 धनुष तक की होती है। जघन्य गमे से आने वाले सन्नी मनुष्य में मध्यम तथा उत्कृष्ट अवगाहना नहीं मिलती, इस कारण से अवगाहना का नाणत्ता पड़ता है।

**जिज्ञासा–** ज्ञान का नाणत्ता किस कारण से माना जाता है?

**समाधान–** पृथक्त्व मास की स्थिति वाला सन्नी मनुष्य जघन्य गमे से वैक्रिय के 15 घरों में आकर उत्पन्न होने वाला है, ऐसे सन्नी मनुष्य में गर्भावस्था में अधिकतम तीन ज्ञान (मति, श्रुत, अवधिज्ञान) अथवा तीन अज्ञान (मति, श्रुत, विभंग) हो सकते हैं। किन्तु मन:पर्याय ज्ञान नहीं हो पाता, क्योंकि मन:पर्याय ज्ञान अप्रमत्त संयत को ही होता हैं और अप्रमत्त संयत बनने के लिए कम से कम पृथक्त्व वर्ष आयु होना अनिवार्य है। औधिक रूप से वैक्रिय के घरों में उत्पन्न होने योग्य सन्नी मनुष्य में चार ज्ञान, तीन अज्ञान हो सकते हैं, किन्तु जघन्य गमे वाले में तीन ज्ञान, तीन अज्ञान ही मिलते हैं। मन:पर्याय ज्ञान नहीं मिलने के कारण ज्ञान का नाणत्ता माना जाता है।

**जिज्ञासा–** पृथक्त्व मास की स्थिति वाले सन्नी मनुष्य में केवल ज्ञान का नाणत्ता क्यों नहीं माना जाता है?

**समाधान–** यहाँ पर नाणत्ता ऐसे सन्नी मनुष्यों की अपेक्षा से बतलाये हैं, जो वैक्रिय के घरों में उत्पन्न होने वाले हैं जबकि केवल ज्ञान का धारक मनुष्य तो उसी भव में मोक्ष में जाता है। अर्थात् केवलज्ञानी वैक्रिय के घरों में उत्पन्न नहीं हो पाने के कारण से केवल ज्ञान का नाणत्ता नहीं बतलाया है।

**जिज्ञासा–** समुद्घात का नाणत्ता किस कारण से माना जाता है?

**समाधान–** जघन्य गमे वाले, पृथक्त्व मास की स्थिति वाले सन्नी मनुष्यों में पाँच समुद्घात (वेदनीय,कषाय, मारणान्तिक, वैक्रिय और तैजस) हो सकती है, किन्तु आहारक समुद्घात नहीं होती, इसलिए एक आहारक समुद्घात का नाणत्ता माना जाता है। आहारक समुद्घात चौदह पूर्वधारी प्रमत्त अनगार को ही होती है। पृथक्त्व मास की स्थिति वाले सन्नी मनुष्य में चौदह पूर्वों का ज्ञान हो नहीं पाता।

केवली समुद्घात का नाणत्ता नहीं मानने के कारण केवल ज्ञान के समान ही समझ लेना चाहिए।

**जिज्ञासा–** आयुष्य और अनुबन्ध का नाणत्ता क्यों माना जाता है?

**समाधान–** जघन्य गमे से वैक्रिय के 15 घरों में आने वाले सन्नी मनुष्य का आयुष्य पृथक्त्व मास का ही होता है, उससे कम अथवा अधिक नहीं होता। जबकि औघिक रूप से सन्नी मनुष्य का आयुष्य पृथक्त्व मास से लेकर एक करोड़ पूर्व वर्ष तक का होता हैं। आयुष्य में अन्तर पड़ने के कारण नाणत्ता माना जाता है। आयुष्य के समान ही अनुबन्ध होता है, अत: आयुष्य की तरह ही अनुबन्ध का भी नाणत्ता समझ लेना चाहिए।

**जिज्ञासा–** लेश्या, दृष्टि, योग तथा अध्यवसाय का नाणत्ता क्यों नहीं पड़ता है?

**समाधान–** जो सन्नी मनुष्य जघन्य गमे से वैक्रिय के 15 घरों में आकर उत्पन्न होने वाला है, उसकी स्थिति पृथक्त्व मास की होती है। इस पृथक्त्व मास की स्थिति में उस सन्नी मनुष्य में छहों लेश्याएँ, तीनों दृष्टियाँ, तीनों योग तथा दोनों अध्यवसाय मिल जाते हैं, इस कारण से इन चार बोलों में नाणत्ता नहीं पड़ता है।

*-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर*


## सामायिक उपकरण संघ कार्यालय में उपलब्ध

आपको सूचित करते हुए हर्ष है कि सामायिक उपकरण का सेट जिसमें दुपट्टी, चोलपट्टा, आसन, मुँहपत्ती, माला तथा प्रतिक्रमण की पुस्तक सम्मिलित है, संघ कार्यालय में लागत मूल्य से भी कम **रियायती दर पर 200/– रुपये** में उपलब्ध है। जोधपुर से बाहर पार्सल खर्च अतिरिक्त होगा।

*–पूरणराज अबानी, महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ*

नारी-स्तम्भ

# मातृत्व-प्रेम

*श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा*

कोलकाता शहर में एक धनी परिवार रहता था। परिवार में पति-पत्नी और सुमी बेटा था। सुमी की देख-भाल सोनलबाई किया करती थी। वह केवल स्तन-पान कराने के लिए प्रिया के पास ले जाया करती थी। वह चार मास का हुआ तब स्तन-पान भी छुड़ा दिया। यह बात उसके पति नमन को अच्छी नहीं लगी।

नमन ने कहा- "प्रिया तुम अपने बच्चे के साथ अन्याय कर रही हो। माँ का दूध शक्तिवर्धक एवं रोग प्रतिरोधक होता है। इसने तो तेरी गोद का आनन्द भी नहीं लिया है।"

प्रिया ने कहा- "देखो जी! स्तन-पान कराने से मेरी आकृति विकृत हो जाएगी।"

प्रिया बच्चे को अपने पास सुलाना पसन्द नहीं करती थी। नींद में व्यवधान हो जाता है। सुमी के पिता कम्पनी से आते तब उसे अपने पास सुलाते थे। बच्चे को भूख लगती और वह रोने लगता तब प्रिया कहती- इसे सोनल के पास पहुँचा दो। वह दूध पिला कर सुला देगी। नमन कहता, मैं पिला दूँगा। प्रिया कहती, सोनल को किसलिए रखा है। आप सो जाओ। थके हुए हो, सो जाइए। नमन का कारोबार अत्यधिक फैला हुआ था। चाहते हुए भी वह अपने बेटे को समय नहीं दे पा रहा था।

प्रिया देर से उठती थी। नाश्ते के लिए डाइनिंग टेबल पर आती थी, नाश्ता लगा हुआ मिलता। सोनल उनके खाने-पीने की देख-भाल में लगी रहती थी, तब वह सुडोल-सुन्दर बच्चा सोनल के आगे-पीछे घूमता था। कुछ समय के लिए सुमी अपने पिता की गोद में बैठता तब उसे अपार आनन्दानुभूति होती थी। उसे गोद में रहना अच्छा लगता था। पिता भी उसे दूर करना नहीं चाहता था। लेकिन व्यस्तता के कारण मजबूर था।

सोनल ने सुमी को सुप्रभात बोलना सिखाया। सुमी मधुर ध्वनि में तुतलाता अपने माता-पिता को सुप्रभात बोलता था, लेकिन प्रिया ने अपने बच्चे को अच्छी तरह से निहारा तक नहीं। बच्चे की किलकारी देखने के लिए उसके पास समय नहीं था। वह नाश्ता करके ब्यूटी पार्लर पर तैयार होने के लिए निकलती। वहाँ से ताश खेलने क्लब चली जाती थी। दस किटी पार्टियों की सदस्या थी। घर में अलग-अलग काम के लिए विश्वसनीय नौकर रखे हुए थे, जिससे घर का काम ठीक-ठाक चल जाता था। सुमी को नहलाना-धुलाना, दूध पिलाना यानी पूरी देख-भाल सोनल ही किया करती थी।

सुमी तीन वर्ष का हो गया तब नमन ने उसे बहुत अच्छी स्कूल में प्रवेश दिलवा दिया। 'अभिभावक मिलन दिवस' (Parents Meeting) में भी नमन अकेला ही जाता था।

प्रिया की ननद सुरभि जयपुर में रहती थी। विशेष कारणवश प्रिया को जयपुर जाना पड़ा। नमन को भी साथ जाना था, लेकिन कम्पनी के काम के लिए अचानक अमेरिका जाना पड़ा।

सुरभि प्रिया को लेने एयरपोर्ट पहुँची तो अपनी भाभी से पूछा- 'सुमी कहाँ है?'

प्रिया ने कहा- 'तुम्हारे भाई, अचानक कम्पनी के काम के लिए अमेरिका चले गए हैं, मेरे से वह सम्भलता नहीं हैं। इसलिए मैं उसे नहीं लाई हूँ।'

अरे भाभी! मैं उसे सम्भाल लेती, तीनों बच्चे साथ में खेलते।

प्रिया निपट कर जल-पान करने टेबल पर आई तब सुरभि, शौर्य और उनके दोनों बच्चे अवनी-आर्य भी पास बैठ गए। कुछ स्वयं की और कुछ इधर-उधर की बातें करने लगे। सुरभि-शौर्य स्वयं भी खाने का मजा ले रहे थे साथ में बच्चों को भी खिला रहे थे। प्रिया यह देखकर हैरान हो रही थी। कुछ समय पश्चात् सुरभि रसोईघर में गई और बच्चों के टिफिन तैयार कर पानी की बोतलों के साथ उनके स्कूल बैग में रख दिए। दोनों पति-पत्नी ने बच्चों के बैग उठाए और उन्हें स्कूल बस में बिठाने गए। वापस आकर तीनों गपशप मारने लगे। ननद और भाभी की अच्छी बनती थी।

सुरभि ने प्रिया को अखबार लाकर दिया और उससे कहा कि आप इसे पढ़िये तब तक मैं खाना बना लूँ, फिर कहीं घूमने चलेंगे। सुरभि-शौर्य रसोई में गए शौर्य ने सब्जियाँ काट दी और सुरभि ने खाना बना लिया। सुरभि महारानी कॉलेज में प्राध्यापिका थी। भाभी के आने के कारण उसने कॉलेज से तीन दिन का अवकाश ले लिया था।

प्रिया ने सुरभि से कहा-'तुम पूरे दिन मशीन की तरह काम करती रहती हो। कॉलेज जाती हो, घर का काम, बच्चों को सम्भालना। तुम बच्चों की परवरिश के लिए बाई रख लो और कुछ अधिक पैसे देकर खाना बनवा लिया करो। तुम दोनों की 'आय' अच्छी है, फिर क्यों माथापच्ची करती हो।'

सुरभि ने कहा- 'भाभी! बच्चों का काम करना मुझे अच्छा लगता है। खाना बनाने में शौर्य मेरी सहायता करते हैं। हम मनपसन्द का खाना बनाते हैं और गरमागरम खा लेते हैं। झाडू पोंछा एवं अन्य सफाई के लिए बाई आती है।

प्रिया ने कहा- 'अच्छा बताओ, किटी पार्टियों और क्लब में कब जाती हो? मैंने तो सुमी के लिए सोनल बाई को रख दिया। मुझे तो रसोई घर का और अन्य कोई भी काम नहीं

करना पड़ता। मैं तो सुबह तैयार होकर एवं नाश्ता करते ही अपने किटी पार्टी की सदस्यों के साथ ताश खेलने और हाउजी खेलने चली जाती हूँ। हमारे किटी पार्टी में दस सदस्या हैं। हम सब मिलकर वहाँ मौज-मस्ती करते हैं। जीवन का आनन्द लेती हूँ। मैं तो बच्चे की ओर देखती भी नहीं हूँ। क्यों गले में घण्टी बांधूँ? क्यों रातों की नींद उड़ाऊँ। भगवान् ने छप्पर फाड़ कर पैसा दिया है उसका आनन्द तो उठाऊँ। महीने में एक बार पार्टी देने की बारी आती है, पचास हजार में काम चल जाता है।

सुरभि सुनकर अवाक् रह गई, फिर बोली- 'भाभी! मैं तो इतना खर्च नहीं कर सकती। आपकी बातें मुझे अटपटी लग रही है। आपका सुमी के बिना कैसे मन लग रहा है। मैं तो बिना बच्चों के नहीं रह सकती। अपने कलेजा का टुकड़ा दूसरों के भरोसे पले और उनकी बाल क्रीड़ाओं का आनन्द वो उठाए यह मुझे तो उचित नहीं लगता। बच्चे के रूप-लावण्य को देखकर मन हरा हो जाता है। उनकी तुतलाती, खट्टी-मीठी बातें एवं उनकी बाल अदाएँ स्वर्गीय सुख देती हैं। कभी रूठना, कभी मनाना, खिलौने के लिए उछल-कूद करना, मचलना, उनके छोटे-छोटे जिज्ञासा भरे प्रश्न आत्मविभोर कर देते हैं। सामने देखो भाभी। दीवार पर तरह-तरह के चित्र और आड़ी-तिरछी लकीरे बनाई हैं, उन पर मैं कभी भी पेन्ट नहीं करवाऊँगी। क्योंकि इनमें इनका बचपन झलकता रहेगा। उनको दूर रखेंगे तो परस्पर प्रेम कैसे बढ़ेगा। अपने संस्कार से वंचित रह जाएँगे। बच्चे प्यार के भूखे होते हैं।

इतने में बच्चे स्कूल से आते ही जोर-जोर से ममा-ममा चिल्लाते हुए सुरभि के गले लग जाते हैं। ममा! आप बहुत अच्छी हो, कहकर उसके आगे-पीछे झूमने लगते हैं। फिर बच्चे स्कूल की बातें सुनाने लगे। सुरभि बच्चों के कपड़े बदलने के बाद उनके लिए खाना परोस कर लाई। बच्चे कहने लगे, मामी! हम आपके हाथ से खाना खाएँगे। प्रिया ने तो अपने बच्चे को भी कभी अपने हाथ से खाना नहीं खिलाया था। लेकिन लज्जा के मारे, प्यार भरे शब्दों को टालने का साहस वह न कर सकी। अवनि बोली- मामी! पहला ग्रास मुझे देना। इतने में आर्य बोला- मुझे बहुत जोर से भूख लगी है, इसलिए पहला ग्रास मुझे। प्रिया ने दोनों हाथों में ग्रास लिए और एक साथ दोनों को खिलाने लगी। एक बच्चा कहने लगा- मुझे दाल के साथ खिलाइए, तो दूसरे ने कहा मुझे भिण्डी की सब्जी के साथ खिलाइए। प्रिया को आनन्दानुभूति होने लगी। विशेष सुख की अनुभूति होने लगी। बच्चों को खाना खिलाते-खिलाते ध्यान आया, मेरा सुमी क्या कर रहा होगा? सोनल ने उसके मनपंसद का खाना बनाया होगा कि नहीं। दुपहरी में उसे सुलाया या नहीं? उसे आइसक्रीम बहुत पसन्द है। मुझे वह याद करता होगा या नहीं। अनेक प्रेम भरे प्रश्नों ने उसके मन-मस्तिष्क में घेरा डाल दिया। उसने अपने आपको बहुत कोसा- हाय! मैं सौन्दर्य और पैसे के नशे में सुमी के

बचपन की अमूल्य छवियाँ खो डाली। वह अपने आपको झकझोरने लगी।

प्रिया जिस आवश्यक कार्य को करने के लिए जयपुर आई थी, उसे निपटाकर दूसरे दिन ही कोलकाता के लिए रवाना हो गई। सुरभि ने बहुत कहा- 'भाभी! आपके तीन दिन के टिकिट हैं।

प्रिया ने कहा- 'मैं अब सुमी के बिना एक क्षण भी कहीं भी नहीं रुक सकती।'

*-ई-123, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003(राज.)*

## मृत्यु अपनी बने महोत्सव

*श्री मोहन कोठारी 'विनर'*

संलेखना-संथारा के संग, पंडित मरण को पाना है,
मृत्यु अपनी बने महोत्सव, अंतर भाव जगाना है।
संलेखना-संथारा के संग....।।टेर।।

जीवन की चलती ये सांसें, कब रुक जाये पता नहीं,
कब व्याधि जग जाये तन में, इसका भी कुछ पता नहीं।
आ जाये जब मौत निकट में, मन में शौर्य जगाना है।
संलेखना-संथारा के संग....।।1।।

जीवन की अंतिम घड़ियों में, देह मोह का त्याग करें,
भावों की श्रेणी चढ़कर के, पावन चिंतन हृदय भरें।
मोह माया के बंधन तजकर, अंतर ध्यान लगाना है।
संलेखना-संथारा के संग....।।2।।

शुभ भावों का ही सुफल है, संथारे की साधना,
सद्गति दे देती है हमको, सच्ची धर्म आराधना।
मृत्यु को आमंत्रित करके, प्रमोद भाव में आना है।
संलेखना-संथारा के संग....।।3।।

यूं तो सब मरते हैं लेकिन, पंडित मरण का क्या कहना,
आ जाये उपसर्ग भले ही, समभावों से है सहना।
हंसते, हंसते प्रसन्नचित्त से, मृत्यु को गले लगाना है।
संलेखना-संथारा के संग....।।4।।

*-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)*

युवा-स्तम्भ

# पहचानें आत्म-शक्ति को

श्री पारसमल चण्डालिया

मनुष्य को यह नहीं भूलना चाहिये कि आत्मा में अनन्त शक्ति और अनन्त ज्ञान विद्यमान है। आवश्यकता है सिर्फ उसे जानने और समझने की। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आत्म-शक्ति पर पूर्ण विश्वास होना चाहिये। उसे भली भांति समझना और जानना चाहिए कि-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।। -भगवद् गीता

इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, जल भिगो नहीं सकता और पवन उसे सुखा नहीं सकता। अतः मनुष्य अपनी सम्पूर्ण शक्ति से इसे जाने-पहचाने। आचार्यों का कथन है- 'य आत्मापहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघत्सोऽपिपासः सत्यकामः सत्यसंकल्पः सोन्वेष्टव्यः स विजिज्ञासितव्यः।' अर्थात् जो आत्मा पाप रहित, जरा रहित, मृत्यु रहित, शोक रहित, भूख रहित, प्यास रहित, सत्यकाम और सत्य संकल्प है उसे खोजना चाहिये, उसे जानने की इच्छा करनी चाहिये।

मनुष्य को अपनी शक्ति अपनी आत्मा से प्राप्त करनी चाहिये। जिन गुणों को वह श्रेयस्कर मानता है वे उसकी आत्मा की ही शक्तियाँ हैं। आत्मिक गुणों के उत्कर्ष से वह अपनी आत्मा को परमात्मा बना सकता है, क्योंकि-

आत्मा और परमात्मा में कर्म का ही भेद है।
काट दे यदि कर्म तो फिर भेद है ना खेद है।।

अतः अपनी आत्मा को जानना ही अपने सत्य स्वरूप को जानना है, स्व घर को जानना है। यही मनुष्यता का जागरण है। आत्मा निजघर को जानकर, आत्म-शक्ति को पहचान कर ही निज घर में आकर सच्चे आनन्द का अनुभव कर सकता है।

आत्म-शक्ति की पहचान आत्म-चिन्तन एवं आत्मप्रेक्षण से होती है। आत्म-चिन्तन ही संसार में सारभूत है। अन्य सभी प्रकार के चिन्तन असार है। स्वेटमार्डन के शब्दों में- 'आत्मचिन्तन में वह शक्ति है जो सहस्र विपत्तियों का सामना कर उस पर विजय प्राप्त कर सकती है। चिन्तन की मात्रा हममें जितनी होगी, उतना ही हमारा सम्बन्ध अनन्त जीवन और अनन्त शक्ति के साथ गहरा होता जाएगा।'

प्रत्येक व्यक्ति चिन्तन करे- मैं आत्मा हूँ और अपनी आत्मिक शक्तियों को दृढ़तापूर्वक धारण किये हुए हूँ। चिन्तन के विषय में दशवैकालिक सूत्र में प्रभु ने फरमाया है- 'किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं किं सक्कणिज्जं न समायरामि' अर्थात् प्रत्येक साधक प्रतिदिन चिन्तन करे। मैंने आत्महित के लिए क्या कर लिया है और क्या करना शेष है? कौनसा ऐसा शक्य कार्य है जिसको मैं नहीं कर पा रहा हूँ/पा रही हूँ। इस प्रकार आत्म चिन्तन करने से आत्मोन्नति के मार्ग पर गति अग्रसर होती चली जाती है। चिन्तन के द्वारा ही आत्मा अपनी शक्ति को जानती है और उस शक्ति के द्वारा कर्म बंधनों का नाश करने में समर्थ बनती है। स्व-स्वरूप को समझ लेने वाले साधक को कोई भी शक्ति आगे बढ़ने से रोक नहीं सकती। आत्मा के विषय में अधिक क्या कहा जाय, केवल इतना ही कि-

**शुद्ध बुद्ध चैतन्य घन, स्वयं ज्योति सुखधाम।**
**बीजूं कहिये केटलुं कर विचार तो पाम।।**

'संपेहए अप्पगमप्पएणं' दशवैकालिक सूत्र चूलिका 2 के इस सूत्र के अनुसार हम अपने आप, अपनी-अपनी आत्मा का अपनी आत्मा के द्वारा निरीक्षण करें। अपनी आत्मा का दर्शन अपनी आत्मा की पहचान ही सच्चा दर्शन है। आत्मा के स्वरूप की प्रतीति, आत्म-स्वरूप का विश्वास और आत्म-स्वरूप पर आस्था होना ही सम्यग्दर्शन है। सम्यग्दर्शन ही निजघर प्राप्ति का, शाश्वत सुख का मूल है। अतः निजघर-आत्मा को जानें। आत्मा को जाने बिना आज का मानव अशांत, व्याकुल, निराश और कुंठाग्रस्त है, क्योंकि 'पर' में अशांति है और 'स्व' में शांति है। पर- घर का त्याग कर स्व-घर में लौटेगा तब ही शांति-समाधि को प्राप्त कर सकेगा। अतः

**अशांति चाहिये तो दुनिया से दोस्ती करो।**
**शांति चाहिये तो स्वयं से दोस्ती करो।।**

*-7/14, उत्तरी नेहरु नगर, बिट्ठल बस्ती, ब्यावर-305901 (राज.)*

## साधक वर्ग की दशा

आज के साधकवर्ग की स्थिति भी बड़ी विचित्र है। उसका भी अधिकांश समय राग-द्वेष में सनकर यह तेरी सम्प्रदाय यह मेरी सम्प्रदाय, यह तेरा भक्त यह मेरा भक्त, यह तेरा क्षेत्र यह मेरा क्षेत्र, यह तेरे गुरु यह मेरे गुरु, इस प्रकार लड़-झगड़कर समय व्यर्थ खोने में जा रहा है। पर जिनवाणी समझाती है कि इसी खींचातानी को छोड़कर धर्म के सीजन में धर्म की खेती लहलहाने का सत्प्रयत्न करें। क्योंकि ''वेलारा बोयोड़ा मोती नीपजे।'' *-जीवन अमृत की छाँव से संकलित*

स्वास्थ्य-विज्ञान

# प्रभावशाली स्वावलम्बी लीवर शुद्धीकरण चिकित्सा

## (बिना शल्य चिकित्सा के पित्ताशय की पथरी एवं हृदयघात से छुटकारा)

*डॉ. चंचलमल चोरडिया*

### स्वावलम्बी चिकित्सा क्यों प्रभावशाली?

विकार रोगों का मूल होता है। जितने ज्यादा विकार होते हैं, व्यक्ति उतना ही रोग ग्रस्त होता है। शरीर में जमे विकारों के कारण शरीर, मानसिक विकारों के कारण मन और आत्मिक विकारों के कारण आत्मा विकारग्रस्त हो जाती है। आत्मा, मन एवं शरीर की विकार मुक्त अवस्था ही सम्पूर्ण स्थायी स्वास्थ्य की परिचायक होती है। जितने ज्यादा विकार होते हैं, उतना ही व्यक्ति वास्तव में रोग ग्रस्त होता है। प्राय: अधिकांश प्रभावशाली स्थायी उपचार विकारों के शुद्धीकरण के सिद्धान्त पर ही प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से कार्य करते हैं। संयोग-वियोग, हानि-लाभ, प्रतिकूलता- अनुकूलता में समभाव रखने एवं तप द्वारा पूर्व उपार्जित कर्मों का क्षय करने से कर्मजन्य आत्मिक विकार दूर होते हैं एवं आत्मा शुद्ध स्वरूप को प्रकट कर परमात्मत्व रूप में परिवर्तित हो जाती है।

स्वाध्याय, स्वदोष निरीक्षण एवं उसमें सुधार, पश्चात्ताप एवं प्रायश्चित्त, सकारात्मक चिन्तन, ध्यान एवं कषायों के शमन से मानसिक विकार दूर होते हैं, जिससे मानसिक स्वस्थता प्राप्त होती है। परन्तु आजकल अधिकांश प्रचलित चिकित्सा पद्धतियाँ मात्र शरीर स्वास्थ्य तक ही अपना कार्य क्षेत्र सीमित रखती हैं एवं इस हेतु आत्मा और मन को विकारी बनाने में भी कभी-कभी संकोच नहीं करतीं, जबकि स्वावलम्बी अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियाँ निर्दोष होती हैं एवं यथासंभव शरीर का उपचार करते समय करणीय-अकरणीय, न्याय-अन्याय, वर्जित-अवर्जित, हिंसा-अहिंसा, भक्ष्य-अभक्ष्य, हानि-लाभ, राहत-उपचार का विवेक रखती है। प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों एवं उपचार से पड़ने वाले दुष्प्रभावों की उपेक्षा नहीं करतीं। अत: अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों से अधिक प्रभावशाली होती है।

### शरीर में विषैले विकार जमा होने के कारण

हमारा आधुनिक खान-पान, रहन-सहन, चिन्तन-मनन, आचार-विचार, आसपास का बाह्य प्रदूषित वातावरण, रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाइयों से उत्पन्न एवं

मिलावट वाली आहार सामग्री, अनावश्यक दवाइयों का सेवन एवं शारीरिक परीक्षण, असंयमित जीवन शैली, आणविक तरंगों (**Mobile, T.V., Computer, X-Ray, Sono-Graphi, M.R.I., C.T. Scanning**) का दुष्प्रभाव, स्वास्थ्य विरोधी सरकारी नीतियाँ, स्वास्थ्य के प्रतिकूल आवास एवं प्रतिकूल व्यावसायिक वातावरण, वृद्धावस्था, नकारात्मक सोच, मानसिक आवेग, अनियन्त्रित इच्छाएँ एवं कामभोग की प्रवृत्तियाँ इत्यादि शरीर में नवीन कोशिकाओं के सृजन एवं मृत कोशिकाओं के रूप में विषैले पदार्थों के जमा होने के प्राय: प्रमुख कारण होते हैं।

**शुद्धीकरण चिकित्सा (Cleansing Therapy)**

शारीरिक स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए शरीर के सभी अंगों एवं तंत्रों का हानिकारक विषैले अनावश्यक विकारों (**Toxins**) से शुद्धीकरण होना आवश्यक है। यदि इन विकारों को शरीर से निष्कासित कर दिया जाए तो अनेक रोगों का सहज उपचार हो सकता है। शरीर को विकारों से मुक्त कर शुद्धीकरण करने की चिकित्सा पद्धति क्लींजिंग चिकित्सा (**Cleansing Therapy**) कहलाती है।

शरीर में जमे विषैले अनावश्यक विकारों के कारण सम्बन्धित अंग अपनी पूर्ण क्षमता से कार्य नहीं कर सकते। परिणामस्वरूप शरीर में प्राण ऊर्जा का प्रवाह आवश्यकतानुसार नहीं हो पाता एवं शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने लगती है। शरीर में पाचन तंत्र, श्वसन तंत्र, रक्त परिभ्रमण, विसर्जन, अस्थि, मज्जा, नाड़ी आदि सभी तंत्र प्रभावित होने लगते हैं एवं शरीर में रोग होने लगते हैं।

जैसा कि हम अनुभव करते हैं कि प्राणायाम से श्वसन तंत्र के, उपवास, तपस्या आदि से आमाशय के, एनिमा से आँतों के, मसाज से मांसपेशियों के, व्यायाम से जोड़ों में जमे विकार, सूर्य मुखी तेल गंडूस से रक्त के विकार कुछ सीमा तक दूर किये जा सकते हैं। आयुर्वेद की पंच कर्म क्रिया में जिस प्रकार वमन, विरेचन, नेति, स्वेदन इत्यादि के माध्यम से शरीर के विषैले तत्त्वों को निकालकर रोगी को रोगमुक्त किया जा सकता है। उसी प्रकार क्लींजिग थैरेपी में हमारे आसपास सहज रूप से उपलब्ध औषधीय गुणों वाले नैसर्गिक पदार्थों के सेवन से शरीर से रोगकारक विषैले तत्त्वों को शरीर से निष्कासित किया जाता है। भारत में डॉ. पीयूष जी सक्सेना ने शरीर में लीवर, गुर्दों, एसीडिटी, जोड़ों जैसे अनेक अंगों एवं अवयवों की क्लींजिंग पर शोध किया है। जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों के साथ सामंजस्य रखते हुए अपना कार्य करती है। इन विभिन्न शुद्धीकरण प्रक्रियाओं की अधिक जानकारी के लिए आप निम्न वेबसाइट **www.drpiyushsaxena.com, www.thetemple ofhealing.org** एवं **www.chordiahealthzone.in** देख सकते हैं।

अमेरिका में ऐसी चिकित्सा का प्रचलन गत शताब्दी से ही था, जिसकी विस्तृत जानकारी **www.cure zone.com** पर उपलब्ध है।

## लीवर शुद्धीकरण चिकित्सा

### लीवर एवं उसके कार्य

लीवर (यकृत) एवं गुर्दे शरीर के दो ऐसे अंग हैं जो लगभग 75 प्रतिशत गड़बड़ी की अवस्था में भी अपना कार्य करते रहते हैं। अत:उनके रोगग्रस्त होने का प्रारम्भ में पता ही नहीं लगता।

लीवर हमारे शरीर का त्वचा के पश्चात् दूसरा सबसे बड़ा अंग होता है। लीवर शरीर में दायीं ओर डायाफ्राम रेखा से नीचे स्थित होता है, जिसका अन्तिम सिरा बांयी और ठीक पेट के नीचे होता है। इसके ठीक नीचे मध्य भाग में गालब्लेडर (पित्ताशय) होता है। इसका प्रमुख कार्य एक रसायन को तैयार करना है, जिसे पित्त कहते हैं, जो भोजन में मिले हुए वसा व नाइट्रोजन युक्त हानिकारक पदार्थों के चयापचय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शरीर का प्रमुख रासायनिक कारखाना होता है। लीवर पाचन की सभी जटिल प्रक्रियाओं को अंजाम देता है। यह शरीर के लिए अपरिचित या हानिकारक तत्त्वों को शरीर के लिए उपयोगी तत्त्वों में परिवर्तित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लीवर एक तरह का तरल पदार्थ पैदा करता है जो रक्त को गाढ़ा रखता है, जिससे चोट लगने पर शरीर से रक्त बहने से रुक जाता है। साधारणतया एक वयस्क व्यक्ति के लीवर का वजन उसके शरीर के वजन का लगभग दो प्रतिशत होता है। जन्म के समय बच्चों में यकृत का वजन उसके शरीर के वजन का लगभग 5 प्रतिशत होता है।

### लीवर/पित्ताशय में गड़बड़ी के लक्षण

लीवर (यकृत), गालब्लेडर (पित्ताशय) के बराबर कार्य न करने से आँखों संबंधी विभिन्न रोग, पित्ताशय की पत्थरी, पीलिया, भूख न लगना, अपाचन, पेट एवं आंतों में मरोड़े चलना, पेट में सूजन, गैस बनना, हाथों में कम्पन एवं हलन-चलन में कठिनाई, मांसपेशियों में अकड़न एवं दर्द, स्वभाव में चिड़चिड़ापन एवं क्रोध शीघ्र आना, स्मरण शक्ति कमजोर होना, घबराहट, श्वास फूलना, तेज बुखार या एलर्जी, बार-बार बुखार आना, बच्चों के विकास में अवरोध, हर्निया, मासिक सम्बन्धी तकलीफें, रात्रि में पसीना आना, लू लगना, अधिक पेशाब आना, कमजोरी, बदन में खुजली, रक्त बनने में अवरोध, रक्त की कमी, थूक में रक्त आना, मुँह में खारापन, जीभ पर मैल जमना, मुँह में पानी भर जाना, खट्टी डकारें आना इत्यादि रोग-लक्षण प्रकट होते हैं।

## लीवर शुद्धीकरण (Cleansing) से लाभ

लीवर शुद्धीकरण से मात्र लीवर ही विकार रहित नहीं बनता, अपितु सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। चीनी पंच तत्त्व के यिन-यांग सिद्धान्तानुसार लीवर-पित्ताशय की प्राण ऊर्जा तिल्ली-आमाशय की प्राण ऊर्जा को नियन्त्रित रखती है और फेफड़े, बड़ी आंत की प्राण ऊर्जा से नियन्त्रित होती है। साथ ही लीवर-पित्ताशय को प्राण ऊर्जा गुर्दे-मूत्राशय से प्राप्त होती है और हृदय व छोटी आंत में वह ऊर्जा लीवर-पित्ताशय से जाती है। अत: लीवर-पित्ताशय का शुद्धीकरण, हृदय, फेंफड़े, तिल्ली, गुर्दों, छोटी आंत, बड़ी आंत, आमाशय, मूत्राशय जैसे शरीर के सभी अंगों को प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से रोग मुक्त रखने में सहायक होता है। लीवर-पित्ताशय की मुख्य ऊर्जा वायु होती है, जिसका शरीर के सभी प्रकार के हलन-चलन से सम्बन्ध होता है। वायु ऊर्जा का शरीर की मांसपेशियों एवं मज्जा तंत्र तथा आंखों से सीधा सम्बन्ध होता है। अत: लीवर क्लींजिंग से शरीर में आंखों, हलन-चलन तथा मांसपेशियों से सम्बन्धित रोगों में भी चमत्कारिक परिणाम आते हैं।

लीवर शुद्धीकरण हृदय रोग, एलर्जी, अस्थमा, मधुमेह, साइटिका, स्पोंडोलाइटिस, प्रोस्टेट ग्रन्थि के बढ़ने जैसी गम्भीर समस्याओं के निराकरण के साथ शरीर के सभी छोटे-बड़े रोगों के उपचार में कुछ कम तो कुछ अधिक रूप से प्रभावशाली होता है। फिर वे समस्याएँ चाहे माहवारी से जुड़ी हुई हों अथवा रजोनिवृत्ति से, मोटापे की समस्या हो अथवा हड्डियों से सम्बन्धित।

सभी प्रकार के सिरदर्द, अस्पष्ट सोच, स्मरण शक्ति में कमी, स्वभाव में चिड़चिड़ापन, भय, घबराहट, थकान, रक्त में सुगर का असन्तुलन, स्तनों में कठोरपन, मांसपेशियों की जकड़न, उन्माद, अवसाद, थॉयराइड की गड़बड़ी, पांव एवं घुटनों की सूजन, स्त्रियों के प्रजनन सम्बन्धी रोग, वृद्धावस्था के कारण त्वचा में होने वाली शुष्कता, अनिद्रा, मूत्र त्याग में जलन जैसे अनेक रोगों में काफी प्रभावशाली परिणाम आते हैं। इस प्रक्रिया से किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव की प्राय: संभावना नहीं रहती।

त्वचा मुलायम हो जाती है एवं उसमें निखार आकर वह साफ हो जाती है, वह आकर्षक लगने लगती है। नाखून गुलाबी रंग के हो जाते हैं तथा बाल भी स्वस्थ, चमकीले व मुलायम हो जाते हैं।

## लीवर क्लींजिंग क्यों करें ?

लीवर के शुद्धीकरण से न केवल लीवर एवं पित्ताशय सम्बन्धी उपर्युक्त वर्णित सभी रोगों से बचाव होता है, अपितु उनसे छुटकारा भी मिलता है।

1. हृदयघात एवं बाईपास की सम्भावना कम हो जाती है।
2. सभी प्रकार की एलर्जी से मुक्ति होती है।
3. पित्ताशय की पथरी निकालने हेतु शल्य चिकित्सा से बचा जा सकता है।
4. मधुमेह नियन्त्रित रहता है।
5. अस्थमा में बहुत राहत मिलती है।

**लीवर क्लींजिंग में काम आने वाले आवश्यक पदार्थ**

| | |
|---|---|
| 1. एप्सम साल्ट (मैगनेशियम सल्फेट)- | 80 ग्राम या 20-20 ग्राम के चार पैकेट |
| 2. एक्स्ट्रा वर्जिन ऑलिव आइल- | 250 मिली लिटर |
| 3. फलों का रस- | 250 मिली लिटर |

**एप्सम सॉल्ट के प्रयोग से रक्तचाप नहीं बढ़ता**

प्राय: उच्च रक्तचाप के रोगियों को एप्सम सॉल्ट लेने में भय लगता है। परन्तु इसके गुण धर्म सामान्य नमक से भिन्न होते हैं। यह मेगनेशियम सल्फेट होता है। सामान्य नमक के विपरीत एप्सम सॉल्ट रक्तचाप कम करता है। अत: जिनके रक्तचाप सामान्य से बहुत कम रहता है, उन्हें एप्सम सॉल्ट की मात्रा कुछ कम कर लीवर क्लींज करना चाहिए।

**लीवर क्लींज हेतु एक्सट्रा ऑलिव आइल ही क्यों आवश्यक ?**

लीवर क्लींज हेतु साधारण ऑलिव आइल नहीं लेना चाहिए। एक्स्ट्रा वर्जिन ऑलिव ही प्रयोग में लेना आवश्यक होता है। इस तेल के निर्माण की प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की ताप ऊर्जा रासायनिक प्रक्रिया, रेडिएशन, माइक्रोवेव इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जाता। सिर्फ प्रेशर या दबाव से तेल प्राप्त किया जाता है। यह रिफाइण्ड नहीं होता और पूरी तरह से नैसर्गिक होता है। अत: अन्य तेलों के विपरीत विशेष प्रक्रिया द्वारा निर्मित किये गए एक्स्ट्रा वर्जिन ऑलिव आइल से रक्त में कोलेस्ट्रॉल नहीं बढ़ता।

**लीवर क्लींजिंग कैसे करें ?**

लीवर क्लींजिंग हेतु चार खुराक 20-20 ग्राम एप्सम साल्ट की 200 मिली लीटर पानी में मिलाकर एवं एक्स्ट्रा वर्जिन ऑलिव ऑइल की दो खुराक (पहली खुराक में 175 मिली लीटर में उतना ही फलों का रस मिलाकर एवं दूसरी खुराक में 75 मिली लीटर में उतना ही फलों का रस मिलाकर) लेनी पड़ती है। उपचार प्राय: खाना खाने के कम से कम 4 घण्टे के बाद प्रारम्भ होता है। खाना खाने के लगभग 4 घण्टे या उससे जितना समय ज्यादा हो, एप्सम साल्ट की पहली खुराक लेनी चाहिए। उसके लगभग 2 घण्टे के पश्चात् 20 ग्राम एप्सम सॉल्ट की दूसरी खुराक लें। उसके लगभग 2 घण्टे पश्चात् एक्स्ट्रा वर्जिन

ऑलिव ऑइल को किसी भी फल के रस में 175 मिली लीटर वाली खुराक लेकर कुछ समय दाहिनी करवट लेट कर पूर्ण आराम करना चाहिए एवं लगभग 8 घण्टे के पश्चात् एप्सम सॉल्ट (20 ग्राम) की तीसरी खुराक लेनी चाहिए। उसके लगभग 2 घण्टे पश्चात् एक्सट्रा वर्जिन ऑलिव ऑइल जो 75 मिली लीटर बचा है उसको उतना ही ताजे फलों के रस में मिलाकर लेना चाहिए। उसके लगभग दो घण्टे पश्चात् एप्सम सॉल्ट की चौथी खुराक लेनी चाहिए।

उदाहरण के लिए जिस दिन लीवर क्लींजिंग करना हो, रात्रि में भोजन न करने वालों को प्रात: 10 बजे अपना खाना खा लेना चाहिए। उसके पश्चात् दोपहर लगभग 2 बजे एप्सम सॉल्ट की पहली खुराक, दोपहर 4 बजे एप्सम सॉल्ट की दूसरी खुराक एवं सायंकाल 6 बजे एकस्ट्रा वर्जिन ऑलिव आइल 175 मिली लीटर को उतने ही ताजे फलों के रस में मिलाकर लेना चाहिए एवं कुछ देर के लिए दायीं करवट लेकर लेट जाना चाहिए। एप्सम सॉल्ट की खुराक लेने के पश्चात् प्राय: डायरिया होने की पूर्ण संभावना रहती है। अत: लीवर कलींज अवकाश के दिन ही करना चाहिए।

एप्सम सॉल्ट की तीसरी खुराक दूसरे दिन प्रात:काल सूर्योदय के पश्चात् लगभग 7.00 बजे लेनी चाहिए एवं लगभग 2 घण्टे के बाद शेष बची एकस्ट्रा ऑलिव आइल की 75 मिली लीटर को उतने ही फलों के रस में मिलाकर लेना चाहिए। उसके लगभग 2 घण्टे के बाद एप्सम सॉल्ट की चौथी खुराक लेनी चाहिए। एप्सम सॉल्ट की आखिरी खुराक के सेवन के लगभग एक घण्टे के पश्चात् कुछ हल्का सुपाच्य भोजन ग्रहण किया जा सकता है और उसके लगभग 3 से 4 घण्टे के पश्चात् सामान्य भोजन किया जा सकता है। क्लींजिंग करते समय किसी भी प्रकार का भोजन नहीं करना चाहिए, परन्तु यदि अति आवश्यक हो तो कुछ मात्रा में फलों का रस लिया जा सकता है।

**जैन साधुओं के लिए लीवर शुद्धीकरण करने हेतु संशोधित समयावधि**

जैन साधु सूर्यास्त के पश्चात् एवं सूर्योदय के कुछ समय पश्चात् तक आहार एवं पानी आदि ग्रहण नहीं करते एवं उनके साधु जीवन की मर्यादाओं के अनुसार लीवर शुद्धीकरण की उपर्युक्त ढंग से खुराक लेना संभव नहीं होता। उनका जीवन पूर्णरूपेण तप और संयम से ओतप्रोत होता है। अत: वे लीवर शुद्धीकरण हेतु उपर्युक्त छह खुराकों को निम्न अन्तराल में लेकर भी अपेक्षित परिणाम पा सकते हैं।

एप्सम सॉल्ट की पहली खुराक प्रात: नवकारसी के तुरन्त पश्चात् , दूसरी खुराक उसके डेढ़ घण्टे के पश्चात्, तीसरी एवं तेल की प्रथम खुराक उसके डेढ़ घण्टे पश्चात्, एप्सम सॉल्ट की चौथी खुराक तीसरी खुराक के कम से कम पाँच घण्टे पश्चात्, पाँचवीं

तेल की खुराक उसके डेढ़ घण्टे पश्चात् तथा एप्सम सॉल्ट की अंतिम एवं छठी खुराक उसके एक से डेढ़ घण्टे पश्चात् लेनी चाहिए।

तीसरी एवं चौथी खुराक के मध्य यथासम्भव दायीं करवट लेकर लेटने से उपचार अधिक प्रभावशाली हो जाता है।

लीवर क्लींजिंग करते समय प्राय: डायरिया होता है, जिससे घबराना नहीं चाहिए। सामान्य किस्म के डायरिया में जहाँ कई बार इलाज की आवश्यकता होती है वहीं लीवर क्लींज के कारण होने वाला डायरिया 4 से 6 घण्टे में स्वत: ठीक हो जाता है। डायरिया में पित्ताशय से निकलने वाले हरे रंग के पथरी के टुकड़ों को स्पष्ट देखा जा सकता है। उपचार के पश्चात् व्यक्ति अपने आपको तरोताजा एवं ऊर्जावान अनुभव करता है।

**लीवर क्लींजिंग से बाई-पास में राहत क्यों?**

लीवर शुद्धीकरण से LDL कोलेस्ट्रॉल जो हृदय के लिए हानिकारक होता है, वह बाहर निष्कासित हो जाता है। अत: हृदयघात अथवा बाई-पास की संभावना अपने आप कम हो जाती है। लीवर क्लींजिंग के पश्चात् जब लीवर में LDL कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम हो जाती है तब शरीर के अन्य भाग में जहाँ कोलेस्ट्रॉल की मात्रा सर्वाधिक होती है, जैसे- कोरोनरी आर्टरी आदि में, वहाँ कोलेस्ट्रॉल खिंचकर लीवर की ओर आता है। परिणामस्वरूप रक्त की धमनियों में कोलेस्ट्रॉल के जमाव के कारण उत्पन्न अवरोध कम हो जाता है, जिससे बाई-पास की संभावना भी कम हो जाती है। अधिकांश व्यक्तियों को यह आशंका रहती है कि ऑयल पीने से कोलेस्ट्रॉल बढ़ जायेगा, परन्तु एक्स्ट्रा वर्जिन ऑलिव ऑइल के सेवन से कोलेस्ट्रॉल नहीं बढ़ता।

**लीवर क्लींजिंग कौन कर सकता है?**

साधारण सी सावधानी रखने पर लीवर क्लींज 10 वर्ष के बच्चे से लेकर 90 वर्ष तक का वृद्ध भी कर सकता है। जो भी व्यक्ति एक बार लीवर क्लींज कर लेता है वही उसके चमत्कारी प्रभावों से अवगत हो उसका प्रशंसक बन जाता है। अत: प्रत्येक स्वास्थ्य प्रेमी को एक बार लीवर क्लींज कर उसके चमत्कारिक परिणामों का अवश्य अनुभव कर लेना चाहिए। इससे प्राय: किसी भी प्रकार के दुष्प्रभावों की संभावना नहीं रहती। उपचार सहज, सरल, सुलभ, सस्ता एवं अवधि चन्द घण्टों की होती है। अस्पताल में जाकर परीक्षण कराने अथवा डॉक्टर के परामर्श की आवश्यकता नहीं होती। प्रारम्भ में लीवर क्लींज दो-दो सप्ताह के अन्तराल में करना चाहिए, जब तक कि लीवर-पित्ताशय से सभी पत्थर न निकल जायें। उसके पश्चात् टॉक्सिन की सफाई के लिए 6 महीने के अन्तराल में लीवर क्लींज कर लेना काफी होता है। प्राय: ऐसा अनुभव किया गया है कि 5-6 बार लीवर

क्लींज से सभी प्रकार की एलर्जी से छुटकारा मिल जाता है तथा सभी प्रकार के रोगों में राहत मिलती है। दवाइयों की मात्रा कम हो जाती है अथवा पूर्णरूप से छूट जाती है।

लीवर क्लींज के साथ-साथ यदि नाभि को अपने केन्द्र में व्यवस्थित कर लिया जाए, दोनों पैरों को बराबर कर लिया जाए तथा मेरुदण्ड को संतुलित कर लिया जाए तो उपचार की प्रभावशालिता काफी बढ़ जाती है। **परन्तु इसके साथ-साथ एक्यूप्रेशर, शिवाम्बु, चुम्बकीय चिकित्सा, स्वर, सूर्यमुखी तेल के गंडूस, रोग ग्रस्त भाग पर मैथी का स्पर्श, प्राणिक मुद्राएँ एवं प्राणायाम जैसी स्वावलंबी चिकित्साओं का सहयोग लिया जाए तो अधिकांश रोगों में दवाइयों की पराधीनता से प्रायः शीघ्र मुक्ति मिल सकती है।** जिसकी विस्तृत जानकारी आपको हमारी वेबसाइट **www.chordiahealth zone.in** से प्राप्त हो सकती है।

*-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)*

*फोन: 0291-2641454, मोबाइल : 094141-34606*

**E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com,**

**Website: www.chordiahealthzone.in**

## स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित उपर्युक्त आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर **15 जनवरी 2017** तक डॉ. चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं डाक पते सहित सीधे प्रेषित करें। विलम्ब से प्राप्त उत्तरों को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

**प्रश्नः-**

1. स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धतियाँ क्यों प्रभावशाली हैं?
2. क्लीजिंग चिकित्सा क्या है?
3. लीवर की सफाई से क्या लाभ है?
4. क्या एप्सम सॉल्ट का सेवन उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए हानिकारक है?
5. क्या ऑलिव आयल से हृदयघात की संभावनाएँ रहती हैं?
6. क्या आपने लीवर क्लीजिंग किया है? यदि हाँ तो आपका अनुभव क्या रहा? यदि नहीं किया तो क्यों?
7. लीवर क्लीजिंग से हृदयघात एवं अन्य रोगों की संभावना क्यों कम हो जाती है?

बाल-स्तम्भ

# पाँच माशा स्वर्ण

*मुनि सुमेरमलजी*

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जनवरी 2017 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

---

सेठ गंगभद्र के चार लड़के थे। मथुरा नगर में उसका अच्छा व्यापार चलता था। चारों ही लड़के पढ़-लिखकर योग्य हो गये तथा सेठ के काम में हाथ बंटाने लगे। सेठ ने अनुकूल अवसर पर चारों के विवाह कर दिये। सबसे छोटी पुत्रवधू मदनमंजरी बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की थी, क्योंकि उसके पीहर में धर्म का अच्छा वातावरण था। उसको ससुराल में पीहर जैसा धार्मिक वातावरण तो नहीं मिला, फिर भी वहाँ धार्मिक संस्कार सहज ही विद्यमान थे। वहाँ नियमित उपासना कोई नहीं करता था।

गंगभद्र ने अपने पुत्रों की योग्यता को परखने के बाद अपना कारोबार भी बढ़ा लिया। संयोगवश उसी वर्ष व्यवसाय में घाटा हो गया। भारी नुकसान उठाना पड़ा। घर खर्च तो पहले ही काफी बढ़ा हुआ था। बाध्य होकर सेठ ने कुछ हेराफेरी करना शुरू कर दिया ताकि खर्च तो आराम से निकल सके और घाटे की पूर्ति भी हो जाये।

एक दिन मदनमंजरी ने अपने पति से पूछा- 'आजकल घर खर्च कैसे चल रहा है?'

पति ने बताया- 'बड़ी मुश्किल से चलता है। हेराफेरी से कमाई की जा रही है।'

पति की बात सुनकर वह बोली- 'यह तो अच्छा नहीं है। शायद इसके अलावा कोई उपाय भी नहीं है। ईमानदारी से घर का खर्चा भी चलना संभव नहीं है।'

कहने को तो मदनमंजरी ने यह बात कह दी, किन्तु उसके मन को शांति नहीं मिल सकी। धर्मशीला नारी को यह सब स्वीकार भी कैसे हो सकता था?

वह सोचने लगी- इस स्थिति में अब क्या किया जा सकता है? परिवार में बेईमानी से

धन आयेगा तो सबका आत्मबल कमजोर हो जाएगा, असंतोष बढ़ेगा। जीवन की शांति नष्ट हो जाएगी। परिवार में कलह बढ़ेगा। बहुत सोच-विचार के बाद उसने मन में कुछ निश्चय किया और सवेरे अपने श्वसुर से विनम्र शब्दों में बोली- "पिताश्री! हमारे यहाँ व्यापार में यह गलत तरीका नहीं अपनाया जाना चाहिए।"

गंगभद्र ने चौंककर अपनी पुत्रवधू की ओर देखा। उसके तेजस्वी चेहरे पर दृष्टि पड़ते ही उसकी नजरें नीची हो गई। वह मंद स्वर में बोला-'बहू! बेईमानी नहीं करें तो आज ही हमें अतिरिक्त खर्चे बन्द करने पड़ेंगे।'

'तो कर दीजिये बंद। तकलीफों का सामना करने के लिए हम सब तैयार हैं। घर का काम करने में हमें कोई लज्जा नहीं है। आप स्वयं जानते हैं, सत्य की रक्षा करते हुए कमाया गया धन जीवन में चमत्कार उत्पन्न कर देता है।' मदनमंजरी के स्वर में दृढ़ता स्पष्ट दीख रही थी।

'बहू! तुम्हारा यही आग्रह है तो पहले हम छह महीनों तक ईमानदारी से व्यवसाय करके देखते हैं। अगर कोई लाभ हुआ तो भविष्य में इसी प्रकार का व्यवसाय करते रहेंगे अन्यथा जो व्यवहार दुनिया करती है, वही हमें करना होगा।' सेठ ने बहू को आश्वासन देते हुए कहा।

उसी दिन से सेठ गंगभद्र ने हेराफेरी का काम बन्द कर दिया। पूरी ईमानदारी से व्यवसाय करना आरम्भ कर दिया। छह माह निकल गये। उसने लेखा-जोखा मिलाया। सारा खर्च निकालने के बाद मात्र पांच माशा सोने जितने मूल्य का लाभ हुआ। उसने लाभ की राशि से पाँच माशा सोना खरीद लिया।

शाम को घर आया तो सबके सामने मदनमंजरी से बोला- 'छह महीने में मात्र पाँच माशा सोने का लाभ हुआ है। इतने लाभ से कैसे काम चला पाएँगें?'

श्वसुर की बात सुनकर मदनमंजरी विनम्र भाव से बोली- 'आप धैर्य न खोएं पिताश्री! कभी-कभी ईमानदारी से कमाया गया इतना-सा धन ही बहुत बड़ा चमत्कार पैदा कर देता है। अपना सद्व्यवहार न छोड़ें। पिछले छह महीनों से घर में बहुत शांति और प्रसन्नता भी तो रही है। सबका स्वास्थ्य संतोषजनक रहा है। ये उपलब्धियाँ क्या कम हैं?'

गंगभद्र को संतोष नहीं हुआ, फिर भी मदनमंजरी के आग्रह तथा घर की सुख-शांति को ध्यान में रखकर उसने सत्य-व्यवहार का निश्चय बनाए रखा।

एक दिन गंगभद्र दुकान से लौट रहा था। रास्ते में राजपुरुष घोषणा करते हुए दिखाई दिए। वे घोषणा कर रहे थे कि राजकुमार गंभीर रूप से बीमार है। उसके इलाज के लिए पूर्ण प्रामाणिकता व सत्य से कमाये हुए सोने की आवश्यकता है। किसी के पास हो तो दरबार में

उपस्थित होकर निवेदन करे।

घोषणा सुनकर गंगभद्र ठिठका। वह राजपुरुष के निकट पहुँचा। पूछने पर ज्ञात हुआ कि राजकुमार की बीमारी का उपचार असंभव हो चुका है। अनेक सिद्धहस्त वैद्य-हकीम आशा छोड़ चुके हैं। संयोगवश आज एक सिद्ध योगी पधारे हैं। उन्होंने विश्वास दिलाया है कि सद्व्यवहार की कमाई से खरीदा गया सोना यदि मिल जाये तो मैं राजकुमार का जीवन बचा सकता हूँ। योगीराज पहले स्वर्ण की परीक्षा करेंगे। सही साबित होने पर ही उस स्वर्ण को काम में लिया जाएगा। अब तक राज्य के अनेक धनी-मानी, छोटे-बड़े महानुभावों के स्वर्ण-खण्ड परीक्षण के लिए आ चुके हैं, परन्तु योगीराज की कसौटी पर वे सब दोषपूर्ण साबित हुए हैं।

सेठ सुनकर झिझका। घर आया तो मदनमंजरी ने भी उसी घोषणा की चर्चा छेड़ दी तथा अनुरोध किया- 'आज भाग्य आजमाने का दिन आ गया है। आप वह पाँच माशा स्वर्ण लेकर राजमहल में पधारें। देखते हैं, भाग्य क्या कहता है?'

पुत्रवधू की राय मिलने पर सेठ ने तुरन्त जाने का फैसला किया। स्वर्ण लेकर वह राजमहल में पहुँचा। मंत्री से मिला। स्वर्ण देखकर मंत्री ने कहा-'गंगभद्रजी! योगी और राजा दोनों झुंझलाये हुए हैं। अगर आपको अपने आप पर पूरा भरोसा हो तभी सोना आगे बढ़ाना, अन्यथा लेने के देने पड़ जाएंगें।'

सेठ ने दृढ़तापूर्वक कहा- 'आप बेफिक्र रहिए मंत्री महोदय! मैं पूर्ण आत्मविश्वास के साथ आया हूँ। आप निश्शंक होकर योगीराज के सामने स्वर्ण प्रस्तुत कीजिए। यह स्वर्ण निःसंदेह उपयोगी सिद्ध होगा।'

गंगभद्र की दृढ़ता देखकर मंत्री प्रभावित हुआ। उसने स्वर्ण ले जाकर योगीराज के सामने रख दिया। योगीराज ने आँख मूँद कर मंत्रोच्चारण किया और स्वर्ण पर मंत्रपूरित जल छिड़का। इससे पहले आने वाला स्वर्ण जल छिड़कते ही काले लोहे की तरह हो जाया करता था। यह स्वर्ण जल का स्पर्श पाते ही और भी प्रकाशमान हो उठा।

योगीराज तुरन्त हर्ष से बोल उठा- ''काम बन गया। अब राजकुमार का बाल भी बांका नहीं होगा।' इतना कहकर उन्होंने अपने थैले में से एक बूंटी निकाली और उसे स्वर्ण के साथ घिसकर राजकुमार को दी। एक ही खुराक से राजकुमार स्वस्थ होने लगा।

योगीराज अपना काम समाप्त करके चल दिए। राजा ने रुकने का आग्रह किया, किन्तु वे नहीं रुके। उन्होंने चलते-चलते सिर्फ इतना ही कहा-'राजन्! रमते जोगी और बहते पानी का कोई ठिकाना नहीं होता। हम कोई भी लालसा मन में नहीं रखते। अगर आपको प्रतिदान देना ही है तो उस व्यक्ति को दीजिये जिसके स्वर्ण से राजकुमार स्वस्थ हुए हैं। कम

से कम यह तो सिद्ध हो चुका है कि आपके राज्य में भी ईमान की रोटी खाने वाला कोई व्यक्ति है।'

राजा के मन में योगी की बात बैठ गयी। उसने दूसरे ही दिन राजकुमार के स्वस्थ हो जाने की खुशी में बहुत बड़ा आयोजन किया। उसमें गंगभद्र को सम्मानित किया। इसके साथ ही पांच माशा स्वर्ण के बदले में उसे पाँच लाख स्वर्ण मुद्राएँ पारितोषिक के रूप में भेंट भी दी।

प्रसंगवश राजा ने पूछ ही लिया- 'सेठजी! यह तो बताओ, आप इतनी ईमानदारी कैसे रख पा रहे हैं?'

सेठ ने मुस्कुराते हुए बताया- 'महाराज! यह सब तो मेरी छोटी पुत्रवधू मदनमंजरी के कारण ही संभव हुआ है, अन्यथा मैं भी अनैतिक हवा में ही बह रहा था।'

राजा ने तत्काल शाही पालकी भिजवाकर मदनमंजरी को बुलवाया और भरे दरबार में उसको अपनी धर्मपुत्री के रूप में सम्मानित किया। -*'नीतिलोक' पुस्तक से साभार*

**प्रश्नः-**

1. घाटा लगने के बाद गंगभद्र का घर खर्च कैसे चलता था?
2. मदनमंजरी ने अपने श्वसुर को क्या सलाह दी?
3. गंगभद्र घोषणा सुनकर क्यों ठिठक गया?
4. अर्थ बताइये- कारोबार, हेराफेरी, राजपुरुष, योगीराज, सिद्धहस्त, पुत्रवधू।
5. कथा में से मुहावरें छाँट कर लिखिए?
6. इस कथा का नीति-संदेश क्या है?

## बाल-स्तम्भ [अक्टूबर-2016] का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर-2016 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'अन्तर क्या?' के प्रश्नों के उत्तर 20 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

| पुरस्कार एवं राशि | नाम | अंक |
|---|---|---|
| प्रथम पुरस्कार-500/- | लक्की कांकरिया-बैंगलुरु (कर्नाटक) | 25.5 |
| द्वितीय पुरस्कार-300/- | अरिन चोरडिया-जयपुर (राज.) | 25 |
| तृतीय पुरस्कार- 200/- | अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.) | 22.5 |
| सान्त्वना पुरस्कार- 150/- | आयुषी आहूजा-जयपुर (राज.) | 22 |
| | अरिष्ट कोठारी-अजमेर(राज.) | 22 |
| | शुभम् जैन-अलीगढ़ (राज.) | 22 |
| | अभिषेक पालरेचा-जोधपुर (राज.) | 21.5 |
| | ममता राजेन्द्रजी छाजेड़-भुसावल (महा.) | 21 |

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

# नूतन साहित्य

**डॉ. श्वेता जैन**

***संलेखना-संथारा-समाधि : एक मार्ग दर्शिका***- श्री उदयमुनिजी, ***प्रकाशक***- श्री दिनेशकुमार जैन, धुलिया कटरा, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006, फोनः 011-23919370, मोबाइल : 099537-23403, ***पृष्ठ***-386+14, ***लागत मूल्य***- 300 रुपये, श्रुत सहयोग- 100/रुपये, सन् 2014

सन् 2005 में जयपुर की साधिका के संथारे को आत्महत्या व सतीप्रथा मानकर पुलिस कार्यवाही की घटना ने और संथारे के समय साधक के चिन्तनार्थ और श्रवणार्थ सामग्री की समस्या ने लेखक को इस पुस्तक को लिखने के लिए प्रेरित किया। छः प्रकाशों में विभाजित इस पुस्तक के विषय इस प्रकार हैं- 1. संलेखना-संथारा : स्वरूप और विधि, 2. आलोचना-पश्चात्ताप-अनुचिन्तन, 3. सप्त कुव्यसन : स्वरूप और पश्चात्ताप-अनुचिन्तन, 4. अठारह पाप-स्थान : स्वरूप और पश्चात्ताप-अनुचिन्तन, 5. बारह भावनाओं का स्वरूप और 6. स्वाध्याय। अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत संलेखना साधना का फल, स्वर विज्ञान से मरणफल का अनुमान, गीतिकाएँ, संथारा करने वाले साधक एवं साधिकाओं के उल्लेख आदि दिए गए हैं। संथारे से सम्बद्ध विषय-वस्तु का आलोडन करने का अवसर देने वाली यह पुस्तक पठनीय है।

***ऋषिभाषित सूत्र- सम्पादक***- प्रो. सागरमल जैन, ***हिन्दी अनुवादक***- महोपाध्याय विनयसागर, ***अंग्रेजी अनुवादक***- कलानाथ शास्त्री एवं दिनेशचन्द्र शर्मा, ***प्रकाशक*** - प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, गुरुनानक पथ, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन नं.- 0141-2524827, 2520230, ***पृष्ठ***-510, ***मूल्य***-700 रुपये, ***द्वितीय संस्करण***- सन् 2016

ऋषिभाषित वैदिक, बौद्ध एवं श्रमण-परम्परा की अमूल्य निधि है। इसमें ईसा पूर्व 10 वीं शती से लेकर छठी शती तक के तीर्थंकरों, श्रमणों, ऋषियों, महर्षियों, परिव्राजकों के न केवल विचारों का ही संकलन है, अपितु उनके मूलभूत सिद्धान्तों के साथ अनुभूतिपूर्ण आध्यात्मिक एवं नीतिपरक उपदेशों का भी संकलन है। प्रो. सागरमल जैन की 108 पृष्ठीय 'ऋषिभाषित : एक अध्ययन' शीर्षक से वृहत् भूमिका इस ग्रन्थ को समझने हेतु दृष्टि प्रदान करती है। इसका अंग्रेजी अनुवाद भी साथ में है। उन्होंने अनेक शीर्षकों से विषय को

भूमिका में प्रस्तुत किया है, यथा- 1. जैन आगम साहित्य में ऋषिभाषित का स्थान, 2. ऋषिभाषित का रचनाक्रम एवं काल, 3. ऋषिभाषित का प्रश्नव्याकरण से पृथक्करण, 4. ऋषिभाषित के ऋषियों को प्रत्येकबुद्ध क्यों कहा गया? 5. ऋषिभाषित और जैन धर्म के सिद्धान्त, 6. ऋषिभाषित में उपदिष्ट अवधारणाओं की प्रामाणिकता का प्रश्न, 7. ऋषिभाषित के ऋषियों की ऐतिहासिकता का प्रश्न, 8. ऋषियों का काल एवं परम्परा, 9. ऋषिभाषित निर्युक्ति और ऋषिमण्डल, 10. ऋषिभाषित की भाषा तथा देव नारद, वज्जीपुत्र आदि 45 ऋषियों के बारे में विवेचन। इस भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद इसके बाद दिया गया है। प्रत्येक अध्ययन की गाथाओं का हिन्दी में अर्थ एवं अंग्रेजी अनुवाद उसके नीचे दे दिया गया है। जर्मनी के प्रोफेसर वॉल्टर शुब्रिंग द्वारा सम्पादित संस्करण में ऋषिभाषित संस्कृत टीका छपी थी, उसे भी इस पुस्तक में अंग्रेजी अनुवादक के साथ योजित किया गया है। परिशिष्ट में ऋषिभाषित की दो संग्रहणियाँ एवं पद्यानुक्रम दिया गया है। यह पुस्तक हिन्दी और अंग्रेजी दोनों पाठकों के लिए उपयोगी है। शोधार्थियों, जैन दर्शन के अध्येताओं द्वारा यह ग्रंथ संग्रहणीय है।

***जैनदर्शन में तत्त्व और ज्ञान***- ***लेखक***- प्रोफेसर सागरमल जैन, ***सम्पादक***- प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा और प्रदीप कुमार खरे, ***प्रकाशक*** - प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, गुरुनानक पथ, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन नं.- 0141-2524827, 2520230, ***पृष्ठ***-706+12, ***मूल्य***- 650 रुपये मात्र, सन् 2016

जैन धर्म-दर्शन के मूर्धन्य विद्वान् प्रोफेसर सागरमल जैन के दार्शनिक निबन्धों के संग्रह की सीरिज में भाग 10 से 12 के क्रमांक की यह पुस्तक है। इसके सप्त अध्यायों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं- 1. जैन तत्त्वदर्शन, 2. जैन ज्ञानदर्शन, 3. जैन धर्मदर्शन एवं आचार, 4. जैन अनेकान्तदर्शन, 5. जैनागम और चार्वाकदर्शन, 6. जैन दृष्टि में बौद्ध धर्मदर्शन, 7. प्रो. सागरमल जैन का जीवनवृत्त। 'जैन दर्शन के तर्क प्रमाण का आधुनिक सन्दर्भों में मूल्यांकन', 'शब्द की वाच्य शक्ति, जैन वाक्य दर्शन', 'प्रवर्तक और निवर्तक धर्मों का मनोवैज्ञानिक विकास एवं सांस्कृतिक प्रदेय', 'नैतिक मूल्यों की परिवर्तनशीलता एवं सापेक्षता का प्रश्न', 'हरिभद्र के धर्मदर्शन में क्रांतिकारी तत्त्व', 'तंत्रसाधना और जैन जीवन दृष्टि', 'धर्मनिरपेक्षता और बौद्ध धर्म' जैसे विशिष्ट लेखों से पुस्तक की उपादेयता द्विगुणित हो गई है। प्रो. सागरमल जैन का जीवनवृत्त पढ़कर संघर्ष की परिस्थितियों में हार न मानने की प्रेरणा मिलती है। अंतिम अध्याय में उनके द्वारा करवाये गये शोधकार्यों एवं शोधकर्ताओं की सूची भी उपलब्ध होने से शोधार्थियों एवं अध्येताओं के लिए इसकी उपयोगिता असंदिग्ध हो गई है। उनके शोध निबन्धों की सूची भी इसमें योजित है। यह पुस्तक अपने पुस्तकालयों में संग्रहणीय है।

# सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित
# आगम साहित्य

5. **अंतगडदसांग सूत्र-** (मूल्य-100.00 रुपये, पृष्ठ संख्या 26 + 292 = 318, तत्त्वावधान-आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., दिशानिर्देशन-आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., सम्पादक-प्रकाशचन्द जैन, प्राचार्य) आगम का एक वचन भी व्यक्ति के जीवन को सम्यक् दिशा प्रदान कर सकता है। इस अन्तगडदसा सूत्र में 90 चरम शरीरी आत्माओं का वर्णन है। आठ परिशिष्ट भी हैं। क्रमशः परिशिष्ट '1' में सूक्तियाँ संकलित हैं। '2' में विशिष्ट तथ्य, '3' में सन्दर्भ कथा-प्रसंग आदि दिये गये हैं, '4' में अंतगडदसा सूत्र से सम्बन्धित सारणियाँ एवं 5 में प्रश्नोत्तर हैं। '6' में सूत्र-वाचन के समय गाने योग्य भजन तथा अन्य उपयुक्त प्रार्थना और भजन संगृहीत हैं। '7' में प्रत्याख्यान सूत्र तथा '8' में तप विधि चार्ट रखे गये हैं।

6. **अंतगडदसासुत्तं-** (मूल्य-40.00 रुपये, पृष्ठ संख्या 20 + 268 = 288, तत्त्वावधान-आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा.) 'अंतगडदसा सूत्र' का पर्युषण पर्व के आठ दिनों में वाचन किया जाता है। इसमें 90 उन आत्माओं का वर्णन है, जो उसी भव में प्रव्रजित होकर सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हुईं। अंतगडदसा का प्रस्तुत संस्करण उपर्युक्त संस्करण से छोटी साइज का है। इसमें प्राकृत मूलपाठ के सामने कालम पद्धति में हिन्दी अर्थ दिए गए हैं, जो सूत्र के अर्थ को हृदयङ्गम करने में अतीव सहायक हैं। अन्त में दिये 7 परिशिष्ट भी उपयोगी जानकारी देते हैं।

7. **उपासकदशांग सूत्र-** (मूल्य-60.00 रुपये, पृष्ठ संख्या 52 + 278 = 330, तत्त्वावधान-आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., सम्पादन-प्रकाशचन्द जैन, प्राचार्य) उपासकदशांग सूत्र में भगवान महावीर के दृढ़धर्मी 10 श्रावकों का जीवन प्रतिपादित किया गया है। एकमात्र यह ही आगम है जिसका पूर्ण वर्ण्य विषय श्रावकों पर आधारित है। 12 व्रतों का सर्वांगीण विवेचन प्राप्त होता है। इसमें मूलपाठ, संस्कृत छाया, शब्दार्थ, भावार्थ के साथ आवश्यक विवेचन भी उपलब्ध है। इसमें प्रचलित कुछ धारणाओं का भी समीचीन समाधान प्रस्तुत किया गया है।

8. **आवश्यक सूत्र-** (मूल्य-100 रुपये, पृष्ठ संख्या 40 + 256 = 296, तत्त्वावधान-आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., दिशानिर्देशन-आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., सम्पादक-प्रकाशचन्द जैन, प्राचार्य) आवश्यक सूत्र में सभी पाठों को मूल रूप में गहरा लिखकर संस्कृत छाया, अन्वयार्थ, भावार्थ एवं विवेचन मूलपाठ के नीचे ही दिया गया है। परिशिष्ट भी समाहित किये गये हैं। जिनमें श्रमण आवश्यक सूत्र की विधि, श्रावक आवश्यक सूत्र की विधि, आवश्यक सम्बन्धी जानकारी, विशेष प्रश्नोत्तर एवं संस्तार-पौरुषी सूत्र आदि का समावेश विशेष उपयोगी है।

(क्रमशः)

# सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान)
फोन नं. 2575997, 2571163 फैक्स नं. 0141-2570753

## प्रकाशित साहित्य-सूची

| क्र. | पुस्तक का नाम | लेखक/सम्पादक/प्रेरक | मूल्य |
|---|---|---|---|
| 37. | गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-5 | आ.श्री हस्तीमलजी म.सा. | 15 |
| 38. | गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-6* | आ.श्री हस्तीमलजी म.सा. | 15 |
| 39. | गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-7* | आ.श्री हस्तीमलजी म.सा. | 15 |
| 40. | गजेन्द्र पद मुक्तावली* | आ.श्री हस्तीमलजी म.सा. | 05 |
| 41. | गमा का थोकड़ा* | श्री धर्मचन्द जैन | 10 |
| 42. | गौतम से प्रभु फरमाते हैं | संपादक- श्री सम्पतराज चौधरी | 70 |
| 43. | गुणस्थान स्वरूप* | श्री धर्मचन्द जैन | 05 |
| 44. | गुरु हस्ती-गुरु हीरा अनमोल भजन | संकलित | 20 |
| 45. | गुण सौरभ गणि हीरा | श्री नौरतनमल मेहता | 100 |
| 46. | ज्ञाता सूत्र की कथाएँ* | श्री दीपचन्द संचेती | 10 |
| 47. | ज्ञान लब्धि, द्रव्येन्द्रिय का थोकड़ा | श्री धर्मचन्द जैन | 02 |
| 48. | हीरा प्रवचन पीयूष भाग-1 | आ.श्री हीराचन्द्रजी म.सा. | 30 |
| 49. | हीरा प्रवचन पीयूष भाग-2 | आ.श्री हीराचन्द्रजी म.सा. | 30 |
| 50. | हीरा प्रवचन पीयूष भाग-3 | आ.श्री हीराचन्द्रजी म.सा. | 30 |
| 51. | हीरा प्रवचन पीयूष भाग-4 | आ.श्री हीराचन्द्रजी म.सा. | 30 |
| 52. | हीरा प्रवचन पीयूष भाग-5 (प्रेस में) | आ.श्री हीराचन्द्रजी म.सा. | 30 |
| 53. | चिन्तन के आयाम | डॉ. धर्मचन्द जैन | 40 |
| 54. | जैन इतिहास के प्रसंग भाग- 1 से 40 | संकलित (प्रत्येक का मूल्य) | 05 |
| 55. | जैन आचार्य चरितावली | आ.श्री हस्तीमलजी म.सा. | 15 |
| 56. | जैन स्वाध्याय सुभाषित माला | आ.श्री हस्तीमलजी म.सा. | 10 |
| 57. | जैन तमिल साहित्य और तिरुकुरल | डॉ. इन्दरराज बैद | 20 |
| 58. | जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1 | आ.श्री हस्तीमलजी म.सा. | 250 |
| 59. | जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2 | आ.श्री हस्तीमलजी म.सा. | 250 |
| 60. | जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-3 | आ.श्री हस्तीमलजी म.सा. | 250 |
| 61. | जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-4 | आ.श्री हस्तीमलजी म.सा. | 250 |

*चिह्नित पुस्तकें वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। (क्रमशः)

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाश्य साहित्य हेतु सहयोग अपेक्षित

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से निम्नलिखित सत्साहित्य का अतिशीघ्र पुनः मुद्रण किया जाना है। आप सभी सत्साहित्य प्रेमी बन्धुओं से विनम्र निवेदन है कि सत्साहित्य प्रकाशन में उदारमना होकर अर्थसहयोग प्रदान करने की कृपा करावें। अर्थसहयोग की स्वीकृति की सूचना सम्यग्ज्ञान

प्रचारक मण्डल को दिरावें। दूरभाष नं. 0141-2575997, 0141-4068798, Email: sgpmandal@yahoo.in

| क्र.सं. | पुस्तक का नाम | मुद्रण संख्या | पुस्तक में पृष्ठ | अनुमानित व्यय राशि रुपयों में |
|---|---|---|---|---|
| 1. | वीर गुण गौरव गाथा | 1100 | 28 + 285 = 313 | 98,000/- |
| 2. | जैन इतिहास के प्रसंग भाग-7 | 550 | 64 | 11,000/- |
| 3. | जैन इतिहास के प्रसंग भाग-8 | 550 | 65 | 11,000/- |
| 4. | भक्तामर स्तोत्र | 2100 | 8 + 88 = 96 | 32,000/- |
| 5. | अंतगडदसा सूत्र | 2100 | 20 + 268 = 288 | 70,000/- |
| 6. | आवश्यक सूत्र (अंग्रेजी) | 1100 | | 21,000/- |
| 7. | गुणस्थान स्वरूप | 550 | 4 + 44 = 48 | 12,000/- |
| 8. | रत्नस्तोक मंजूषा | 1100 | 4 + 76 = 80 | 18,000/- |
| 9. | प्रेरक कथाएँ | 550 | 4 + 128 = 132 | 20,000/- |
| 10. | अध्यात्म की ओर | 550 | 4 + 208 = 212 | 27,000/- |
| 11. | दुःख रहित सुख | 550 | 22 + 194 = 216 | 37,000/- |
| 12. | ज्ञाता सूत्र की कथाएँ | 550 | 8 + 104 = 112 | 17,000/- |
| 13. | 47 बोल की बंधी | 550 | 4 + 36 = 40 | 10,000/- |
| 14. | समिति गुप्ति | 550 | 4 + 28 = 32 | 10000/- |
| 15. | गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-7 | 550 | 4 + 324 = 328 | 35500/- |
| 16. | जैन लीजेण्ड पार्ट-1 (अंग्रेजी) | 500 | 368 | 72000/- |

**नोट :-** (1) पुस्तक मँगवाने पर पोस्टेज, कोरियर, ट्रांसपोर्ट, पैकिंग आदि का खर्चा पुस्तक क्रेता को ही वहन करना होगा। (2) ऑर्डर के साथ ऑर्डर राशि का बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर "सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल" के नाम से भिजवायें।

(1) जिनवाणी का देश में 20 वर्षीय सदस्यता शुल्क रुपये 1,000/- (2) विदेशों में शुल्क भारतीय मुद्रा रुपये 12,500/- (3) मण्डल का 20 वर्षीय साहित्य सदस्यता शुल्क (सम्पूर्ण साहित्य का) रुपये 4,000/- **जिनवाणी खाते का विवरण :-Bank :** State Bank of Bikaner & Jaipur, **A/c Name :** JINWANI, **A/c No. :** 51026632986, **Pan No. :** AABTS3915P, **IFS Code :** SBBJ0010843. **सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के खाते का विवरण :-Bank :** State Bank of Bikaner & Jaipur, **A/c Name :** SAMYAG GYAN PRACHARAK MANDAL, **A/c No. :** 51026632997, **Pan No. :** AABTS3915P, **IFS Code :** SBBJ0010843 **DENA BANK A/c No.** 109910025952, IFS Code No. BKDN 0711099

बैंक खाते में निर्धारित राशि के साथ 25 रुपये बैंक कमीशन के भी साथ में जमा करावें। राशि जमा कराने के पश्चात् कार्यालय को दूरभाष, ईमेल, पत्र द्वारा सूचित करने पर रसीद जारी की जा सकेगी। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल में सदस्यता के अलावा अन्य अर्थ सहयोग प्रदान करने पर 80 जी की छूट का प्रावधान है।

# समाचार विविधा

## साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. द्वारा संथारा स्वीकार

अध्यात्मयोगी, युगमनीषी **आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.** के मुखारविन्द से संवत् 2003 में दीक्षित, **आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** की आज्ञानुवर्तिनी **शासनप्रभाविका साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** का स्वास्थ्य पिछले कुछ समय से ठीक नहीं चल रहा था। आपसे जब भी निवेदन किया जाता तब आप एक ही बात फरमाते थे कि मुझे आचार्यश्री एवं उपाध्यायश्री के दर्शन करने हैं। आचार्यश्री से जब निवेदन किया गया, आचार्य भगवन्त यही फरमाते कि भाई मैं तो दूर हूँ, उपाध्याय भगवन्त को संकेत करवा दिया है कि वे पावटा की ओर का लक्ष्य रखावें। दिनों-दिन स्वास्थ्य में गिरावट चल रही थी, इसलिये मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी एवं श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनिजी भास्कर नगर से विहार कर पावटा पधारे। दोनों गुरु भगवन्त दिन भर वहीं रहे। उसके पश्चात् उन्हें तपस्या की ओर बढ़ने और समय-समय पर प्रत्याख्यान कराने की भोलावण दी तथा पुनः भास्कर नगर पधार गए। भास्कर नगर से पावटा का लक्ष्य बनाकर विहार प्रारम्भ किया। इसी बीच सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म. आदि ठाणा 5 पीपाड़ से विहार कर जोधपुर पधार रहे थे। आचार्य भगवन्त के समाचार उनको भी पहुँचे कि आपको जोधपुर की ओर पधारना है। श्रद्धेय नन्दीषेणजी म.सा. ने कहा कि मेरे साथ श्रद्धेय अभयमुनिजी हैं इस कारण मैं उनके साथ धीरे-धीरे विहार कर रहा हूँ, परन्तु श्रद्धेय मनीषमुनिजी व श्रद्धेय देवेन्द्रमुनिजी को शीघ्र ही जोधपुर पहुँचने के लिये निवेदन किया। श्रद्धेय मनीषमुनिजी व श्रद्धेय देवेन्द्रमुनिजी 37 किलोमीटर का विहार एक दिन में करते हुए दोपहर करीब 2.30 बजे पावटा स्थानक में पधारे। साध्वीप्रमुखा जी से स्वास्थ्य की पृच्छा करते हुए आपसे भावना पूछी। साध्वीप्रमुखाजी की उत्कृष्ट भावना थी कि मुझे संथारा करना है तब मनीषमुनिजी ने चतुर्विध संघ की आज्ञा लेकर और आचार्यश्री की भावना को ध्यान में रखते हुए दिन के चार बजे 21 नवम्बर 2016 को तिविहार संथारा संलेखना के पच्चखाण करवाये। जैसे ही पच्चखाण हुए हर्ष-हर्ष जय का नारा गुंजायमान हो गया। सारे देश में समाचार हो गये। आसपास से सभी संत-सतियाँजी जोधपुर की ओर बढ़ने लगे। श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर भी 23 तारीख की सुबह अपनी शिष्य मण्डली के साथ पावटा पधार गए। व्याख्यात्री महासती चारित्रलताजी व व्याख्यात्री महासती विनीतप्रभाजी आदि ठाणा

जोधपुर पधार चुकी हैं। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी आदि ठाणा भी 30 नवम्बर को जोधपुर पधार गए हैं। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी आदि ठाणा भी जोधपुर पधार गई हैं। दर्शनार्थियों का आवागमन चल रहा है। संघ संरक्षक-मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत व संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा, पद्मभूषण श्री देवेन्द्रराज जी मेहता, श्री विमलचन्दजी, श्री जितेन्द्रजी डागा-जयपुर, स्थानीय महापौर श्री घनश्यामजी ओझा, उपमहापौर श्री देवेन्द्रजी सालेचा, विधायक श्री कैलाशजी भंसाली, ज्ञानगच्छ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सभी सम्प्रदाय के अध्यक्ष-मंत्री एवं सभी सम्प्रदाय के संत-सतीवृन्द साध्वीजी के दर्शनार्थ पधारे। साध्वीजी का संथारा पूरी सजगता के साथ चल रहा है। सभी संत भगवन्तों द्वारा संथारालीन महासती जी को सहयोग दिया जा रहा है। *-धनपत सेठिया*

## यशस्वी एवं उपलब्धिपूर्ण रहा आचार्यप्रवर हीरा का निमाज चातुर्मास

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुण रत्नाकर, जिनशासन गौरव, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** प्रभृति संतवृन्द ठाणा 6 एवं **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.** आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में विक्रम संवत् 2073 का यशस्वी वर्षावास संथारा भूमि निमाज में स्वास्थ्य समाधि के साथ निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

तीर्थंकर महावीर के निर्वाण दिवस पर अनेक श्रावक-श्राविकाओं द्वारा तेले की तपस्या 28 अक्टूबर से प्रारम्भ कर दी गई थी, जो 30 अक्टूबर को पूर्ण हुई। उत्तराध्ययन सूत्र के मूल पाठ की प्रस्तुति 29 से 31 अक्टूबर तक श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. द्वारा सस्वर, सुस्पष्ट एवं बोधगम्य प्रवाह के साथ की गई। अनेक उपवास एवं एकाशन की आराधना हुई। संघ मंत्री श्री निर्मलकुमारजी बम्ब ने संघीय व्यवस्था सम्भालते हुए तप में पुरुषार्थ किया। आपने 01 नवम्बर को 15 दिवसीय तप के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

4 से 6 नवम्बर तक श्राविका मण्डल के द्वारा अध्यात्म चेतना आयाम शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 225 शिविरार्थियों ने अध्ययन किया। महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. व श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक विषय पर प्रवचन फरमाकर सच्ची श्राविका के विरुद को अभिवर्द्धित करने पर बल दिया।

05 नवम्बर को रात्रिकालीन कक्षा में संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने विशेष उद्बोधन के अन्तर्गत कहा कि धर्म को आगे बढ़ाने में श्राविका वर्ग की विशेष भूमिका रही है। धर्म मार्ग पर चलते हुए अपने पति के द्वारा अनीति से की जा रही कमाई को ये बहिनें सहजता से रोक सकती हैं। गृहलक्ष्मी की बात पति टाल सके, ऐसा सामर्थ्य आज की स्थिति में नहीं है। सेबी के पूर्व चेयरमेन प्राणिमित्र, पद्मश्री से विभूषित श्री देवेन्द्रराज जी मेहता ने श्रेष्ठ माता बनने एवं सन्नारी कहलाने हेतु करुणाशीलता, ममता, उदारता, सहनशीलता, चरित्रनिष्ठता आदि गुणों को अपनाने हेतु प्रेरणा की।

5 से 8 नवम्बर तक दिव्यांगों को भगवान महावीर विकलांग सहायता-समिति, जयपुर द्वारा निःशुल्क उपकरण वितरण का कार्य किया गया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 54 वें दीक्षा-दिवस पर 06 नवम्बर को चयनित दिव्यांग व्यक्तियों को मांगलिक पश्चात् ट्राई साइकिल, व्हील चेयर, जयपुर फुट आदि का वितरण कार्य प्रारम्भ हुआ। राजस्थान सरकार के पंचायती राज एवं सहकारिता मंत्री श्री सुरेन्द्र जी गोयल भी इस प्रसंग पर उपस्थित रहे। उन्होंने पूज्य गुरुदेव के प्रवचन श्रवण का भी लाभ लिया। उपकरण वितरण का कार्य 08 नवम्बर तक चला। इसके अन्तर्गत 409 दिव्यांगों को लाभान्वित किया गया। इस शिविर को सफल बनाने में श्री पदमचन्दजी धोका-संयोजक एवं निमाज सकल जैन श्री संघ के समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं का अपूर्व योगदान रहा।

06 नवम्बर 2016, कार्तिक शुक्ला षष्ठी को पूज्य आचार्य भगवन्त का **54 वां दीक्षा दिवस** था। नवदीक्षित श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा., महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा., महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने पूज्य आचार्यप्रवर के निर्मल साधनामय संयमी-जीवन एवं विशेषताओं पर प्रकाश डाला। गुरुदेव के चिरायु, दीर्घायु होने की मंगल कामना की। श्री डी.आर. मेहता ने कहा कि निमाज से बढ़कर अन्य कोई पवित्र भूमि नहीं हो सकती। यहाँ ही गुरुहस्ती को 13 दिवसीय संथारा आया था।

**पूज्य आचार्य भगवंत** ने फरमाया कि आज माताओं के शिविर का अन्तिम दिवस है। मैं माताओं से कहना चाहूँगा कि बच्चों को कपड़े पहनाने के साथ धर्म के संस्कार भी दें। मेरी माँ की बात कह रहा हूँ- रविवार का दिन था, खेलने के लिये जाने को तैयार था, तब माँ ने कहा- बेटा! आचार्यश्री पधारे हैं, स्थानक में जाकर सन्निधि का लाभ ले। आप सभी माँ के इस कथन पर चिंतन करें। बच्चा गलत आचरण में चला गया तो मानव जन्म बेकार चला जायेगा। लक्ष्मीचन्दजी म.सा. ने पाठ सिखाये। गुरुदेव ज्ञान सिखाते, अध्यात्म की

महिमा बताते। जो आप देख रहे हैं वे सब माता-पिता एवं गुरुदेव के दिये हुए किंचित् फूल हैं। निमाज में दया करुणा का यह काम डी.आर मेहता के सहयोग से हुआ। यहाँ सब कार्यक्रम हुए, पर दीक्षा नहीं हुई। निमाज में दीक्षा की स्वीकृति कर रहा हूँ- पृथ्वीराजजी सुंदरबाईजी कवाड़ पीपाड़ वाले का धर्मनिष्ठ परिवार है। सुन्दरबाईजी प्रतिदिन 15 सामायिक करती। सम्मूर्च्छिम का दोष नहीं लगाया। उन्हीं के ज्येष्ठ पुत्र दलीचन्दजी एवं अशोकजी के पुत्र **कल्पेशजी कवाड़** की एवं लघु पुत्र प्रेमचन्दजी कवाड़ की सुपुत्री **मधुजी कवाड़** पुन्नमल्ले-चेन्नई वालों की भागवती दीक्षा की पीपाड़ में 09 फरवरी 2017 के लिये स्वीकृति कर रहा हूँ।

दीक्षा दिवस के प्रसंग पर 13 तेले, धर्मचक्र की आराधना,उपवास, एकासन, भिक्षुदया आदि के अतिरिक्त 5 शीलव्रत के खंध हुए। इस प्रसंग पर सवाईमाधोपुर शहर, हाउसिंग बोर्ड, बजरिया, चौथ का बरवाड़ा, सुमेरगंज मण्डी, जरखोदा, कुश्तला, बिचगाँव, अलीगढ़-रामपुरा, कोटा, गंगापुर, हिण्डौन, खेड़ली, नदबई, भरतपुर, पीपाड़, पाली, जोधपुर, अजमेर, ब्यावर, मेड़तासिटी, बालोतरा, भोपालगढ़, नागौर, सोजतसिटी, रणसीगाँव, बिलाड़ा, भैरुंदा, दूदू, जयपुर, जबलपुर, बैंगलोर, चेन्नई, गजेन्द्रगढ़, मुम्बई, जलगांव आदि स्थानों से श्रद्धालु गुरुभक्त श्रद्धा भक्ति का अर्घ्य अर्पित करने गुरु चरणों में पधारे।

08 नवम्बर को किशनगढ़ संघ पावन चरणों में दर्शनार्थ आया। श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा. का राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय निमाज में सप्त व्यसन त्याग पर विशेष प्रवचन हुआ। 09 नवम्बर को निमाज जैन श्री संघ द्वारा मुमुक्षु बहिन मधुजी प्रेमचंदजी कवाड़ की **शोभायात्रा** निकाली गई। दीक्षार्थी बहिन का स्थानक भवन से सुशीला भवन के मध्य अनेक श्रद्धालुओं ने बहुमान कर धन्यता का अनुभव किया। श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा. ने भगवान महावीर राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह पर प्रवचन फरमाया। कुशालपुरा संघ पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में क्षेत्र फरसने की विनति के साथ आया। 11 नवम्बर को बगड़ी संघ शेषकाल फरसने की विनति लेकर एवं हरसाना से महिला मण्डल दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। संघ-संरक्षक श्री उमरावमलजी सुराणा चेन्नई के स्वर्गवास पर 12 नवम्बर को श्री श्रीपालजी सुराणा परिवारजनों के साथ मांगलिक श्रवण करने आये। लाल भवन-जयपुर संघ के मंत्री व पदाधिकारी विनति के साथ उपस्थित हुए। श्री हस्तीमलजी गोलेछा ब्यावर वालों की चातुर्मास काल में प्रायः हर दिन पूज्य गुरुदेव के चरणों में निमाज धरा पर उपस्थिति रही।

14 नवम्बर को वर्षावास का अन्तिम दिन था। हर भक्त रुंधे हुए गले से, भीगी पलकों से अपनी प्रस्तुति कर रहा था। पूज्य आचार्य भगवन्त एवं संत-सतीवृन्द समय पर प्रवचन सभा में पधार आये थे। संघ मंत्री श्री निर्मलजी बम्ब ने संचालन करते हुए स्तुति गुणगान कर भक्तों को आमंत्रित किया।

सर्वप्रथम श्रीमती अनिताजी भण्डारी, श्रीमती बीनाजी मेहता, श्रीमती आशाजी बम्ब ने- "रोको रे रोको कोई गुरुवर को विहार से.....।" समवेत स्वर में प्रस्तुति से भाव विह्वल कर दिया। श्री सौभाग्यमलजी जैन कुशतला वाले ने- "गांधी कुल का यह सितारा, हीराचन्द गुरु सबको प्यारा लगे....।" वृद्धावस्था में उच्च स्वर से सबको साथ लेकर सुन्दर भाव युक्त प्रस्तुति दी। श्री जयसिंहजी छाजेड़, भीलवाड़ा ने कहा कि पूज्य आचार्यश्री ने सामायिक-स्वाध्याय, रात्रिभोजन-त्याग की प्रेरणा हर आगत को करके निमाज में यशस्वी, वर्चस्वी, ऐतिहासिक चातुर्मास किया है। सुश्री अरुणा जी भण्डारी, पूजाजी, कविताजी फूलफगर- "गुरुदेव जाते हो, विनति यह सुनते जाना, कृपाकर दर्शन जल्दी देना।"

कार्याध्यक्ष श्री सुभाषचन्दजी धोका, मैसूर- "गुरुदेव ने चातुर्मास की कृपाकर पूर्वजों की भावना को इस वर्ष साकार किया। जैन-जैनेतर सभी ने धर्माराधना, तपाराधना में सहकार कर चातुर्मास की दीप्ति बढ़ाई।" अखिल भारतीय मुमुक्षु समिति के संयोजक एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री यशवंतराजजी सांखला, बैंगलोर- "गुरुदेव की चरण सन्निधि में तीन माह रहकर निमाज में जो आनन्दानुभूति हुई वह अद्वितीय है।" श्री उगमराजजी कांकरिया, चेन्नई- "भगवान महावीर का समवसरण तो नहीं देखा, पर निमाज में जो समवसरण का परिदृश्य देखा, वह शब्दातीत है। यहाँ शारीरिक शांति का अनुभव किया।" श्री गौतमचन्दजी सकलेचा, कुम्भकोणम्- "पूज्य गुरुदेव ने निमाज की धर्मधरा पर चातुर्मास कर जो उपकार किया, वह सदैव अविस्मरणीय रहेगा।"

श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता, जोधपुर- "चार माह से धर्मध्यान का जो लाभ ले रहे थे, उससे अब वंचित रह जायेंगे। यह चातुर्मास हमारे परिवार के लिये स्वर्णिम रहेगा।" वीर भ्राता श्री पदमचन्दजी कोठारी, निमाज- "निमाज नगरी को छोड़कर गुरुवर आप क्यों जाते हो, पल-पल आप हमें याद आते हो।" श्री पारसमलजी कोठारी, निमाज- "गुरुदेव की देशना सुनने का सौभाग्य मिला। आपकी प्रेरणा से जो व्रत नियम अंगीकार किये हैं, आपकी कृपा के बल से ही उन नियमों का दृढ़ता से पालन करेंगे।" उपाध्यक्ष श्री रीखबचन्दजी बम्ब, विल्लीपुरम- "चातुर्मास सुखे समाधे पूर्ण होने जा रहा है, इस पर प्रमोद है। तप-त्याग की प्रभावी प्रेरणा कर चातुर्मास को

ऐतिहासिक बनाया।" श्रीमती अनिताजी भण्डारी, बैंगलोर- 'अनन्त पुण्यवानी उदय में आई जो पूर्वजों की आशा सफलीभूत हुई। तपस्या सभी की सुखसाता के साथ हुई। श्वसुर श्री गणेशमल जी भण्डारी यदि आज होते, तो उनकी खुशी का पारावार नहीं रहता।" वीर भ्राता सहमंत्री श्री महावीरजी कोठारी, निमाज- "कल तक था खुशियों का मौसम, आज उदासी छाई। चार मास तक सींचा उपवन, बिना बुलाये मिंगसर एकम क्यों आई।"

हिन्दू सेवा समिति के अध्यक्ष श्री नारायणलालजी प्रजापत, निमाज- "यशस्वी, पुरोधा कार्यकत्ताओं का आभार अभिव्यक्त करता हूँ जिनके कारण से निमाज में चातुर्मास हुआ। चातुर्मास से निमाज को विशेष सम्मान मिला। गुरुदेव के विराजने से चातुर्मास में भक्तों की चहल-पहल रही। व्यसन मुक्ति का संदेश सफल होगा। विकलांगों का शिविर लगाकर जनकल्याण किया है। यह करुणा का काम चातुर्मास की स्मृति कराता रहेगा। शिक्षा-चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए जैन समाज के सहकार से निमाज में अनेक संस्थाएँ प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। गुरुदेव इस निमाज की धरा को पवित्र आगे भी पधारकर करेंगे, ऐसा निवेदन है।" श्री भागचन्दजी मेहता, जोधपुर- "इस धरा पर कुशलवंश के संस्थापक श्री कुशलचन्दजी ने तीन व श्री गुमानचन्द्रजी ने भी चातुर्मास किया। अब आपने चातुर्मास कर निमाज का गौरव बढ़ाया।"

संघ प्रमुख श्री तेजराजजी भण्डारी, निमाज- "हमारी विनति कई वर्षों से थी, विनति करने वाले प्रमुख श्रावक देवलोक हो गये, पर हम हताश नहीं हुए। समय के साथ इस वर्ष हमारी विनति साकार हुई। किन्तु डर था कि चातुर्मास कैसे सफल होगा? नई पीढ़ी ने समर्पण के साथ चातुर्मास की पूरी कमान सम्भालकर जो जिम्मेदारी निभाई, उसी के बल से चातुर्मास सफल हुआ। समूचे चातुर्मास में सुव्यवस्था के लिये सभी कार्यकर्त्ताओं का उपकार मानता हूँ। बालक-बालिका वर्ग भी सेवा में अहर्निश उद्यत रहा। आचार्य हस्ती के तेरह दिवसीय संथारे की तरह 25 वर्ष बाद पुनः चातुर्मास प्राप्ति से वैसे ही परिदृश्य की पुनरावृत्ति पूज्य आचार्य भगवंत के अतिशय से हुई। हमारी तो मात्र अटूट भक्ति ही थी, भेंट के लिये कुछ भी नहीं है, मात्र आँखों में अश्रुरूप पानी है.... उसी को आपश्री की चरण सन्निधि में अर्पित कर रहा हूँ।"

पूज्य आचार्य भगवन्त ने फरमाया- 'अकेले महावीर ने हिंसाकारी यज्ञ बंद करवाये। चार तीर्थ की स्थापना की। नारी की महिमा को प्रतिष्ठापित किया। आचार्य सिद्धसेन, लोंकाशाह ने उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक धर्म का निनाद किया। अकेले गाँधी ने आजादी दिलवाई। अकेला दीपक भी प्रकाश पुंज है, सन्निधि में आने वालों को आलोकित कर देता है। कृतित्व को प्रधान बताया है। संघ को ही लें। गुणगान करने वालों

से क्या संघ चल सकता है? कदापि नहीं। संघ आचरण करने वालों से चलता है। टेप सुना सकता है, कैमरा फोटो खींच सकता है, पर जीवन निर्माण नहीं कर सकता। आचरण वालों की बात सुनकर अवस्था सम्पन्न वालों ने भी मासक्षपण तप किया। चातुर्मास का योग एवं संतों की सन्निधि पाकर कइयों ने तप किये। अरुणजी भण्डारी ने बाहर से आकर 72 की तपस्या की। निमाज में धर्मध्यान पुण्याकर्षण से हुआ। निमाज में लोग पता नहीं कहाँ-कहाँ से आये। 65 से अधिक ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किये। शील व्रत लेने वाले जैन कम जैनेतर अधिक थे। रात्रि भोजन त्याग के नियम लेकर साधना पथ पर आगे बढ़े। चतुर्विध संघ सुखशांति के साथ साधना में रत रहा। गुरुदेव का गुप्त आशीष रहा। सुशीला भवन में आने के बाद बाहर नहीं गया। सेवा में संत-सती सहयोगी रहे। श्रावक-श्राविकाओं के सहयोग के साथ पूरे गाँव का सहयोग मिला। सभी समाज के लोग प्रवचन व धर्म साधना में सहयोगी रहे। बादल आकर चले जाते हैं पर हरियाली पीछे रहती है। ऐसे ही संतों के जाने के बाद धर्म की प्रवृत्ति प्रवाहमान रहे। संत भी बादल सदृश हैं। संतों की वाणी जो आपके हृदय में पहुँची है, वह सद् आचरण में रहे तो निमाज चातुर्मास की स्मृति बनी रहेगी। निमाज की विनति वर्षों से रही, पर क्षेत्र की फरसना इस वर्ष होनी थी, जो संयोग से समाधि के साथ पूर्ण हुई। चातुर्मास काल में लिये हुए व्रत-नियमों में आगे बढ़ते रहें। अच्छी बात ग्रहण करना, बुरी छोड़ देना, कंकर छोड़ देना। मोती चुग लेना। यदि अज्ञान छुड़ाने के लिये कभी कठोर शब्दों में कहने में आया तो वह मात्र धर्म में आगे बढ़ाने की भावना से ही कहा, इसे अन्यथा नहीं लें। फिर भी उपयोग रखते हुए छद्मस्थ से भूल हो सकती है। खयाल रखते हुए भी दिल दुःखाया हो, ठेस पहुँचाई हो तो मेरी ओर से संतों एवं सतियों की ओर से क्षमायाचना। सत्संग का अवसर मिले तो सेवा का आदर्श उपस्थित करना, यही मंगल कामना है।"

संघ मंत्री श्री निर्मलकुमारजी बम्ब- संत-सतियों की कभी विदाई नहीं होती, वे हमारे हृदय में विराजमान हैं। विदाई करनी है तो अवगुणों की कीजिये। संत-सरिता एक समान है। सरिता जहाँ भी निकलती है, क्षेत्र को हरा-भरा बना देती है। संत भगवंत जहाँ-जहाँ भी पधारते हैं वहाँ का परिवार, समाज, क्षेत्र भी सद्गुणों से महक उठता है। असीम पुण्य के उदय से निमाज जैन श्री संघ को स्थानकवासी परम्परा के सबसे ज्येष्ठ आचार्य का वर्षावास मिला। संघ इसके लिये सदैव कृतज्ञ रहेगा। संघ के किसी भी सदस्य से अविनय आशातना हुई हो तो क्षमा प्रार्थी हैं। भगवन् आपके अतिशय से ही यह अलौकिक चातुर्मास सम्पन्न हुआ। संघ के कार्यकर्त्ताओं ने दर्शनार्थियों के ठहरने, धर्माराधना, भोजन की सुन्दर व्यवस्था अपने कंधों पर लेकर सेवाभाव एकजुटता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। चातुर्मास में अनेक ग्राम-नगरों, महानगरों के श्री संघों ने व संघ की सहयोगी संस्थाओं के

पदाधिकारियों ने समय-समय पर गुरुचरण सेवा में दर्शन, वन्दन, सेवाभक्ति, व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित की। चातुर्मास में गुरुभक्ति व सेवा की भावना से चौका करके रहने वाले परिवारजनों के साथ सांखलाजी, कांकरियाजी, सुराणाजी, हिरणजी नाहटाजी, डूंगरवालजी, कवाड़जी, बोहराजी, ओस्तवालजी, डोसीजी, खींचाजी, मेहताजी आदि का धर्माराधना में पूरा सहकार रहा। सभी का आभार। श्री सोहनलालजी गंगवाल और समस्त परिवारजनों का चातुर्मास स्थल के लिये सुशीला भवन उपलब्ध करावाये जाने की उदात्त भावना हेतु आभार।

श्री सौभाग्यमलजी कुश्तला वाले एवं श्री रामदयालजी बजरिया वालों ने पूरे वर्षावास काल में नियमित डेढ़/दो पौरसी, एकाशन, दया, संवराधना कर चातुर्मास को दीप्तिमान बनाया।

पूज्य आचार्य भगवन्त ने मुमुक्षु बहिन हिमांशी जी की भागवती दीक्षा 06 फरवरी 2017 को जलगांव महाराष्ट्र में किये जाने पर स्वीकृति फरमाई।

**चातुर्मास की प्रमुख उपलब्धियाँ-**

1. आचार्य भगवन्त एवं सभी संत-सतीवृन्द के स्वास्थ्य में समाधि रही।
2. चतुर्विध संघ में ज्ञान, दर्शन,चारित्र की वृद्धि प्रमोदकारी रही।
3. आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से शीलव्रत के 65 प्रत्याख्यान।
4. स्वाध्याय संघ द्वारा स्वाध्याय शिविर का आयोजन।
5. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्रावक संघ एवं श्राविका मण्डल के वार्षिक अधिवेशन का आयोजन।
6. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के सदस्यों का आचार्य भगवन्त के दर्शन हेतु पदार्पण।
7. विद्वानों की द्विदिवसीय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन।
8. स्वाध्याय शिक्षक शिविर का आयोजन।
9. आध्यात्मिक चेतना आयाम महिला शिविर का आयोजन।
10. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न संस्कार केन्द्र पाठशाला का शुभारम्भ।
11. आचार्य हस्ती-हीरा विकलांग शिविर का आयोजन। जिसमें 409 दिव्यांगों को केलिपर आदि दिए गए।
12. चातुर्मास में दीक्षा हेतु तीन आज्ञा-पत्र की घोषणा हुई।
13. चातुर्मास में तीन जैन भागवती दीक्षाओं की घोषणा हुई।
14. पधारे हुए अतिथियों के लिए व्यवस्था में कोई कमी न हो, इसका विशेष ध्यान रखा

गया।

15. चातुर्मास काल में पीपाड़सिटी से तपस्वी भाई-बहनों का गुरुदेव के मुखारविन्द से पच्चक्खान के लिए लगातार आना रहा।

16. निमाज जैन श्री संघ का स्नेह-मिलन का आयोजन।

**निमाज से विहार-**

15 नवम्बर को दोपहर बाद 3 बजे जयनिनाद के साथ पूज्य गुरुदेव का विहार भगवान महावीर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। विहार सेवा में जैन-जैनेतर बन्धु-भगिनी साथ रहे। व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.आदि ठाणा का विहार स्थानक भवन से जयघोष के साथ सुशीला भवन हुआ। कुशालपुरा संघ, सोजत संघ व भोपालगढ़ संघ ने अपने क्षेत्र फरसने की विनति गुरुदेव के चरणों में रखी।

16 नवम्बर को पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः स्थानक भवन पधार आये एवं प्रवचनामृत फरमाया। दोपहर 2 बजे बाद पावन श्री चरण आगे विहार के लक्ष्य से बढ़ गये एवं बागिपाड़ा पहुँच कर रात्रि साधना की। व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा ने जोधपुर गुरुणी म.सा. के दर्शन लक्ष्य की भावना से जैतारण के लिये विहार फरमाया। 17 नवम्बर को विहार कर कुशालपुरा एवं 18 नवम्बर को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाशजी डुंगरवाल की जन्मभूमि करमावास पधारे। यहाँ कोटा का विज्ञान नगर संघ चातुर्मास की विनति करने पावन चरणों में उपस्थित हुआ। 18 से 20 नवम्बर तक करमावास में वीतराग वाणी का वर्षण कर 21 को पीपलिया कलाँ पधारे। यहाँ 21 से 24 नवम्बर तक विराजकर 25 नवम्बर को रेलों के बेरा पधार आये एवं 26 नवम्बर को चण्डावल की धरा पर मंगलमय पदार्पण हुआ। आगे का विहार सोजतसिटी की ओर चल रहा है। निमाज जैन श्री संघ विहार सेवा का बराबर लाभ ले रहा है।

*-जगदीश जैन*

## उपाध्यायप्रवर की सन्निधि में दिग्विजयनगर जोधपुर का अनूठा रहा चातुर्मास

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी **श्री गौतममुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में सम्पन्न चातुर्मास में तपाराधन, ज्ञानाराधन एवं धर्माराधन का ठाट रहा। चातुर्मास समापन के अवसर पर मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने भाई अशोकजी चोरडिया को प्रेरणा करते हुए फरमाया कि चार माह तक यह चोरडिया भवन (पौषधशाला) धर्म भवन बना रहा, मैं

चाहता हूँ कि भाई अशोकजी इस भवन को रत्नपौषधशाला बना दें तो इस क्षेत्र के वासियों को धर्म-ध्यान के लिए अच्छा स्थान मिल जायेगा। श्रद्धेय मुनिश्री ने सभी श्रावक-श्राविकाओं से क्षमायाचना करते हुए कहा कि वैसे तो संतों की भावना किसी का दिल दुखाने की नहीं रहती है, फिर भी चार माह में किसी भी श्रावक-श्राविका को कुछ अनुचित कहने में आ गया हो, तो उपाध्याय भगवन्त एवं सभी संतों की ओर से क्षमायाचना करता हूँ। उपाध्यायप्रवर ने फरमाया कि हमें विदाई दी जा रही है, परन्तु चार माह में जो सीखा है, उसे जीवन में साकार करना है। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष (श्री धनपतजी सेठिया) ने उपाध्यायप्रवर एवं सभी गुरुभगवन्तों से क्षमायाचना करते हुए निवेदन किया कि संघ के किसी भी पदाधिकारी एवं सदस्य के द्वारा किसी भी प्रकार की अविनय आशातना हुई हो तो उसके लिए क्षमायाचना करता हूँ। साथ ही उन्होंने चातुर्मास समिति को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए भाई श्री चंचलमलजी चोरडिया, अशोकजी चोरडिया एवं सभी कार्यकर्त्ताओं तथा अर्थसहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

दिग्विजयनगर के सफल चातुर्मास के पश्चात् निकटवर्ती क्षेत्रों को फरसने की भावना से सन्त मण्डली के साथ उपाध्यायप्रवर ने भास्कर नगर विहार किया। वहाँ से गुलाबनगर पधारने के पश्चात् साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के द्वारा तिविहार संथारा ग्रहण करने पर उपाध्यायप्रवर ने पावटा की ओर विहार कर दिया। साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. का स्वास्थ्य प्रतिकूल चल रहा था। अतः विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा ने शक्तिनगर चातुर्मास सम्पन्न कर पावटा की ओर विहार किया। बीच में जालम निवास में श्री मांगीलालजी सुरेन्द्रजी कुम्भट के निवास पधारे एवं वहाँ से साध्वीप्रमुखाजी की सेवा में पधार गए। *-धनपत सेठिया, अध्यक्ष*

## पीपाड़ का ऐतिहासिक चातुर्मास

सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 का पीपाड़ चातुर्मास ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप आदि सभी दृष्टियों से अत्यन्त सफल रहा। चातुर्मास की प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नानुसार हैं- **(अ) ज्ञान के क्षेत्र में- 1.** लगभग 65 जनों द्वारा नवीन ज्ञानार्जन। सामायिक, प्रतिक्रमण, उववाई की 22 गाथा, मोक्षमार्ग की 38 गाथा, नमिपवज्जा आदि में विशेष उत्साह। **(आ) दर्शन क्षेत्र में- 2.** पीपाड़ शहर में पहली बार चातुर्मास काल में 206 जनों द्वारा 1008 वंदना (24 घण्टे के समय में)। **3.** एक युवारत्न श्री धर्मवीरजी कांकरिया द्वारा 24 घण्टे में 7200 वंदना की गई। **(इ) चारित्र के क्षेत्र में- 4.** प्रतिरात्रि कम से कम पाँच व्यक्तियों द्वारा संवर साधना। **5.** श्री मिश्रीमलजी

म.सा., श्री पुष्करमुनिजी म.सा. के जन्म-दिवस, शरद् पूर्णिमा, पर्युषण आदि को विशेष संवर-साधना एवं धर्म जागृति की प्रेरणा। **6.** शरद पूर्णिमा को 190 व्यक्तियों द्वारा रात्रि धर्मजागरणा की गई। **(ई) जप के क्षेत्र में- 7.** प्रतिदिन दोपहर को 12 से 1 बजे तक का एक घण्टे का नवकार मंत्र का सामूहिक जाप, वो भी श्रावकों द्वारा, जिसमें वार अनुसार विशेष व्यवस्था रखी गई। **8.** पर्युषण के आठों दिवस, बकरीद पर अखण्ड नवकार मंत्र का जाप। **(उ) दान क्षेत्र में- 9.** तपस्या निमित्त सैकड़ों जनों द्वारा लाखों रुपये दान की घोषणा। **(ऊ) तप के क्षेत्र में- 10.** हजारों उपवास, सैकड़ों बेले की तप-साधना। 144 तेले, 9 चोले, 9 पचोले, 53 अठाई, 49 नौ की, 3 दस की, 11 की ग्यारह, 12, 15, 16, 17 दिवसीय एवं 6 मासक्षपण तप (जिसमें 1 द्वारा 51 दिवसीय तप), 1 सिद्धितप की, 3 राजा परदेशी तप की, 2 एकाशन सिद्धितप की। **11.** दीपावली पर्व पर 35 सामूहिक तेले (पहली बार), आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के दीक्षा दिवस पर 48 सामूहिक बेले (पहली बार), श्री पुष्करमुनिजी म.सा. के जन्मदिवस पर 90 जनों द्वारा एकाशन तप की साधना। **12.** लगभग 45 जनों द्वारा जीवनकाल में पहली बार तेला, लगभग 55 जनों द्वारा जीवनकाल की प्रथम अठाई। **13.** कई जनों द्वारा जीवनकाल का प्रथम उपवास भी इसी चातुर्मास में किया गया। **(ऋ) संघ क्षेत्र में- 14.** प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण, शास्त्र वाचना, अध्ययन शाला में सभी जनों का अच्छी उपस्थिति के साथ विशेष उत्साह। **15.** ''युवाशाला-जिज्ञासा- समाधान सत्र'' में युवाओं का विशेष उत्साह। **16.** वर्षों से अलग-अलग चल रहे श्रावकों के प्रतिक्रमण की एकता, श्राविकाओं की शरद पूर्णिमा की एकता इस चातुर्मास की विशेष उपलब्धि रही। **17.** सभी प्रकार की सेवा में सभी जनों का विशेष उत्साह दिखा। गोचरी सेवा में तो उत्कृष्ट नजारा। **18.** सम्पूर्ण चातुर्मास में बेआसन, एकासन, आयम्बिल/नींवी, उपवास, तेले, अठाई की लड़ी निर्विघ्न रूप से चली। **(ए) चारित्रात्माओं के लिए- 19.** चारों ही माह चारों ही संतों के लगभग शारीरिक अनुकूलता। **20.** श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा अपने जीवनकाल की प्रथम अठाई इसी चातुर्मास में। **21.** प्रवचन में युवामनीषी श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 'बड़ी साधु वंदना' का बिना देखे उल्टे क्रम में गायन, 111 गाथा से लेकर एक तक पश्चानुपूर्वी क्रम में।*-नमन मेहता-094141-16766*

## बालोतरा का आध्यात्मिक चातुर्मास

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में बालोतरा चातुर्मास ज्ञान, दर्शन, तप एवं ध्यान-साधना की दृष्टि से

ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक रहा। प्रवचन के माध्यम से ज्ञानामृत का झरना बहा, तपस्या में 120 से भी अधिक अठाई एवं 12 शीलव्रत के प्रत्याख्यान सहित छोटी-बड़ी तपस्याओं का क्रम सतत चलता रहा। प्रत्येक रविवार को ध्यान-साधना शिविर आयोजित हुए। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई तथा युवा वर्ग ने भी अपना विशेष योगदान दिया। चातुर्मास में स्वधर्मी वात्सल्य का लाभ सुश्रावक श्री मीठालालजी, जितेन्द्रकुमारजी, गौतमचन्दजी छाजेड़ 'मधुर' परिवार ने उल्लास के साथ लिया। श्री धर्मेशजी चौपड़ा के नेतृत्व में समागतों के आवास एवं सन्तों की गोचरी व विहार सेवा का कार्य उल्लेखनीय रहा।

चातुर्मास समापन से दो दिन पूर्व गृहमंत्री श्री गुलाबचन्दजी कटारिया, निजी सचिव श्री महेन्द्र जी पारख, श्री प्रसन्नचन्दजी मेहता ने सेवा लाभ प्राप्त किया। संस्कार निर्माण एवं युवा चेतना के अन्तर्गत सुश्रावक श्री राजेन्द्रजी दुधेड़िया-बैंगलोर ने विभिन्न विद्यालयों, स्थानक, तेरापंथ भवन, बाड़मेर स्थानक, बी.एस.एफ. में कई कार्यक्रम आयोजित किए। चातुर्मासिक पर्व पर ज्ञानगच्छ के संत श्री रमेशमुनिजी आदि ठाणा, महासती श्री कमलेश कंवरजी आदि ठाणा भी प्रवचन सभा में सम्मिलित हुए तथा स्थानक से विहार के समय भी उपस्थित रहे। विहार के क्रम में बालोतरा के उपनगर भण्डारी आराधना भवन, मोतीलाल मोदी निवास, सुरंगीलाल सालेचा निवास, ओम बांठिया सेवा कुटीर, नवकार कॉलोनी, दिगम्बर समाज भवन, गपणत चौपडा निवास आदि क्षेत्रों की फरसना के पश्चात् जानियाना विहार हुआ तथा जोधपुर की ओर कनाना, पारलू, समदड़ी धुंधाड़ा, सालावास होते हुए 30 नवम्बर को पावटा, जोधपुर पधारे हैं। नियमित रूप से समदड़ी तक युवा वर्ग एवं श्राविका मण्डल ने विहार सेवा का लाभ लिया।

बालोतरा उपनगर प्रवास के दौरान मानवाधिकार आयोग अध्यक्ष जस्टिस प्रकाशजी टाटिया, लोकायुक्त जस्टिस एस.एस. कोठारी एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रचारक बाबाजी नंदलालजी के साथ प्रमोदमुनिजी म.सा.आदि ठाणा की ज्ञानचर्चा विशिष्ट रही।

चातुर्मास में विशेष रूप से श्राविका मण्डल में श्रीमती अनीतादेवी चौपड़ा, कांतादेवी जागीरदार, संजूदेवीजी भण्डारी सहित श्राविका मण्डल, युवा वर्ग में धर्मेशजी चौपड़ा, जवरीलालजी सालेचा, सोहनजी श्रीश्रीमाल, ललितजी चौपड़ा, गौतमसिंहजी जैन, धनराजजी भण्डारी, गौतमजी 'मधुर', सिद्धार्थजी चौपड़ा, दिनेशजी गोलेच्छा सहित युवाओं की सक्रिय भूमिका रही, वहीं चौके में श्री मीठालालजी 'मधुर', श्री उत्तमजी मेहता, श्री सोहनजी सालेचा, श्री मोतीलालजी मोदी, श्री धनराजजी चौपड़ा, श्री

कमलेशजी चौपड़ा, श्री पुष्पेन्द्रजी तातेड़ की सेवाएँ सराहनीय रही। श्री वर्द्धमान जैन स्थानकवासी संघ एवं महिला मण्डल की सकारात्मक भूमिका रही, आचार्य भगवन्त की महती कृपा से समन्वय का वातावरण रहा। पूरे बालोतरा क्षेत्र में चातुर्मास सफलता के विशेष आराधना क्रम को सराहा गया। *-ओमप्रकाश बांठिया*

## महासती-मण्डल के चातुर्मासों में धर्माराधन

**नदबई-** मधुर व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 54 वां दीक्षा-दिवस पंच दिवसीय आध्यात्मिक पर्व के रूप में 03 से 07 नवम्बर 2016 तक मनाया गया। 15 नवम्बर 2016 को महासतीजी का मंगल विहार खेमचन्दजी बागपतिया के मकान की ओर हुआ। यहाँ से पहरसर पधारे हैं। *-नरेशचन्द जैन, मंत्री-094609-12255*

**मालवीय नगर, जयपुर-** व्याख्यात्री महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में चातुर्मास में तपाराधन का ठाट रहा। श्रीमती शान्ताजी मोगरा ने 15 दिवसीय एवं श्री राकेशजी जैन नाहर ने 13 एवं 10 दिवसीय तप किए। इनके अतिरिक्त 11 दिवसीय पाँच, 9 दिवसीय 7, 8 दिवसीय (अठाई) 19, 7 दिवसीय 3 एवं 5 दिवसीय 4 तप हुए। श्रीमती सन्तोषदेवी एवं कविया जी डागा ने एकाशन के एकान्तर तप किए। महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. की प्रेरणा से पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 54 वें दीक्षा दिवस पर 06 नवम्बर 2016 को 108 बकरों को अभयदान दिया गया।

**यादगिरी (कर्नाटक)-** व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 की सन्निधि में यादगिरी के चातुर्मास से सभी प्रसन्न रहे। महासतीजी ने नवयुवकों को प्रेरणा करते हुए सट्टा, जुआ, गुटखा जैसे व्यसनों से दूर रहने का संकल्प करवाया। यहाँ 67 प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक, प्रतिक्रमण, थोकड़े आदि सीखे हैं। तपाराधन में 128 तेले, पाँच चोले, दो पचोले, 7,8,9,13,15,21 आदि दिवसीय तप की महती साधना हुई है। चार आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान हुए। तप-त्याग एवं ज्ञान ध्यान का उत्साह चारों माह बना रहा। स्थानकवासी, तेरापंथी एवं मूर्तिपूजक तीनों संघों ने मिलकर चातुर्मास को ऐतिहासिक एवं यशस्वी बना दिया। श्रीमती सरसबाईजी धोका ने 72 वर्ष की आयु में 61 दिन की दीर्घ तपस्या सम्पन्न की। ज्ञानाराधन की दृष्टि से श्रावक-श्राविकाओं ने अनेक थोकड़े एवं कुछ आगम कण्ठस्थ किए।

*-गौतमचन्द धोका-084732-52725*

**बाड़मेर-** व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में चातुर्मास अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ। 8 दम्पतियों ने शीलव्रत अंगीकार

किया- 1. श्रीमती शान्तिबालाजी-श्री चम्पालालजी भण्डारी, 2. श्रीमती शान्तीदेवीजी-श्री रतनलालजी बोहरा, 3. श्रीमती दन्नूदेवी एवं श्री रावलचन्दजी गोलेच्छा, 4. श्रीमती सुआदेवीजी एवं श्री मेवारामजी मालू, 5. श्रीमती कमलादेवीजी एवं श्री बाबूलालजी मेहता, 6. श्रीमती एवं श्री बाबूलालजी घीया, 7. श्रीमती एवं श्री भंवरलालजी सेठिया, 8. श्रीमती खम्मादेवीजी एवं बाबूलालजी बोहरा। अष्टमी से लेकर पूर्णिमा तक नवकार मंत्र का श्राविकाओं द्वारा जाप किया गया। पूज्य आचार्यप्रवर के 54 वें दीक्षा-दिवस पर 25-30 श्राविकाओं द्वारा 8-8 सामायिकें की गईं। चतुदर्शी को 20-25 एकाशन हुए। 20-25 श्राविकाओं ने रात्रिसंवर के साथ पाँच-पाँच सामायिकें कीं। चातुर्मास की पूर्णाहुति पर अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भाव भीने विचार रखे। सभा का संचालन संघ मंत्री श्री जितेन्द्रजी बाँठिया ने किया। *-जितेन्द्र बाँठिया, मंत्री*

**सूरत-** व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 की सन्निधि में चातुर्मास उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। 9 मासक्षपण के अतिरिक्त 21 चोला, 15,12,11 एवं अठाई की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। तेला, उपवास, आयंबिल, संवर, एकाशन की लड़ी निरन्तर चली। ज्ञानाराधन की दृष्टि से सुखविपाक सूत्र, अनुत्तरौपपातिक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, अंतगड सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, सामायिक सूत्र आदि कई श्रावक-श्राविकाओं ने कण्ठस्थ किए। 14 नवम्बर को चातुर्मास की पूर्णाहुति दिवस पर 250 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही तथा सायंकालीन 5 सामायिक के साथ धर्मजागरणा की गई, जिसमें 55 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। 15 नवम्बर को उधना की ओर विहार किया। उधना से विहार कर 20 नवम्बर को नवसारी पधारे। विहार सेवा में सूरत के श्रावक-श्राविकाओं ने भी लाभ लिया। *-सुनील नाहर, महामंत्री, 098251-25718*

**हरसाना-** व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा 3 की सन्निधि में चातुर्मास सफल रहा। 3 आजीवन शीलव्रत अंगीकार किये गए, उपवास एवं एकाशन के मासक्षपण हुए। 15 दिवसीय, तीन 9 दिवसीय, 9 अठाई एवं दस पचोले सम्पन्न हुए। विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। एकाशन एवं उपवास के तेले हुए। प्रवचन में खेरली, मण्डावर, हिण्डौन, महुवा, रसीदपुर, अलवर से पधारे तथा निकटवर्ती ग्राम खोह, लक्ष्मणगढ़, मौजपुर, बिचगांवा के श्रावक-श्राविकाओं द्वारा प्रवचन श्रवण का लाभ लिया गया। *-नितिन कुमार जैन-84400-70387*

**अजमेर-** व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 की सन्निधि में 22 से 29 अक्टूबर तक स्वाध्याय भवन में 'पुच्छिसु णं' का 108 बार वाचन किया गया। 16 अक्टूबर को आचार्यश्री हमीरमलजी म.सा. की पुण्यतिथि मनाई गई तथा शरद पूर्णिमा की

रात्रि में 15 सामायिक के साथ श्राविकाओं ने रात्रि जागरण किया। 17 से 21 अक्टूबर तक महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. ने श्रावक के 12 व्रतों के नियमों को समझाया तथा 12 व्रतधारी श्रावक-श्राविका बनाये गए। सिद्धितप की आराधना हुई तथा अनेक प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान हुए। *-चन्द्रप्रकाश कटारिया, मंत्री*

## आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 54 वें दीक्षा दिवस पर 108 बकरों को अभयदान

महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. की प्रेरणा से पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 54 वें दीक्षा दिवस (06 नवम्बर 2016) के उपलक्ष्य में 16 अक्टूबर 2016 को स्थानकवासी जैन सोसायटी (संघ) मालवीयनगर, जयपुर द्वारा 200 बकरों को अभयदान दिया गया। दान दाताओं ने उत्साह से अभयदान प्रदान करने में नाम लिखवाये तथा बकरों को तिलक एवं माल्यार्पण किया। भोपालगढ़ बकराशाला में उन्हें सुरक्षित जीवन हेतु भेजा गया।

## मुमुक्षुओं की शोभा यात्रा व अभिनन्दन समारोह, गुण सौरभ पुरस्कारों का वितरण तथा दक्षिण भारत रत्नसंघीय सम्मेलन सम्पन्न

**चेन्नई-** श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु के तत्त्वावधान में 19 नवम्बर 2016 को मुमुक्षु भाई श्री कल्पेशजी कवाड़, मुमुक्षु बहिन सुश्री मधुबालाजी कवाड़, मुमुक्षु बहिन सुश्री हिमांशीजी कांकरिया की शोभा यात्रा स्वाध्याय भवन, साहुकारपेट से प्रातः 8.00 बजे प्रारम्भ होकर 9.30 बजे राजा अन्नामल्लै हॉल, ब्राडवे पहुँची। करीब 1500 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में अभिनन्दन समारोह प्रारम्भ हुआ।

संघ अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमारजी कांकरिया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। गुंण सौरभ गणिहीरा प्रतियोगिता के वरीयता प्राप्त प्रतियोगियों को गणि हीरा जन्म पदक, गणि हीरा संयम पदक, गणि हीरा रजत पदक से एवं प्रमाण-पत्र द्वारा सम्मानित किया गया।

श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा-ब्यावर ने रत्न संघ आचार्य पट्टावली एवं आचार्य भगवन्तों के गुणगान किये। गुणसौरभ गणिहीरा के सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता-जोधपुर ने आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. एवं आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के विशिष्ट गुणों का वर्णन किया। नंदी सूत्र पुरस्कार विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा साहब ने मुख्य अतिथियों का विस्तृत परिचय, मुमुक्षु आत्माओं की विशेषता, उनके परिवारिकजन के

गुणों का वर्णन किया। मुख्य अतिथि श्री विनीतजी कोठारी (न्यायाधिपति, कर्नाटक उच्च न्यायालय) ने मुमुक्षु आत्माओं एवं संघ के प्रति उद्‌गार व्यक्त किये।

तीनों मुमुक्षुओं एवं उनके पारिवारिकजनों का संघ की ओर से माल्यार्पण, शाल्यार्पण, चूँदड़ी, अभिनन्दन-पत्र द्वारा स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। सुश्री हिमांशीजी कांकरिया, श्री कल्पेशजी कवाड़ एवं सुश्री मधुबालाजी कवाड़ ने अपने पारिवारिकजनों एवं संघ के प्रति उद्‌गार व्यक्त करते हुए उपस्थित श्रद्धालुओं को गद्‌गद् कर दिया। दोपहर 3.00 बजे दक्षिण भारत रत्न संघीय क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.शिखरमल जी सुराणा, कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा एवं डॉ. अशोकजी कवाड़, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेछा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पारसचन्दजी हीरावत सहित स्थानीय संघ के विभिन्न पदाधिकारी श्री दुलीचन्दजी बाघमार, अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी कांकरिया, श्री बुधमलजी बोहरा, बैंगलोर के श्री पदमराजजी मेहता स्थानीय संघ मंत्री श्री गौतमचंदजी लोढ़ा, श्री सुधीरजी सुराणा, श्री शांतिलालजी पगारिया, श्री महेन्द्र जी बोहरा, श्री नरेन्द्रजी कांकरिया, श्रीमती इन्द्राजी बोहरा, श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल-बैंगलोर, श्रीमती विनीताजी सुराणा आदि उपस्थित थे। सम्मेलन में अनेक प्रकार के उपयोगी सुझाव दिए गए तथा यह कहा गया कि सामूहिक रात्रिभोज का आयोजन न करना रत्नसंघ की पहचान होना चाहिए तथा संघ के प्रत्येक परिवार में स्वाध्यायी तैयार करने चाहिए। संघाध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा ने विभिन्न आयोजनों की सफलता हेतु श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

*-आर.नरेन्द्र कांकरिया, प्रचार-प्रसार सचिव*

## निमाज में अध्यात्म चेतना आयाम शिविर सम्पन्न

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, जिनशासन गौरव, संघनायक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की ओर से निमाज (जिला-पाली) में निमाज जैन श्रीसंघ के तत्वावधान में त्रिदिवसीय अध्यात्म चेतना आयाम शिविर दिनांक 4 से 6 नवम्बर 2016 तक आयोजित किया गया।

इस शिविर में प्रार्थना, मैत्री ध्यान  के साथ संयमियों के साथ वचन-व्यवहार, गुरुभक्ति, विनय-विवेक, रत्नसंघ की समाचारी एवं धारणा, नियमित जीवन में 18 पापों से कैसे बचा जाये, धोवन पानी की उपयोगिता, सचित्त-अचित्त, जीवन में पुण्य और पुरुषार्थ की महत्ता, व्यस्त जीवन में धर्म की सरलता आदि विषयों पर उद्बोधन दिया गया।

शिविर में सन्त-सतीवृन्द का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अध्यापन में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की उपाध्यक्ष श्रीमती पुष्पाजी मेहता-पीपाड़शहर, श्री धर्मचन्दजी जैन-जोधपुर, रजिस्ट्रार-शिक्षण बोर्ड, श्री राकेशजी जैन-जयपुर एवं श्री जिनेन्द्रजी जैन-सवाईमाधोपुर की भी सेवाएं प्राप्त हुई।

शिविर में पल्लीवाल-पोरवाल, मारवाड़ आदि विभिन्न ग्राम-नगरों से 245 से अधिक संख्या में शिविरार्थियों ने भाग लिया। *-बीना मेहता, महासचिव*

## बनें आगम अध्येता (6)
## आवश्यकसूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा आयोजन

बनें आगम अध्येता योजना के अन्तर्गत 'आवश्यक सूत्र' आगम पर परीक्षा आयोजित की जा रही है। इस परीक्षा में श्राविकाओं की रुचि को देखते हुए मूल्यांकन प्रश्न पत्र भरकर जयपुर भिजवाने की अन्तिम तिथि 31 दिसम्बर, 2016 रखी गई है तथा मुख्य समापक परीक्षा सभी केन्द्रों पर 26 फरवरी, 2017 को आयोजित की जायेगी। परीक्षा में अधिकाधिक बहिनें भाग ले सकें, अतः कृपया इसकी सूचना अपने क्षेत्र में अवश्य करावें।

प्रतियोगिता हेतु पुस्तक का मूल्य 60/- रुपये रखा गया है। **सम्पर्क सूत्र:-** श्रीमती बीनाजी मेहता-97727-93625, श्री राकेशजी जैन-94616-63545 एवं आवश्यक सूत्र की पुस्तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन:(0141) 2575997/4068798 से मंगवा सकते हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा बनें आगम अध्येता योजना के अन्तर्गत खुली पुस्तक परीक्षाओं में भाग लेने वाले प्राप्तांक 70 तथा इससे ऊपर के प्राप्तांक वाले विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में नेट द्वारा हस्तान्तरित की जायेगी। अत: प्रतियोगिता विजेता प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी भिजवाने का श्रम करावें :- Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bake IFS code, Micr Code, Mobile No.

*-बीना मेहता-महासचिव*

## श्राविका मण्डल का प्रवास कार्यक्रम सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की सचिव श्रीमती अरूणाजी कर्नावट-जयपुर तथा श्रीमती जूलीजी कोठारी-जयपुर 12 नवम्बर, 2016 को नदबई, खेरली, हरसाना तथा मण्डावर पधारे। महासती मण्डल के चातुर्मासार्थ दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण के साथ श्राविकाओं से सम्पर्क स्थापित किया गया तथा संघ की गतिविधियों की

जानकारी देने के साथ संघ में समर्पण का भाव बढ़े इसकी प्रेरणा करते हुए श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित आवश्यकसूत्र प्रतियोगिता में भाग लेने की प्रेरणा की गई। स्थानीय केन्द्रों में धार्मिक ज्ञानार्जन हेतु श्राविकाओं, बालक-बालिकाओं की साप्ताहिक कक्षाएँ लगाने तथा शिक्षण बोर्ड द्वारा आयोजित थोकड़े व अन्य परीक्षाओं में भाग लेने की प्रेरणा की गई।

*-बीना मेहता, महासचिव*

## आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा 08 जनवरी 2017 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ों की परीक्षा) की कक्षा 1 से 8 तक की आगामी परीक्षा **08 जनवरी-2017,** रविवार को दोपहर 12.30 बजे से आयोजित की जाएगी।

1. परीक्षा ज्ञानवृद्धि का प्रमुख साधन है। क्रमबद्ध एवं सही ज्ञान ही व्यक्ति को हित-अहित की जानकारी कराता है। अतः ज्ञान बढ़ाने एवं सुसंस्कार पाने हेतु आप स्वयं भी परीक्षा दें तथा अन्य भाई-बहनों को भी परीक्षा में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा कर धर्म दलाली का लाभ प्राप्त करें।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारम्भ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।
5. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर जमा कराने की अंतिम तिथि 15 दिसम्बर-2016 है।
6. कक्षा 1 से 8 तक की परीक्षा में निम्नांकित थोकड़े रखे गये हैं- **प्रथम कक्षा-** 25 बोल, 67 बोल, सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण, संज्ञा, सवणे नाणे। **द्वितीय कक्षा-** कर्म प्रकृति, गति-आगति, चौदह गुणस्थान का बासठिया, रूपी-अरूपी, उपयोग। **तृतीय कक्षा-** नवतत्त्व, जयन्तीबाई, भवभ्रमण, श्वासोच्छ्वास, श्रमण निर्ग्रन्थों के सुख की तुल्यता। **चतुर्थ कक्षा-** समिति-गुप्ति, ज्ञान लब्धि, 32 बोल का बासठिया, पाँच देव, छोटी गतागत। **पाँचवीं कक्षा-**लघुदण्डक, गुणस्थान, द्रव्येन्द्रिय, आठ आत्मा, असंयत भव्य द्रव्य देव। **छठी कक्षा-**अबाधाकाल, 98 बोल का बासठिया, विरह, दिशाणुवाई, छः काय। **सातवीं कक्षा-** 47 बोल की बन्धी, जीव पज्जवा, अजीव पज्जवा, 256 राशि, 50 बोल की बन्धी। **आठवीं कक्षा-** जीवधड़ा, 102

बोल का बासठिया, आहार पद, आत्मारम्भी, छः भाव।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-अशोक चोरड़िया, संयोजक-94141-29162, नवरतन गिड़िया, सचिव-94141-00759, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर-0291-2630490, फैक्सः 2636763, Website: jainratnaboard.com, E-mail: Shikshanboard jodhpur@ gmail. com

*-नवरतन गिड़िया, सचिव*

## संस्कार केन्द्र की कार्यशालाएँ सम्पन्न

**जोधपुर-** अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के जोधपुर शहर, आगोलाई, गोटन, निमाज, पाली, नागौर, भोपालगढ़, बिलाड़ा क्षेत्र के संस्कार केन्द्रों व शिविरों के शिक्षकों की गुणवत्ता में अभिवृद्धि के लिए एक दिवसीय कार्यशाला 06 नवम्बर 2016 को प्रातः 11.45 बजे श्री हर्षवर्धनजी ललवाणी-संयोजक की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई। अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के प्रतिनिधि, शिक्षण बोर्ड, स्वाध्याय संघ, श्राविका मण्डल के पदाधिकारी व निरीक्षक, संयोजक, संस्कार केन्द्र के सचिव, कोषाध्यक्ष, परामर्शदाता, संस्कार केन्द्रों के अध्यापक आदि 127 सदस्य उपस्थित थे। संस्कार केन्द्रों/शिविरों के कुल 110 अध्यापकों में से 81 अध्यापकों ने कार्यशाला में भाग लिया।

प्रातः 08.45 से 11.45 बजे तक व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. के प्रवचन के पश्चात् कार्यशाला प्रारम्भ हुई। श्री ललवाणीजी द्वारा स्वागत भाषण के साथ ही मिड ब्रेन एक्टिविटी पर विस्तार से चर्चा करते हुए अधिक से अधिक छात्रों को इस एक्टिविटी से जोड़ने की उन्होंने बलवती प्रेरणा की। श्री नेमीचन्दजी जैन, प्रबन्धक द्वारा तीन कालांशों में 'संस्कार डायरी' तथा 'अध्यापक निर्देशिका' के प्रत्येक बिन्दु को समझाते हुए प्रयोगात्मक तरीका अपनाते हुए प्रशिक्षण दिया गया। इनमें योग, ध्यान, प्रार्थना, माता-पिता, गुरु को प्रणाम, प्रतिज्ञा पाठ, अनमोल नारे, त्याग, प्रत्याख्यान के प्रति रुचि कैसे बढ़ायें, संस्कार केन्द्रों का संचालन कैसे करें आदि बिन्दु सम्मिलित थे। शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्दजी जैन द्वारा उच्चारण शुद्धि को केन्द्र में रखकर प्रतिक्रमण सूत्र के अनेक कठिन व संयुक्ताक्षर श्यामपट्ट पर लिखकर उनके अलग-अलग खण्ड अध्यापिकाओं से कराते हुए व नियमों का संदर्भ बताते हुए प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया।

'समस्या व समाधान' के कालांश में सचिव श्री राजेशजी भण्डारी ने शंकाओं, समस्याओं का समाधान किया। कार्यशाला में उपस्थित हुए सभी अध्यापकों/निरीक्षकों/

संयोजकों/कार्यकर्त्ताओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्दजी जैन ने किया।

**सवाईमाधोपुर-** श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सवाईमाधोपुर के अध्यक्ष श्री सुबाहु कुमारजी जैन की अध्यक्षता में 13 नवम्बर 2016 को संस्कार केन्द्र की एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। श्री नेमीचंदजी जैन, प्रबन्धक-अ.भा.श्री जैन रत्न. आ. संस्कार केन्द्र ने उदाहरण, रूपक कथाएँ, कविताओं के माध्यम से सरल सुबोध शैली में प्रशिक्षण दिया। संयुक्त कठिन अक्षरों को श्यामपट्ट पर लिखकर अध्यापकों से उनके अलग-अलग खण्ड कराते हुए नियमों का संदर्भ लेते हुए उच्चारण कराकर प्रशिक्षण दिया गया। योग, प्राणायाम, ध्यान-प्रार्थना, माता-पिता, गुरु को नमस्कार का अभ्यास, प्रतिज्ञा पाठ, जैन विश्वगान, नारे, नियम कराना, सूत्र, तत्त्व, कथा, काव्य का ज्ञान कैसे बोधगम्य बनाया जाएं, सूचनाएँ किस प्रकार भिजवाई जाएं आदि बिन्दु प्रशिक्षण विषय-वस्तु में सम्मिलित थे। अध्यापिकाओं के लिए निम्नलिखित बिन्दु छात्रों द्वारा अपनाए जाने हेतु प्रस्तुत किए गए-

1. जैन साधु-साध्वियों के आचार-विचार, उनके त्यागमय जीवन की झलक प्रस्तुत की जाये, वे जहाँ भी सम्पर्क में आए, दर्शन-वंदन करें।
2. बड़े-बुजुर्ग मिलने पर 'जय-जिनेन्द्र' से अभिवादन करें।
3. 'संस्कार डायरी' को सही रूप से भरने के लिए निर्देश दिये गये।

कार्यशाला में पोरवाल क्षेत्र के अलीगढ़, बेंगू, चौथ का बरवाड़ा, जैनपुरी, कोटा (रामपुरा, केशवपुरा), कुश्तला, मांगरोल, मोरवन बांध, सूरवाल, सुमेरगंज मण्डी, सवाई माधोपुर व सवाईमाधोपुर के उपनगरीय संस्कार केन्द्र, उखलाना से सम्बन्धित 18 संस्कार केन्द्रों के 25 में से 19 अध्यापक उपस्थित हुए एवं 6 केन्द्रों के निरीक्षकों ने भी भाग लिया।

**हिण्डौनसिटी-** श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हिण्डौनसिटी के अध्यक्ष श्री धर्मचन्दजी जैन की अध्यक्षता में 27 नवम्बर 2016 को एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। श्री नेमीचन्दजी जैन-प्रबन्धक, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र द्वारा 'अध्यापक निर्देशिका' पुस्तिका में अंकित विषय सामग्री के प्रत्येक बिन्दु को समझाया गया। कार्यशाला में पल्लीवाल क्षेत्र के भरतपुर, बिचगांव, गंगापुरसिटी व उसके उपनगरीय संस्कार केन्द्र, गढ़ी सवाईराम, हरसाना, हिण्डौनसिटी व उसके उपनगरीय संस्कार केन्द्र, खेरली, खोह, महुआ, नदबई, रसीदपुर, सैंथली से सम्बन्धित 14 संस्कार केन्द्रों के 18 में से 17 अध्यापक उपस्थित हुए व 4 केन्द्रों के निरीक्षकों ने भी भाग लिया।

*-राजेश भण्डारी, सचिव*

## लाडनूँ में शास्त्रवार्तासमुच्चय पर कार्यशाला सम्पन्न

जैन दर्शन एवं तुलनात्मक धर्म-दर्शन विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ द्वारा 11 से 20 नवम्बर को दस दिवसीय कार्यशाला आचार्य हरिभद्रसूरि विरचित शास्त्रवार्ता-समुच्चय पर आयोजित की गई, जिसमें पटना, ललितपुर, जोधपुर, जयपुर, अलवर, बंगाल, महाराष्ट्र आदि स्थानों से समागत 35 शोधार्थियों ने भाग लिया।

प्रो. दामोदरजी शास्त्री-लाडनूँ, प्रो. धर्मचन्दजी जैन-जोधपुर, प्रो. श्रीयांशजी सिंघई-जयपुर, समणी प्रो. चैतन्यप्रज्ञाजी-लाडनूँ, प्रो. वीरसागरजी जैन-दिल्ली ने अध्यापन कार्य किया। कार्यशाला का संयोजन डॉ. योगेशकुमारजी जैन ने किया।

## श्री जैन सेवारत्न पुरस्कार हेतु आवेदन आमंत्रित

**मुम्बई-** श्री जैन सेवा संघ मुम्बई द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में निःस्वार्थ भावना से योगदान देने वाली जैन समाज की विभूतियों को श्री जैन सेवारत्न पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष नौवें **श्री जैन सेवारत्न पुरस्कार 2016** के लिए सद्साहित्य, जैन धर्म प्रचार-प्रसार, शाकाहार, शिक्षा, चिकित्सा, पर्यावरण-संरक्षण एवं समाज सेवा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान देने वाले महानुभाव अपना आवेदन, करणीय कार्यों के पूर्ण विवरण, पासपोर्ट साइज फोटो, मोबाइल नम्बर, ई-मेल के साथ 31 दिसम्बर 2016 तक निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें- महासचिव, श्री जैन सेवा संघ, द्वारा- छाजेड़ एण्ड दोषी, 101, हब टाउन, सौलारिस, एन.एस. फड़के मार्ग, अंधेरी (पूर्व), मुम्बई-400069 (महा.)

# संक्षिप्त समाचार

**चेन्नई-** श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में 06 नवम्बर 2016 को प्रातः 8.00 से 11.15 बजे तक आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 54 वें दीक्षा दिवस को सामायिक व एकाशन दिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें कई श्रावक-श्राविकाओं ने आचार्य भगवन्त के गुणगान रूप में अपने भाव अभिव्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन संघ मंत्री श्री गौतमचन्दजी लोढ़ा ने किया। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा ने आचार्य भगवन्त के विशिष्ट गुणों का वर्णन करते हुए कार्यक्रम में गुरु भक्तों की सुन्दर अभिव्यक्ति के लिए संतोष व्यक्त करते हुए मांगलिक श्रवण करवाई।

**शांतिनगर, बैंगलोर-** महासती श्री सुलोचना जी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास तप, त्याग एवं विविध प्रत्याख्यानों से प्रभावशाली रहा। 27 श्रावक-श्राविकाओं द्वारा प्रतिक्रमण कण्ठस्थ, पाँच जनों के द्वारा आजीवन शीलव्रत का प्रत्याख्यान, 51,31,10,9,8 आदि की 32 जनों द्वारा तपस्याएँ की गईं तथा तेले की लड़ी लगातार 90

दिनों तक चलती रही। नवयुवकों को धार्मिक प्रेरणा के लिए विशेष उद्बोधन दिया जाता था। 06 नवम्बर 2016 को आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 54 वां दीक्षा-दिवस एवं कर्नाटक गजकेसरी श्री गणेशीलालजी म.सा. का 137 वां जन्मदिवस सामूहिक दो-दो सामायिक एवं तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। सम्पूर्ण संघ ने चातुर्मास की सफलता में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया। -*गौतमचन्द ओस्तवाल*

**बम्हौरी (मध्यप्रदेश)-** संस्कार यूथ फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण और वस्त्र वितरण का कार्यक्रम 01 नवम्बर 2016 को आर्यिका श्री विचक्षणाश्री माताजी के सान्निध्य में मुनि श्री आदिसागरजी महाराज (बम्हौरी) के 132 वें जन्मदिवस एवं गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के 25 वें आचार्य पदारोहण दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया। देश के लगभग 40 विद्वानों ने संगोष्ठी में भाग लिया एवं गांव के लगभग 500 गरीब बच्चों को वस्त्र वितरण किये गये। कार्यक्रम में चार पुरस्कार प्रदान किये गये- 1. 'गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज रजत आचार्य पदारोहण विद्वत् पुरस्कार' डॉ. भरत शास्त्री-इन्दौर को , 2. 'मुनि श्री आदिसागर वरिष्ठ विद्वत् पुरस्कार' प्राचार्य श्री सुरेन्द्र जैन-भगवां को, 3. 'डॉ. भानुकुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार' श्री विनोद जैन (सुनवाना वाले) बकस्वाहा को एवं 4. 'समाज सेवा पुरस्कार' श्री शिवप्रसादजी जैन-शाहगढ़ को दिया गया। -*आशीष जैन शास्त्री, बम्हौरी*

**अजमेर-** वैशाली नगर के श्वेताम्बर संस्थान द्वारा13 नवम्बर 2016 को जीवदया एवं अभयदान का विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। महासती श्री बसन्तकुंवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 की सन्निधि में संघ के पदाधिकारियों के सहयोग एवं श्री नरेन्द्रजी कक्कड़-जयपुर के प्रबन्धन से 51 बकरों को अभयदान दिया गया। उन्हें माला एवं तिलक लगाकर जयकारों के साथ महासतियाँ जी के मंगलपाठ के बाद कुचेरा बकरा शाला भेजा गया। -*मुकेश भण्डारी, जयपुर*

**जयपुर-** प्राकृत भारती अकादमी के अन्तर्गत जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग द्वारा संचालित प्राकृत भाषा प्रि-सर्टिफिकेट एवं प्राकृत सर्टिफिकेट परीक्षा परिणाम तथा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन 17 नवम्बर 2016 को प्राकृत भारती अकादमी में किया गया। इस समारोह में प्राकृत भारती अकादमी के संस्थापक डॉ. श्री डी.आर. मेहता साहब, मानद् निदेशक प्रो. कुसुम जैन, प्रो. कमलचन्द सोगाणी, डॉ. राजेन्द्र रत्नेश एवं श्री सुरेन्द्रजी बोथरा जी की उपस्थिति में विद्यार्थियों को परीक्षा परिणाम एवं पुरस्कार राशि वितरित की गई। इन पाठयक्रमों में लगभग 70 विद्यार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है।

*-डॉ. तारा डागा, संयोजक*

# बधाई

**बालोतरा-** वरिष्ठ स्वाध्यायी, धर्मानुरागी सुश्रावक श्री ओमप्रकाशजी बांठिया,

संयोजक- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ को समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए SURE संस्था द्वारा 'पदमश्री मगराज जैन सम्मान' से सम्मानित किया गया। आपको यह सम्मान संभागीय आयुक्त श्री रतन लाहोटी, जिला कलेक्टर सुधीर कुमार शर्मा एवं पुलिस अधीक्षक गंगदीप सिंगला के हाथों हुआ। इण्डियन सोसायटी फोर इण्डस्ट्रीज एवं इण्टलेक्च्यूल डेवलेपमेंट, नई दिल्ली द्वारा गोवा कॉंफ्रेंस में "Outstanding Services in service industry" सम्मान से सम्मानित किया गया।

**जयपुर-** श्री नरेन्द्रसिंह बैद को महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय ट्रस्ट की ओर से

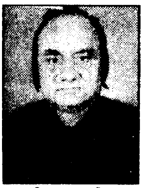

समाज सेवा में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु राजमाता पद्मिनी देवी द्वारा सिटी पैलेस में आयोजित सम्मान समारोह में ''राजा दुल्ले राय अवार्ड'' प्रदान कर सम्मानित किया गया। बैद का सम्मान शाल, कलश, श्रीफल के साथ नगद 31,000/- रुपयों से किया गया। नरेन्द्रसिंह बैद राज्य के ऐसे पहले उपभोक्ता हैं, जिन्हें राज्य सरकार ने राज्य स्तर पर चार बार उपभोक्ता संरक्षण के क्षेत्र में सर्वाधिक उल्लेखनीय कार्य करने पर सम्मानित किया है साथ ही बैद को राजस्थान न्यायायिक सेवा अधिकारी एसोसिऐशन (आरजेएस) से भी सम्मान प्राप्त कर चुके हैं।

**बैंगलुरु-** मैसूर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध संस्थान,

श्रवणबेलगोला की छात्रा संगीता खारीवाल ने 'Analytical Study of Samayasar' विषय पर अंग्रेजी माध्यम से पी-एच्.डी. की है। उन्होंने अपना शोधकार्य प्रो. प्रेमसुमनजी जैन के निर्देशन में सम्पन्न किया, इसमें आई.सी.पी.एस.आर. के निदेशक डॉ. दिलीप धींग का विशेष सहयोग रहा। -*नवीन खारीवाल 'सी.ए.'*

**झालावाड़-** श्री शुभाशुंजी जैन सुपुत्र श्रीमती उर्मिलाजी-सोहनलालजी जैन तथा सुपौत्र श्रीमती दाखाबाईजी-स्व. श्री मूलचन्दजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा वाले का इण्डियन इजिनियरिंग सर्विसेज (I.E.S)-2016 में 28 वीं रेंक के साथ चयन हुआ है।

# श्रद्धाञ्जलि

**चेन्नई-** अनन्य गुरुभक्त, संघ-सेवी, संघ-संरक्षक सुश्रावक श्री उमरावमलजी सुराणा (नागौर निवासी) का 02 नवम्बर 2016 को स्वर्गगमन हो गया। मधुरता, उदारता, करुणाशीलना जैसे गुणों से आपका जीवन सुवासित था। आपने आचार्यप्रवर के नागौर चातुर्मास में जो महनीय सेवा की वह वस्तुतः प्रेरणादायी है। आचार्यप्रवर के कृपापात्र श्रावकों में आपका महत्त्वपूर्ण स्थान था। सुराणाजी ने संघ द्वारा प्रदत्त विभिन्न दायित्वों का बखूबी निर्वहन किया। मद्रास ट्रस्ट का वर्षों तक संचालन किया। आप केवल कोष के रक्षक ही नहीं, अपितु विभिन्न विषयों पर संघ में उनकी राय भी महत्त्वपूर्ण मानी जाती थी। यही कारण है कि संघ-संरक्षक के रूप में आपकी सेवाएँ हमें निरन्तर प्राप्त हो रही थीं। आप गजेन्द्र फाउण्डेशन ट्रस्ट के ट्रस्टी भी थे। आपके सुपुत्र श्री श्रीपालजी सुराणा संघ-सेवा में अग्रणी हैं तथा आपकी पुत्रवधू श्रीमती मधुजी सुराणा अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व में अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर चुकी हैं तथा वर्तमान में परामर्शदाता के रूप में अपना दायित्व निर्वहन कर रही हैं। राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा आपके भतीजे हैं। 04 नवम्बर 2016 को किलपॉक, चेन्नई में महासतीजी श्री नेहाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में संघ संरक्षक सुश्रावक श्री उमरावमलजी सुराणा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्री पी.शिखरमलजी सुराणा ने दिवगंत आत्मा के जीवनकाल से सम्बन्धित संस्मरणों को सुनाकर उनके गुण स्मरण किए। श्री नरेन्द्रजी कांकरिया ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा प्रेषित श्रद्धांजलि संदेश पत्र एवं निमाज से गिर्राजजी जैन द्वारा प्रेषित धर्म संदेश का वाचन करते हुए वर्ष 2005 में आचार्यप्रवर के चेन्नई चातुर्मास में संघ संरक्षक सुश्रावक कृत सेवा भावना का उल्लेख किया। संघ मंत्री श्री गौतमचन्दजी लोढ़ा ने संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित किये। अन्य गणमान्य श्रावकों ने भी अपनी श्रद्धांजलि दी। विदुषी महासती श्री नेहाश्रीजी म.सा. ने दिवगंत आत्मा की वृद्ध अवस्था में भी जागरूकता, तप, त्याग नियमों के प्रति दृढ़ता को अनुकरणीय बताते हुए उपस्थित भाई-बहिनों को प्रेरणा लेने का संदेश फरमाया।

**शोरापुर-** संघ-समर्पित, सेवा के पर्याय सुश्रावक श्री चम्पालालजी छाजेड़ का 14 नवम्बर 2016 को 88 वर्ष की वय में स्वर्गारोहण हो गया। आप गजेन्द्रनिधि के ट्रस्टी थे। गो-सेवा व्रती सुश्रावक कई गोशालाओं के भी ट्रस्टी थे। रत्न संघ के संत-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा व

भक्ति थी। आप शोरापुर संघ के अध्यक्षीय का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे थे। व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के शोरापुर चातुर्मास में छाजेड़ परिवार द्वारा महासती मण्डल के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण व चातुर्मास सेवा का लाभ प्राप्त किया गया। शोरापुर संघ में छाजेड़ परिवार की सक्रिय भूमिका रही है। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी छाजेड़ परिवार सदैव समर्पित रहा है।

**सवाईमाधोपुर-** संघ के प्रति निष्ठावान सुश्रावक श्री पारसचन्दजी जैन सुपुत्र श्री

मोतीलालजी जैन (बोहरा) का 29 नवम्बर 2016 को 57 वर्ष की वय में हृदयाघात से परलोकगमन हो गया। नियमित रूप से स्वाध्याय भवन में सामायिक करने वाले श्रावकरत्न में कर्तव्यपरायणता, कर्मठ सेवाभावना उनकी जीवन शैली में निहित थी। आप सवाईमाधोपुर नगर परिषद् के उपसभापति पद को सुशोभित कर समाज को गौरवान्वित कर रहे थे तथा कई सामाजिक संस्थाओं में उत्साह के साथ सेवा प्रदान करते थे। आपने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सवाईमाधोपुर के अध्यक्ष के रूप में अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान कीं। वर्ष 2013 में आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं महासतीवृन्द के चातुर्मास में आपकी एवं आपके परिवार की सेवाएँ सक्रिय रूप से प्राप्त हुईं। आतिथ्य-सत्कार में भी आपका परिवार सदैव समर्पित रहा। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में आपके परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

**पाली-** सुश्रावक श्री मांगीलालजी चौपड़ा का 22 नवम्बर 2016 को देहावसान हो गया। वे नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। उन्होंने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। गुरु गजेन्द्र सेवा समिति के अध्यक्षीय पद का दायित्व बखूबी निर्वहन करते हुए आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पाली की कार्यकारिणी के वरिष्ठ सदस्यों में से थे। आपने अनेक वर्षों तक पाली संघ में अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कीं। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहते थे। चौपड़ा परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में चौपड़ा परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

**कोलकाता-** तपसाधिका श्रीमती कान्तादेवीजी कांकरिया धर्मसहायिका श्री केवलचन्दजी

कांकरिया (नागौर निवासी) का 12 नवम्बर 2016 को 66 वर्ष की आयु में परलोकगमन हो गया। आपने 8,10,11,30,32 की तपस्याएँ की थीं। आपने 51 उपवास इस संवत्सरी को पूर्ण किए और देहदान एवं नेत्रदान के संकल्प के साथ देह त्याग दिया। आपकी संसार पक्षीया भाणजी महासती

शान्ताजी लम्बे समय से धर्मसंघ की सेवा में संलग्न हैं तथा एक पौत्री अंकिता (सुपुत्री श्री भंवरलालजी-विमलादेवीजी कांकरिया-नागौर) आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के चरणों में आगामी फरवरी 2017 में दीक्षित होने जा रही हैं।

**जोधपुर-** संत-सेवी सुश्रावक श्री राकेशजी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री सरदारमलजी भण्डारी

का 28 नवम्बर 2016 को देहावसान हो गया। आपके जीवन में दयालुता, सहजता व सरलता पुष्प में सुवास की तरह बनी रही। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहते थे। उन्होंने संघ-समाज एवं धर्म के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन किया। भण्डारी परिवार रत्नसंघ की विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. का सांसारिक ननिहाल पक्ष है। भण्डारी अस्पताल, जयपुर द्वारा संत-सतीवृन्द के निर्दोष औषधोपचार में भी महनीय योगदान निरन्तर प्राप्त हो रहा है। आपके भाई श्री कैलाशमलजी भण्डारी अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे है।

*-पूरणराज अबानी, महामंत्री*

**जोधपुर-** सुश्रावक डॉ. धनपतराज जी सिंघवी सुपुत्र स्व.श्री मोहनराजजी सिंघवी का 21

अक्टूबर 2016 को 77 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आपकी इच्छानुसार आपके पार्थिव देह को देहदान हेतु मेडिकल कॉलेज को समर्पित किया गया। जिस कॉलेज में आपका देहदान हुआ उसी कॉलेज में आप 20 वर्ष तक बायोकेमिस्ट्री में प्रोफेसर पद पर रहे तथा वर्तमान में आप नेपाल कॉलेज में प्रोफेसर पद पर कार्यरत थे। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि संत-सतियों के प्रति श्रद्धा थी। आपने अपने जीवनकाल में कई नियम ग्रहण किये थे।

**आगोलाई (जोधपुर)-** धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती तुलसीबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री पुखराजजी गोगड़ का 29 अक्टूबर 2016 को स्वर्गवास हो गया। सरल स्वभावी, श्राविका विगत 40-50 वर्षों से रात्रिभोजन त्याग रखने के साथ प्रतिदिन 3-4 सामायिक करती थीं।

**गोरेगाँव (मुम्बई)-** वरिष्ठ स्वाध्यायी सुश्रावक श्री आनन्दराजजी जी. तलेसरा (पाली

वाले) सुपुत्र श्रीमती कमलाजी-घीसूलालजी तलेसरा का 60 वर्ष की उम्र में 25 सितम्बर 2016 को स्वर्गवास हो गया। आप मृदुभाषी, मिलनसार, प्रखर वक्ता, अच्छे धर्मप्रेरक होने के साथ लगभग 35 वर्षों से पर्युषण पर्व में अपनी सेवाएँ दे रहे थे। आपकी जिनधर्म पर दृढ़ आस्था थी।

एल.आई.सी. एजेन्ट के कार्यों के साथ आप मिलने वालों को सदैव धर्म प्रेरणा देकर उन्हें धर्माभिमुख करते और व्यसनों से मुक्ति दिलाते थे। धार्मिकजनों को देखकर आपके मन में प्रमोद भाव उमड़ता था। चारित्रनिष्ठ पूज्य संत-सतियों पर आपकी दृढ़ श्रद्धा थी।-
*पारसमल चण्डालिया, ब्यावर*

**जोधपुर-** संत-सेवी सुश्राविका श्रीमती विमलाजी सिंघवी धर्मपत्नी स्व. श्री शांतिलालजी

सिंघवी का 29 नवम्बर 2016 को परलोकगमन हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविका थीं। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आप श्रद्धेय श्री कैलाशमुनिजी म.सा. के सांसारिक काकीसा थी। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी सदैव तत्पर रहती थीं। अपने यहाँ पधारने वाले संत-सतीवृन्द को भक्ति-भावपूर्वक निर्दोष आहार-पानी बहराकर आप अपने-आपको भाग्यशाली समझती थीं।

**चेन्नई-** अनन्य गुरुभक्त, सुश्रावक श्री चंचलजी भण्डारी सुपुत्र स्व.श्रीमती राजकुमारीजी

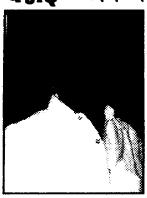

एवं स्व. श्री सुखपालचन्दजी भण्डारी (सुपौत्र स्व.श्रीमती मोहनबाईजी-स्व.श्री रणवीरचन्द जी भण्डारी) बारनीखुर्द वाले का 31 अक्टूबर, 2016 को 50 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आप स्व.महासती श्री सायरकंवरजी म.सा. एवं शासनप्रभाविका साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के सांसारिक पक्षीय पौत्र थे। चेन्नई में आचार्य भगवन्त के एवं व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के चातुर्मास में आपने बहुत सेवा भक्ति का लाभ लिया।

**मेड़तासिटी-** स्वाध्यायप्रेमी सुश्राविका श्रीमती पुष्पाकंवरजी दुधेड़िया धर्मपत्नी स्व. श्री ज्ञानचन्दजी दुधेड़िया का 28 नवम्बर 2016 को प्रयाण हो गया। वे नियमित प्रतिदिन स्वाध्याय भवन में पधारकर सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविका थीं। उन्होंने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। दुधेड़िया परिवार की सेवाएँ मेड़तासिटी के प्रत्येक चातुर्मास में सक्रिय रूप से प्राप्त होती रही हैं। व्याख्यात्री महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के गत मेड़ता चातुर्मास में भी दुधेड़िया परिवार ने अपूर्व धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया। चातुर्मास में संत-सतीवृन्द की गोचरी-सेवा में आपकी महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। आतिथ्य सत्कार में भी दुधेड़िया परिवार सदैव समर्पित रहा है। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में दुधेड़िया परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है। आप रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.शिखरमलजी सुराणा की

मामीजी थीं -*पूरणराज अबानी, महामंत्री*

**जयपुर-** सुश्रावक श्री सूरजमलजी जैन सुपुत्र स्व. श्री मथुरालालजी जैन (उज्जैन) का 15

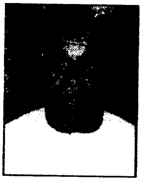

नवम्बर, 2016 को स्वर्गवास हो गया। आप सहज सरल स्वभाव के धनी तथा धर्म में रुचिशील व्यक्ति थे। आपके सुपुत्र श्री घनश्यामजी जैन की सेवाएँ सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यालय में लेखाकार के रूप में लम्बे समय तक सराहनीय रही हैं।

**सरवाड़-** श्री बुधराजजी पालेचा का अल्प आयु में निधन हो गया। आप समाज एवं साधु-संतों की सेवा में अग्रणी रहते थे। वे निर्भय एवं निडर प्रवृत्ति के श्रावक थे। -*सुरेन्द्र कक्कड़*

**उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।**

---

# समयज्ञ बनिए, अप्रमत्त रहिए

*-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.*

"उट्ठिए नो पमायए।" उठो, प्रमाद मत करो। इस विषय में संस्कृत के विद्वानों ने भी कहा- "आलस्यं हि मनुष्याणां, शरीरस्थो महान् रिपुः।"

अर्थात् मनुष्य के शरीर में रहा हुआ प्रमाद महान् शत्रु है। जब तक प्रमाद होता है असाता वेदनीय कर्म का बन्ध नियम से होता है। अगली आयुष्य का बन्ध हो गया हो तो भोगना ही पड़ता है। अतः अप्रमत्त होकर जीएं। जीवन का एक-एक क्षण सार्थक करें। शास्त्रकारों ने बताया है।

"खणं जाणाहि पंडिए।" पण्डित पुरुष समयज्ञ होते हैं। अन्यत्र भी विद्वानों ने कहा-

**"आयुषः क्षण एकोऽपि, सर्वरत्नैर्न लभ्यते।**
**नीयते तद्वृथा येन, प्रमादः सुमहानहो।।"**

अर्थात् आयुष्य का एक क्षण भी पृथ्वी के सब रत्न देकर भी नहीं खरीदा जा सकता है। फिर उस पवित्र आयु को व्यर्थ खोना यह कितना बड़ा प्रमाद है। धैर्यवान व्यक्ति मुहूर्त मात्र के लिए भी प्रमाद नहीं करता। आचारांगसूत्र में भगवान ने फरमाया- "अलं कुसलस्स पमाएणं।" (आचारांगसूत्र, 2.4)

कुशल पुरुषों को प्रमाद से बचना चाहिए। उत्तराध्ययन सूत्र के शब्दों में- "भारंडपक्खीव चरेऽप्पमत्तो।" (उत्तराध्ययनसूत्र) भारंड पक्षी की तरह साधक को हमेशा अप्रमत्त रहना चाहिए, क्योंकि भगवान महावीर ने अपने अन्तिम पावापुरी के चातुर्मास के पावन प्रवचन में फरमाया- "समयं गोयम! मा पमायए।" (उत्तराध्ययन सूत्र 10) अर्थात् हे गौतम! समय मात्र का भी प्रमाद मतकर। जीवन ओस बिन्दु की तरह चंचल है। अतः धार्मिक प्रवृत्ति में एक समय का भी प्रमाद करना उचित नहीं है। मोक्षमार्ग की साधना में साधक के लिए प्रमाद महान् बाधक है।

# साभार-प्राप्ति-स्वीकार

## 1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15735 से 15745 तक 11 सदस्य बने।

## 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री शंकरलालजी, फूलचन्दजी तातेड़, नन्दूरबार की ओर से सप्रेम भेंट।

11000/- श्री प्रदीप जी मेहता पुत्र श्री नवरतनराजजी मेहता, जोधपुर हा.मु. नोएडा, दिल्ली। अपने पुत्र चि. पुलिन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री कुलदीप कुमारजी, प्रदीप कुमारजी, नीरज कुमारजी जैन, दिल्ली, पूजनीया माताजी श्रीमती शांतिजी धर्मपत्नी स्व. श्री शिखरचन्दजी जैन (ऐलम वाले) का 19 नवम्बर 2016 को समाधि भावों में मरण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्रीमती सुशीलाजी, भंवरलालजी भण्डारी, नईदिल्ली, डॉ. राशिजी हेमंतजी भंडारी, मुम्बई को पुत्र रत्न की प्राप्ति के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री तेजमलजी जैन, कोटा, श्रीमती केशरकँवरजी जैन का देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री घनश्यामजी, गौरवजी जैन, जयपुर, पूज्यनीय पिताजी श्री सूरजमलजी जैन का 15 नवम्बर 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती फूलकँवरजी मेहता धर्मपत्नी श्री हुक्मीचन्दजी मेहता, ब्यावर, स्वयं के तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री झूमरमलजी, शांतिलालजी, रतनलालजी कवाड़, पीपाड़सिटी, चि. अक्षयजी कवाड़ के नौ की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सुरेन्द्रजी, शुभम् कुमारजी, हितेष कुमारजी चौधरी, पीपाड़सिटी, चि. शुभम्जी चौधरी के नौ की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री झूमरमलजी, शांतिलालजी, रतनलालजी कवाड़, पीपाड़सिटी, श्रीमती पारसदेवीजी धर्मपत्नी श्री रतनलालजी कवाड़ के तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।

1100/- श्री सुमतिचन्दजी, नमन कुमारजी मेहता, पीपाड़सिटी, श्री सुमतिचन्दजी मेहता के "राजा परदेशी तप" और नमन कुमारजी मेहता के 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री धर्मीचन्दजी, महावीरजी बाफणा (मूथा)(निमाज वाले), हुबली, श्री धर्मीचन्दजी मूथा के आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री ज्ञानचन्दजी, पदमचन्दजी, अखिलजी लुणावत, पीपाड़सिटी, श्रीमती रेखाजी के 12 एवं चि. अखिलजी लुणावत के तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री नवरतनजी, रजतकुमारजी ओस्तवाल, पीपाड़सिटी, श्रीमती आशाजी ओस्तवाल के "राजा परदेशी तप" एवं श्रीमती श्रुति शशांकजी कटारिया, इन्दौर के 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री महेन्द्र कुमारजी, अर्पित कुमारजी चौधरी, पीपाड़सिटी, सुश्री अपूर्वाजी चौधरी के 9 की

तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री विजयराजजी, संजयजी, खुशहालजी पारख, पीपाड़सिटी, सुपुत्र श्री संजयजी के 9 की, पुत्रवधू श्रीमती ज्योति के 10 की, सुपुत्र श्री खुशहालजी के 8 की, सुपुत्री सुश्री खुशबुजी के 9 की एवं सुपुत्री सुश्री राखीजी के 10 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, रत्नप्रभाजी मुथा (रेजा वाले), पीपाड़सिटी, सुपुत्र श्री सौरभजी के 9 की एवं सुपुत्री खुशबूजी मुथा के 10 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री हरीचन्दजी, सुनीलजी हीरावत, जयपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्री उम्मेदमलजी जैन (चौथ का बरवाड़ा वाले), मानसरोवर-जयपुर।

1100/- श्रीमती चन्द्रकलाजी एवं श्री जसराजजी सुराणा, जोधपुर, पूज्य पिताश्री श्री माणकराजजी सुराणा की 48वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- डॉ. अजीतराजजी, दिलीपराजजी, सुभाषचन्दजी, राजेन्द्रजी रांका परिवार, भड़गाँव।

1100/- श्री राजेन्द्रजी मधुजी सिंघवी, हस्ते मोहितजी, मेघनाजी, मायाजी सिंघवी, जोधपुर-मुम्बई, पूजनीया मातुश्री श्रीमती मानकुँवरजी सिंघवी की द्वितीय पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती सुभद्रा धर्मपत्नी श्री कांतिलालजी धारीवाल, पाली, अपने भ्राता श्री आनन्दराजजी तलेसरा के 25 सितम्बर 2016 के देवलोकगमन होने पर स्मरणांजलि स्वरूप।

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार प्राप्त

100000/- श्री जवरीमलजी खिंवसरा, जोधपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से पुनः मुद्रित पुस्तक "जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1" के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

65000/- श्री बसंतीलालजी, रंगलालजी डांगी, जामनेर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से पुनः मुद्रित पुस्तक "हीरा प्रवचन पीयूष भाग" के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

55000/- श्री नवनीतजी मुणोत (ब्यावर वाले), मुम्बई, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से पुनः मुद्रित पुस्तक "जीव-अजीव तत्त्व एवं द्रव्य" के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

## स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

21,000/- श्री मदनलाल जी राजेश जी बाघमार, जबलपुर, पर्युषण सहयोग हेतु।

15,000/- श्री निर्मलकुमार जी संजय कुमार जी बाघमार, जबलपुर, पर्युषण सहयोग हेतु।

11,000/- श्री अर्जुन कुमार जी अरूण कुमार जी चौपड़ा, जबलपुर, पर्युषण सहयोग हेतु।

7,500/- श्री जवरीलाल जी मनीष जी रांका, जबलपुर, पर्युषण सहयोग हेतु।

6,100/- श्री गौतमचंद जी बोथरा, जबलपुर, पर्युषण सहयोग हेतु।

5,100/- श्री पारसमल जी मनोज जी चौपड़ा, जबलपुर, पर्युषण सहयोग हेतु।

3100/- श्रीमती मनोहरकंवर जी लोढ़ा, जोधपुर, अपने पति श्री दशरथमलजी लोढ़ा (एडवोकेट) सुपुत्र स्व. श्री हरकचंदजी लोढ़ा का 13 अक्टूबर 2016 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

## अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्री मोहनलालजी, शान्तिलालजी, श्रीपालजी देशलहरा (छोटा अरटिया वाले), सिकन्द्राबाद।

15500/- श्री नवरतनजी, पुनीतजी डागा, जोधपुर।

2200/- श्री दिलखुशराजजी मेहता, मुम्बई।

## अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

21000/- तीर्थंकर चेरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर, संघ सहायतार्थ
11000/- श्रीमती विजयाबाईजी मेहता, होसपेट (कर्नाटक) संघ सहायतार्थ।
10500/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हरसाना, जीवदया हेतु।
1500/- श्री देवराजजी नाहर, चांगोटोला, जिला-बालाघाट (मध्यप्रदेश), जीवदया हेतु।

## गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड
## (अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)
## दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

100000/- श्री दुलीचन्दजी बागमार, किलपॉक, चेन्नई।
100000/- श्री अम्बालालजी एवं बंसतीदेवी जी कर्नावट, चेन्नई।
100000/- श्री सम्पतराजजी एवं राजकंवरजी भण्डारी, चेन्नई।
12000/- श्री मोहनलालजी प्रकाशचन्दजी चोरडिया, बैंगलोर।
12000/- श्री तीर्थंकर चेरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर (महाराष्ट्र)।
12000/- श्री सोहनलालजी बुधमल जी बागमार, मैसूर (कर्नाटक)।
12000/- श्री अचलराजजी, जितेन्द्रराजजी, सुरेशराजजी, हर्षजी डागा, जोधपुर (राज.)।
12000/- श्री सम्पतराजजी दिनेशकुमारजी, राजेशजी सुराना, जोधपुर-बैंगलोर।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad**, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

## आगामी पर्व तिथि

| | | |
|---|---|---|
| मार्गशीर्ष शुक्ला 14, मंगलवार | 13.12.2016 | चतुर्दशी, पक्खी |
| पौष कृष्णा 8, बुधवार | 21.12.2016 | अष्टमी |
| पौष कृष्णा 10, शुक्रवार | 23.12.2016 | भगवान पार्श्वनाथ जन्म-कल्याणक |
| पौष शुक्ला 14, बुधवार | 28.12.2016 | चतुर्दशी,पक्खी |
| पौष शुक्ला 8, शुक्रवार | 06.01.2017 | अष्टमी |
| पौष शुक्ला 14, बुधवार | 11.01.2017 | चतुर्दशी, आचार्य श्री हस्ती का 107 वाँ जन्मदिवस |
| पौष शुक्ला 15, गुरुवार | 12.01.2017 | पक्खी |
| माघ कृष्णा 4, सोमवार | 16.01.2017 | उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 83 वां जन्मदिवस |
| माघ कृष्णा 8, शुक्रवार | 20.01.2017 | अष्टमी |

# संघ हेतु आधार- सूचना संग्रहण-कार्यक्रम

## अपेक्षित है आपका सहयोग

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के निर्देशन में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा रत्नसंघीय परिवारों के सम्बन्ध में सूचना का संग्रह ऑनलाइन किया जा रहा है, जिसके उद्देश्य हैं- 1.संघ सदस्यों की धार्मिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक जानकारी एकत्रित करना, 2. संघ के सभी कार्यक्रमों की सूचना अपने सदस्यों को पहुँचाने के लिए सूचनातंत्र विकसित करना, 3. संघ सदस्यों से प्राप्त जानकारी एकत्रित कर उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करना, 4. प्राप्त आंकड़ों के आधार पर संघ के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय करना, 5. संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं से सम्बन्धित सभी जानकारी एक ही जगह पर संकलित करना, 6. संघ के सभी सदस्यों में सक्रियता का संचरण करना। इस हेतु पंजीकरण 4 जनवरी 2016 से प्रारम्भ हो चुका है। आप **WWW.RATNASANGH.COM** पर अपनी सूचना दे सकते हैं।

- यह फार्म परिवार के तीन वर्ष से अधिक वय के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा भरा जाना है। इसे आप आधार कार्ड की भाँति व्यक्तिगत सूचनातंत्र भी समझ सकते हैं।
- इससे संघ का सूचनातंत्र विकसित होगा। आगे चलकर चिकित्सा के क्षेत्र में अन्य समाज की भाँति ग्रुप मेडिकल बीमा हेतु प्रयास कर उसे मूर्त रूप प्रदान किया जा सकता है।
- आप संघ की वेबसाइट www.ratnasangh.com पर जाकर अपना फार्म स्वयं ही भर सकते हैं। फार्म भरना शुरू करते समय आपके मोबाइल नम्बर पर एक संदेश आयेगा, जिसमें फार्म नम्बर एवं फार्म भरने की तारीख रहेगी। आप स्वयं अपना फार्म पूर्ण भर सकते हैं या उसमें आवश्यक सुधार कर सकते हैं। यदि आपके पास फार्म नम्बर या तारीख का संदेश सुरक्षित न हो तो आप वेबसाइट पर जाकर एडिट फार्म पर क्लिक करें, वहाँ पर आपको फोरगोट पासवर्ड का विकल्प प्राप्त होगा, उस पर क्लिक करके अपने नाम एवं मोबाइल नम्बर की जानकारी प्रदान करें। दोनों जानकारी सही होने पर आपके मोबाइल पर फार्म नम्बर एवं फार्म भरने की दिनाँक का संदेश आपको पुनः प्राप्त हो जायेगा। इसकी सहायता से आप अपना फार्म एडिट कर सकते हैं।
- इस सूचना संग्रहण कार्यक्रम से आपको यथासमय चातुर्मास, दीक्षा महोत्सव, विशिष्ट पर्व तिथि आदि एवं आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त होंगी।
- आशा है आप संघ के इस भागीरथी प्रयास से रीते नहीं रहेंगें एवं अपने परिवार सहित सभी स्वधर्मी भाई-बहनों की सूचना संगृहीत कराने में पूरा प्रयास करेंगे।

*-विकास गुंदेचा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पुस्तकालय एवं श्रुत सेवा,*
*मोबाइल नं. 099283-63581*

जय गुरु हस्ती ||GURUDEV|| जय गुरु हीरा-मान

# गुरु हस्ती के दो फरमान
# सामायिक स्वाध्याय महान

# गुरु हीरा का यह सन्देश
# व्यसन मुक्त हो देश विदेश

UDAY GROUP

## UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.

IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

## UDAY CONSULTS LLP

OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

**CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY**

**STEEL | LOGISTICS | MANPOWER**

***WITH BEST COMPLIMENTS from:***
***G R SURANA & RAJESH SURANA***
No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.
Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675
Website: www.udaygroup.net
Mail Id: industries@udaygroup.net

# भण्डारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

( आपके स्वास्थ्य के साथ हमेशा )

राजस्थान व पड़ोसी राज्यों में लेजर, लैप्रोस्कोपी एवं लिथोट्रिप्सी
**का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वसनीय सेन्टर**

~ अस्पताल की विशेषता ~

दूरबीन पद्धति से पेट, अपेन्डिक्स, हर्निया, प्रोस्टेट, पाइल्स आदि की शल्य चिकित्सा की सुविधा।

शरीर में किसी भी स्थान पर होने वाली पथरी के ईलाज का सर्वश्रेष्ठ संस्थान।

स्त्री रोग, नॉर्मल, सिजेरियन व हाई रिस्क डिलेवरी का अग्रणीय संस्थान।

## विशेषज्ञों की सेवायें

- मूत्र व पथरी रोग
- पेट, लीवर व आंत रोग
- जनरल व मोटापा निवारण सर्जरी
- स्त्री रोग
- जनरल फिजिशियन
- प्लास्टिक व कॉस्मेटिक सर्जरी
- बाल रोग एवं बाल शल्य चिकित्सा
- न्यूरो सर्जरी
- दन्त रोग
- नाक, कान व गला रोग
- चर्म रोग

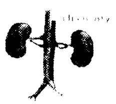

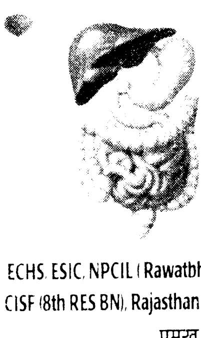

## सुविधायें

- 30 वर्ष का अनुभव
- 4 लाख से अधिक रोगियों का सफल ईलाज
- 2 लाख से अधिक रोगियों का शल्य क्रिया द्वारा उपचार।
- 50,000 से अधिक पथरी रोगियों का उपचार।
- NABH & NABL से मान्यता प्राप्त।
- MLC (Medico Legal Case) की सुविधा
- 24x7 ICU, Emergency Facilty

CGHS, ECHS, ESIC, NPCIL (Rawatbhata), BSNL, BHEL, GAIL, IOCL, CWC, FCI, NFL, MNIT, CIPET, CSWRI, HCL, AAI, Coal India, CISF (8th RES BN), Rajasthan University, केन्द्र व राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारी व पेंशनर्स एवं सभी प्रमुख TPA व इंश्योरेंस कंपनीयों से ईलाज हेतु अधिकृत

**138-ए, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड़, जयपुर - 302018**
**फोन: 0141-2703851-52 ( मो. ) 9660006228, 9829770055**

# अलविदा बाईपास सर्जरी

## अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचिये

# काउन्टर पलसेशन थैरेपी

# (ई.ई.सी.पी.)

## द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

**काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-**

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को पर्याप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियाँ आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

# समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए – 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाउस रोड़, जोधपुर (राज.)

Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525

सम्पर्क : धीरेन्द्र कुम्भट

93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है, जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

- आचार्य श्री हस्ती

**C/o CHANANMUL UMEDRAJ**
**BAGHMAR MOTOR FINANCE**
**S. SAMPATRAJ FINANCIERS**
**S. RAJAN FINANCIERS**

**# 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla, Mysore-570001 (Karanataka)**

*With Best Compliments from :*

*C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan*
*Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar*

**Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)**
**Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)**

Gurudev

# SURANA

—yes, the best— TMT RE-BARS

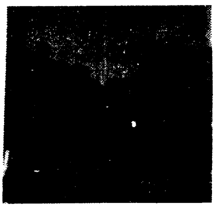

DRI Plant

Electric Arc Furnace

Billets

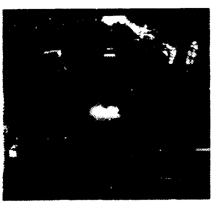

Rolling Mill

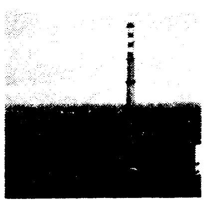

Captive Power Plant

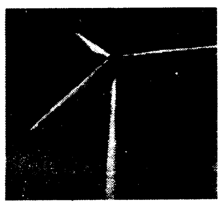

Windmill

**With best wishes from**

ISO 9001-2008

# SURANA INDUSTRIES LIMITED

**INTEGRATED STEEL PLANT**

**MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL**

# 29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines ) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

**STEEL I POWER I MINING**

।। श्री महावीराय नम: ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिश: वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

# आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

## अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

## आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

## सदस्यता अभियान

| हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष) | स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष) |
|---|---|

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में एक वर्ष तक प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

## Acharya Hasti Scholarship Fund

*Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam..........*

**Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.**

**Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -**

**A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund**
**A/c No. 168010100120722**
**Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168**
**PAN No. - AAATG1995J**
**Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.**

- **For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad,Chennai (+91 95001 14455) & M. Rajesh Lalwani, Chennai (+91 98406 23645)**

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

| हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष) | स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष) |
|---|---|
| श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। | श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। |
| युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। | श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई। |
| श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन | श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। |
| श्रीमान् रिखबचंद जी सुखानी, रायचूर (कर्नाटक) | श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई। |
| | श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। |
| | गुप्त सहयोगी, चैन्नई। |
| | श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। |
| | श्रीमान् सम्पतराज जी राजकंवर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन–चैन्नई। |
| | गुप्त सहयोगी, चैन्नई। |

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–
**M. Harish Kumar Kavad** - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई (Mob. +91 95430 68382)

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

*Jai Guru Heera* *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

# ।। जैनं जयति शासनम्।।

***With Best Compliments from:***

***Dharamchand Paraschand Exports***
***Paras Chand Hirawat***
*CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),*
*Mumbai-400 098 (MH)*
Tel. : +91 22 4018 5000
*Email : dpe90@hotmail.com*

***KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER***
*PACHPADRA-PALI-ERODE*
**K.L. ASSOCIATES**
*'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)*
*Mobile : 094141-22757*
*135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)*
*Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001*

***BHANSALI GROUP***
***Dhanpatraj V. Bhansali***
***BHANSALI DEVELOPERS***
*Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),*
*Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),*
*E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com*

**S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS**
**Prakash Chand Daga**
**Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)**
*FC51, Bharat-Diamond Bourse,*
*Bandra Kurla Complex,*
*Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)*
*Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429*
*Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872*
*E-mail : sdgems@hotmail.com*

***Basant Jain & Associates, C.A.***
***BKJ & Associates, C.A.***
***BKJ Consulting Pvt. Ltd.,***
***Megha Properties Pvt. Ltd.***
***Ambition Properties Pvt.Ltd.***
**बसंत के जैन**
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
*601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,*
*Mumbai - 400020 (MH)*
*Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702*

***NARENDRA HIRAWAT & CO.***
***Launches***
***N.H. Studios*** ***N.H. Jewells***
*A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,*
*Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)*
*Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713*

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

# सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – समस्त जैन समाज

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 दिसम्बर, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 दिसम्बर, 2016 ★ मार्गशीर्ष, 2073

waterfront
at KALPATARU
riverside
PANVEL

**Premium 2 & 3 BHK residences**

**022 3064 3065**

Promoters: **M/S Kalpataru + Sharyans**

**Site Address:** Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. I **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 I Fax: + 91 22 3064 3131 I Email: sales@kalpataru.com I visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन